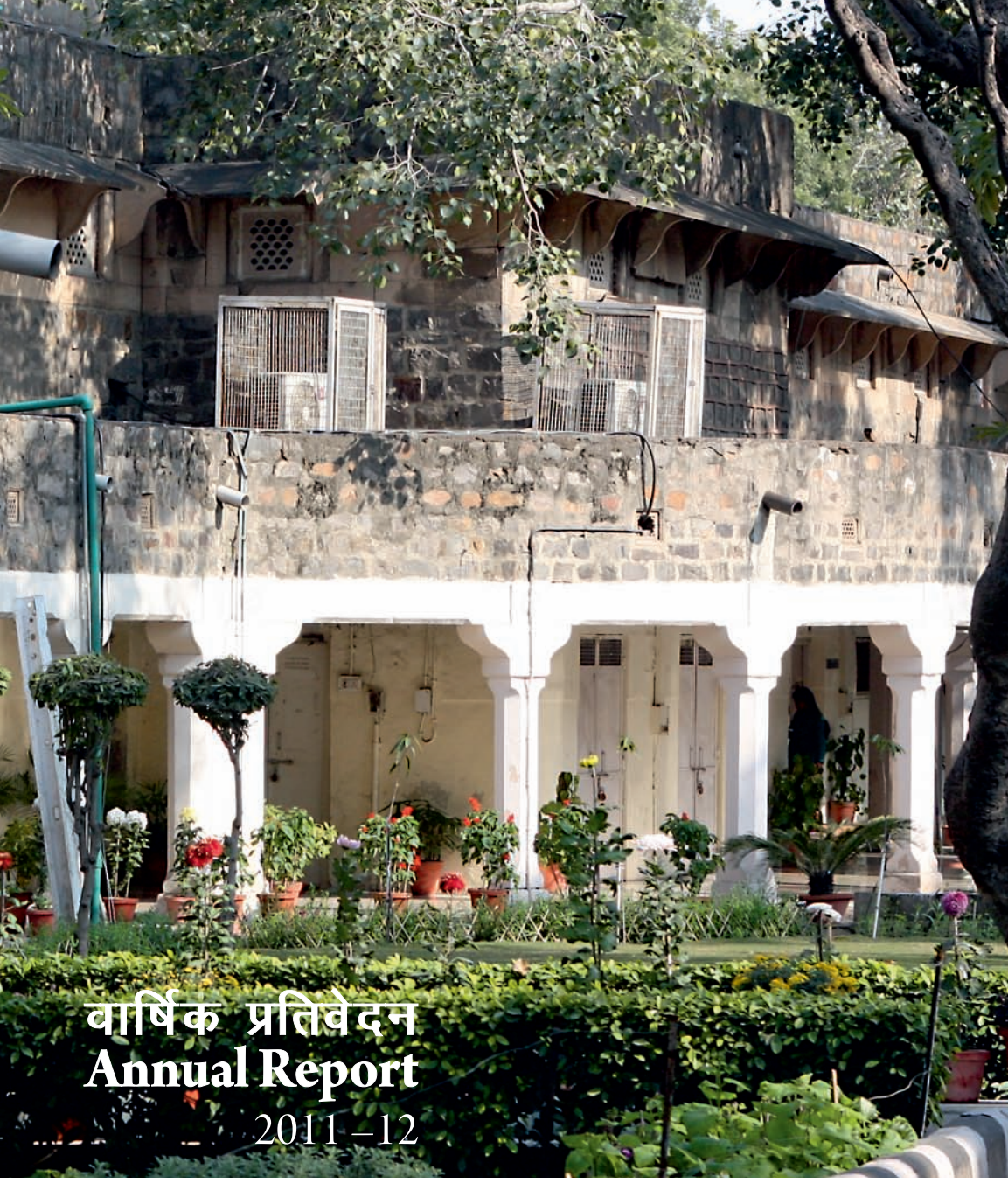

वार्षिक प्रतिवेदन
Annual Report
2011 – 12

अम्बेडकर विश्वविद्यालय दिल्ली

Ambedkar University Delhi

वार्षिक प्रतिवेदन
Annual Report

2011–12

"It is education which is the right weapon to cut the social slavery and it is education which will enlighten the downtrodden masses to come up and gain social status, economic betterment and political freedom"

Dr. BR Ambedkar

Ambedkar University Delhi

अम्बेडकर विश्वविद्यालय दिल्ली

Published by:
The Registrar
Ambedkar University Delhi
Dwarka, Sector-9, New Delhi-110077

Designed & Printed at:
Amar Ujala Publications Limited
C-21, Sector-59, Noida-201301
Website: www.amarujala.com

अंतर्वस्तु

	विषयवस्तु	पृष्ठ
1.	विश्वविद्यालय	5
2.	विश्वविद्यालय का विकास	19
3.	विश्वविद्यालय के शिक्षालय	22
4.	विश्वविद्यालय के केन्द्र	53
5.	विश्वविद्यालय के छात्र	62
6.	विश्वविद्यालय की भौतिक परिसम्पत्तियाँ	68
7.	विश्वविद्यालय का संगठनात्मक ढाँचा	74
8.	परिशिष्ट	78
	परिशिष्ट–कः प्रवेश प्रक्रिया	79
	परिशिष्ट–खः विश्वविद्यालय के अधिकारीगण	81
	परिशिष्ट–गः शासी निकायों की बैठक	82
	परिशिष्ट–घः अध्ययन बोर्ड	87
	परिशिष्ट–ङ.: आरटीआई अधिनियम का अनुपालन	88
	परिशिष्ट–चः विश्वविद्यालय की समितियों की सूची	91
	परिशिष्ट–छः विश्वविद्यालय के कार्यकलाप	94
	परिशिष्ट–जः विश्वविद्यालय के शिक्षक	114
	परिशिष्ट–झः प्रशासनिक कर्मचारी	118
	परिशिष्ट–ञः वर्ष 2011–12 के लिए वित्तीय विवरणी	122

1

विश्वविद्यालय

भारत रत्न डॉ. बी. आर. अम्बेडकर विश्वविद्यालय (अम्बेडकर विश्वविद्यालय, दिल्ली अथवा ए.यू.डी.) वर्ष 2007 के विधान मंडल के अधिनियम के तहत राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र की दिल्ली सरकार द्वारा स्थापित किया गया था तथा इसे जुलाई, 2008 में अधिसूचित किया गया था। समाजशास्त्र एवं मानविकी में शोध और अध्यापन पर ध्यान केन्द्रित करने के लिए अधिदेशित तथा उत्कृष्टता के साथ समानता और सामाजिक न्याय को जोड़ने के डॉ. अम्बेडकर के दृष्टिकोण द्वारा निदेशित ए.यू.डी उच्च शिक्षा तक पहुँच और सफलता के बीच सतत और प्रभावी सम्पर्क सृजित करना अपना मिशन समझता है। ए.यू.डी मानवता, गैर–श्रेणीबद्धता, कॉलेज संबंधी कार्यकरण, सामूहिक कार्य, विशिष्ट संस्थागत संस्कृति सृजित करने तथा सृजनात्मकता के परिपोषण के लिए वचनबद्ध है। अम्बेडकर विश्वविद्यालय फिलहाल दो विभिन्न परिसरों में कार्यरत है।

द्वारका परिसर

ए.यू.डी द्वारका परिसर सेक्टर –9 में स्थित है। ए.यू.डी समन्वित प्रौद्योगिकी संस्थान के साथ परिसर का सम्मिलित रूप से प्रयोग करता है। इस परिसर में विकास अध्ययन शिक्षालय, मानव पारिस्थितिकी शिक्षालय, व्यवसाय, लोक नीति तथा सामाजिक उद्यमिता, शैक्षिक अध्ययन शिक्षालय , आरंभिक बाल शिक्षा और विकास केन्द्र, सामाजिक विज्ञान शोध प्रणाली केन्द्र तथा विश्वविद्यालय की शैक्षिणक सेवाएं स्थित हैं ।

कश्मीरी गेट परिसर

ए.यू.डी का कश्मीरी गेट परिसर लोथियन रोड पर स्थित है। इस परिसर में गुरू गोविन्द सिंह इन्द्रप्रस्थ विश्वविद्यालय तथा इंदिरा गांधी प्रौद्योगिकी संस्थान भी स्थित हैं। ए.यू.डी का कश्मीरी गेट परिसर अपने विकास के प्रारंभिक चरण में है। विश्वविद्यालय के सभी प्रशासनिक और शैक्षिक अनुभागों को स्थान देने के लिए इसे व्यापक रूप से नवीनीकरण करने का कार्य चल रहा है। इस परिसर में फिलहाल संस्कृति और सृजनात्मक अभिव्यक्ति शिक्षालय, मानव अध्ययन शिक्षालय, स्नातक अध्ययन शिक्षालय, ललित अध्ययन शिक्षालय (स्कूल ऑफ लिबरल स्टडीज) और सामुदायिक ज्ञान केन्द्र तथा विश्वविद्यालय के एम. फिल. और पी.एच.डी. कार्यक्रम स्थित हैं।

ए.यू.डी का कार्यकरण

ए.यू.डी अपने विभिन्न विद्यालयों और केन्द्रों के जरिए कार्य करता है। ए.यू.डी द्वारा अब तक स्थापित व्यवसाय, लोक नीति और सामाजिक उद्यमिता शिक्षालय, संस्कृति एवं सृजनात्मक अभिव्यक्ति शिक्षालय, विकास अध्ययन शिक्षालय, ललित अध्ययन शिक्षालय,शैक्षिक अध्ययन शिक्षालय,मानव पारिस्थितिकी शिक्षालय, मानव अध्ययन शिक्षालय और स्नातक अध्ययन शिक्षालय हैं। विधि एवं अभिशासन शिक्षालय और अभिकल्पन (डिज़ाइन) शिक्षालय शीघ्र स्थापित किए जाने की संभावना है। मौजूदा शिक्षालय स्नातक और स्नातकोत्तर कार्यक्रम संचालित करते है। चयनित क्षेत्रों में एम.फिल् और पीएच.डी कार्यक्रम भी चलाए जाते हैं। स्नातक अध्ययन शिक्षालय स्नातक पाठ्यक्रमों (सामाजिक विज्ञान, मानविकी, गणितीय विज्ञान और ललित अध्ययन) का मुख्य अकादमिक क्षेत्र है। ए.यू.डी अध्ययन और शोध हेतु कई केन्द्र स्थापित करने की ओर अग्रसर है। इनमें पहले से ही आरंभिक बाल शिक्षा और विकास केन्द्र, सामुदायिक ज्ञान केन्द्र और सामाजिक विज्ञान शोध प्रणाली केन्द्र स्थापित किए गए है। भविष्य के लिए नियोजित अन्य केन्द्रों में नेतृत्व और परिवर्तन केन्द्र, समानता और सामाजिक न्याय केन्द्र, अभियोजित अध्यात्म और शांति निर्माण, गणित का सामाजिक अनुप्रयोग केन्द्र तथा प्रकाशन केन्द्र हैं।

विश्वविद्यालय द्वारा फिलहाल चलाए जा रहे स्नातकोत्तर कार्यक्रम इस प्रकार हैं।

- एम.ए. विकास अध्ययन (विकास अध्ययन शिक्षालय)
- एम.ए. अर्थशास्त्र (ललित अध्ययन शिक्षालय)

- एम.ए. अंग्रेजी (ललित अध्ययन शिक्षालय)
- एम.ए. पर्यावरण और विकास (मानव पारिस्थितिकी शिक्षालय)
- एम.ए. इतिहास (ललित अध्ययन शिक्षालय)
- एम.ए. मनोसामाजिक नैदानिक अध्ययन (मानविकी अध्ययन शिक्षालय)
- एम.ए. समाज शास्त्र (ललित अध्ययन शिक्षालय)

शैक्षिक सत्र 2011–12 में विश्वविद्यालय ने निम्नलिखित स्नातक पाठ्यक्रमों की शुरुआत की :–

- बी.ए . सम्मान, अर्थशास्त्र (मुख्य विषय)
- बी.ए . सम्मान, अंग्रेजी (मुख्य विषय)
- बी.ए . सम्मान, इतिहास (मुख्य विषय)
- बी.ए . सम्मान, गणित (मुख्य विषय)
- बी.ए . सम्मान, मनोविज्ञान (मुख्य विषय)
- बी.ए . सम्मान, समाज शास्त्र (मुख्य विषय)
- बी.ए . सम्मान, सामाजिक विज्ञान (मुख्य विषय)
- बी.ए. सम्मान, दो मुख्य विषय सहित

वर्ष 2011–12 में हिन्दी, इतिहास, मनोनिदान शास्त्र और नैदानिक विवेचन में एम.फिल कार्यक्रमों हेतु 32 छात्रों का नामांकन किया गया हिन्दी, इतिहास, विकास अध्ययन और पर्यावरण एवं विकास में 14 छात्रों का नामांकन किया गया ।

अम्बेडकर विश्वविद्यालय दिल्ली का नजरिया

विश्वविद्यालय ललित कला, मानविकी और सामाजिक विज्ञान पर ध्यान केन्द्रित करते हुए उच्च शिक्षा में अध्ययनों, अनुसंधान और विस्तार कार्यों को बढ़ावा देने के लिए प्रतिबद्ध है। सामाजिक संतुलन और साथ ही सामाजिक असंतुलन में योगदान देने वाले बलों के विश्लेषण का प्रयास करेगा। यह ऐसा नजरिया विकसित करेगा जिससे सामाजिक उद्विकास एक ऐसी परिस्थिति की तरफ बढ़ सके जिसमें जनता के सभी तबके अपनी पूरी मानवीय क्षमता को प्राप्त कर सके।

दर्शन

साम्यता, सामाजिक न्याय और उत्कृष्टता अम्बेडकर विश्वविद्यालय दिल्ली, के दर्शन और मान्यताओं के मूल सिद्धांत हैं। ए.यू.डी खुद को सामजिक रूपांतरण के एक उपकरण के रूप में देखता है। जिसमें इसका ध्यान सभ्य समाज और राज्य के अंतः फलक पर सामाजिक क्रिया के रूप में केन्द्रित हैं।

लक्ष्य

विश्वविद्यालय सामाजिक विज्ञान और मानविकी में उच्च शिक्षा में उत्कृष्टता का प्रयास करता है। ए.यू.डी का मुख्य लक्ष्य उच्च शिक्षा तक पहुँच तथा सफलता के बीच संधारणीय और प्रभावी सम्पर्क सृजित करना है। ए.यू.डी मानवतावाद, गैर–श्रेणीबद्धता और कालेज संबंधी कार्यकरण में सामूहिक कार्य और सृजनात्मकता के पोषण द्वारा संस्थागत संस्कृति को सृजित करने के लिए प्रतिबद्ध है।

उद्देश्य

विश्वविद्यालय को ललित कला, मानविकी और सामाजिक विज्ञान पर ध्यान केन्द्रित करते हुए उत्कृष्ट और सर्वग्राही उच्च शिक्षा के विकास को प्रदान करने का कार्य सौंपा गया है। यह दूरस्थ और सतत् शिक्षा दोनों ही प्रदान करने के लिए अधिदेशित है। उत्कृष्टता का अनुसरण करने वाले अन्य विश्वविद्यालयों के समान इससे व्याख्यानों, विचारगोष्ठियों, परिसंवादों, कार्यशालाओं और सम्मेलनों का आयोजन करके अध्ययनों को आयोजित करने अनुसंधान को बढ़ावा देने, ज्ञान और प्रक्रिया का प्रसार करने तथा भारत और विदेश में उच्च शिक्षा अनुसंधान वाली संस्थाओं के साथ सम्पर्क करने की आशा की जाती है । इससे आनुसंधानिक मोनोग्राफ, शोध प्रबंधों, पुस्तकों, प्रतिवेदनों और पत्रिकाओं को प्रकाशित करने की आशा की जाती है। इन उद्देश्यों को आगे बढ़ाते हुए इससे सांस्कृतिक और नीति शास्त्र संबंधी मान्यताओं को बढ़ावा देने की भी आशा की जाती है ।

शैक्षिक संरचना

ए.यू.डी के पास संकाय संरचना है। जो पूर्णकालिक के लिए नियमित मुख्य संकाय और अंशकालिक के लिए सहायक,अतिथि संकाय और विशिष्ट प्राध्यापकों की अनुमति देती है। विस्तार संकाय में अध्यापन सहायक के रूप में कार्यरत वरिष्ठ स्नातकोत्तर और अनुसंधानकर्ता छात्र भी शामिल हैं। विश्वविद्यालय की अकादमिक नीति को इस प्रकार

अभिकल्पित किया गया है। कि वह इसके नज़रिए में शामिल विषयों को अन्य भारतीय विश्वविद्यालयों को प्राप्त संरचना और प्रक्रिया की तुलना में और अधिक प्रभावी ढंग से प्रतिबिंबित कर सके। विश्वविद्यालय का प्रयास यह सुनिश्चित करना होगा कि विश्वविद्यालय का कार्य पारदर्शी, व्यवस्थित और उचित ढंग से संचालित किया जा सके। इसके सभी अमलों (कर्मचारियों, अधिकारियों एवं शिक्षक समूहों) के बीच सामूहिक रूप से कार्य संचालन को बढ़ावा दिया जा सके तथा ऐसी नई संस्कृति का विकास किया जा सके जिससे विश्वविद्यालय की मूल मान्यताओं और दर्शन की सुदृढ़ता और निरंतरता बनी रहे । यह विश्वविद्यालय आरक्षण हेतु संवैधानिक रूपों से अधिदेशित सभी प्रावधानों को अक्षरशः अंगीकार करते हुए, विशेषकर सक्रिय जेंडर संवेदनशील नीति के पालनार्थ, सभी को समान अवसर सुनिश्चित करने के प्रति दृढ़ –संकल्पित है ।

शिक्षा का माध्यम

ए.यू.डी में शिक्षा का माध्यम अंग्रेजी है। जबकि यह पात्रता हेतु आवश्यक नहीं है कि छात्रों ने ए.यू.डी में सम्मान (HONOURS) कार्यक्रमों में प्रवेश के लिए अंग्रेजी माध्यम से ही पढ़ाई की हो। ए.यू.डी में आवेदन करने के लिए विभिन्न पृष्ठभूमियों से आए छात्रों को बढ़ावा देने के लिए सर्वोत्तम चार विषयों में प्राप्त अंकों की गणना में अंग्रेजी भाषा अनिवार्य नहीं है। अंग्रेजी में विशेष सहायता की अपेक्षा करने वाले छात्रों की पहचान के लिए प्रारंभ में अंग्रेजी भाषा में प्रवीणता परीक्षा आयोजित की जाती है। ऐसे छात्र, जो अंग्रेजी भाषा में अनिवार्य क्रेडिट पाठ्यक्रम शुरू करने के लिए सहायता चाहते हैं उनके लिए अंग्रेजी में एक विशेष संक्षिप्त पाठ्यक्रम और एक प्रारंभिक वैकल्पिक पाठ्यक्रम चलाया जाता है। इन पाठ्यक्रमों को पढ़ाने के लिए भाषा शिक्षा में विशेष प्रशिक्षण प्राप्त शिक्षकों को नियुक्त किया जाता है।

शिक्षण पद्धति

व्याख्यानों में कई स्वतंत्र सहयोगी तकनीकों जैसे– विचार–विमर्शों, अंतःक्रियाओं और संवाद के माध्यम से, साथ ही इसे अनुभवों से जोड़कर ज्ञान की परिधि और विस्तृत की गयी है। प्रत्येक पाठ्यक्रम में श्रृंखलाबद्ध चयनित पाठों को लिया जाता है तथा कक्षा में उसकी विस्तृत रूप से चर्चा की जाती है। सत्रों और विषयों के पाठ्यक्रम के बीच सेतु स्थापित करने का सतत् प्रयास किया गया है। कक्षा में अनुभव को सरल बनाने के लिए विभिन्न माध्यमों का सक्रिय रूप से इस्तेमाल किया जाता है। इसमें संगीत, फिल्म, कविता, कहानी और अनुभवजन्य अभ्यास शामिल हैं।

परामर्शदाता

परामर्शदाता समूह ऐसा स्थान प्रदान करता है जहां छात्र अपनी चिन्ताओं और आवश्यकताओं का निराकरण कर सकते हैं। यह वो स्थल है जो परिसर में तनावरहित और खुशनुमा माहौल निर्मित करता है, जिससे शिक्षकों और सहपाठियों में निकटता और मित्रता स्थापित होती है। परामर्शदाता समूह श्रेष्ठ शिक्षण के सशक्त क्षेत्र हैं। तथा यह नजदीकी, जुड़ाव और घनिष्ठता के साथ विचारों का आदान–प्रदान करते हैं। एक छोटे समूह में ज्ञान की सह–निर्मित प्रकृति और आत्मविषयक समझ दोनों ही एक दूसरे के लिए उपलब्ध होते हैं।

प्रशासन

किसी संस्था का प्रशासन दैनंदिन कार्यकरण देखता है तथा यह उस संस्था की रीढ़ है। ए.यू.डी प्रशासन के स्पष्ट प्रतिमान का अनुसरण करता है। विश्वविद्यालय की स्टाफ संरचना और स्टाफिंग प्रतिमान का उद्देश्य कार्यनिष्पादन उन्मुख होना है तथा परिणाम देना है न कि क्रम परम्परा तथा प्रतिवेदन पथ का परिपालन करना है। विश्वविद्यालय द्वारा लगाए गए अधिकतर कार्मिकों से विविध कार्यों में प्रशिक्षित होने तथा समग्र रूप में सक्षम होने की आशा की जाती है। विश्वविद्यालय अधिकतर वरिष्ठ नियुक्तियां निर्धारित कार्यकाल के लिए करने का प्रयास करेगा। सभी स्तरों पर संविदा अथवा प्रतिनियुक्ति पर दो–तिहाई तथा नियमित नियुक्तियों के रूप में कम से एक–तिहाई के अनुपात का सुझाव दिया जा रहा है। प्रशासनिक संरचना और स्थितियों के संबंध में विश्वविद्यालय की नीति की समीक्षा सामान्यतः प्रत्येक तीन वर्षों में की जाएगी। तथापि, अपने प्रारंभिक चरण में संगठन के गतिशील स्वरूप पर विचार करते हुए प्रशासनिक संरचनाओं और स्थितियों की प्रारंभ में दो वर्षों के बाद समीक्षा की जाती है। एक मध्यावधिक समीक्षा समिति पहले से ही विश्वविद्यालय की शैक्षिक उपलब्धियों तथा प्रशासनिक प्रक्रिया की समीक्षा करती रही है।

वित्त विभाग

वित्त नियंत्रक की अध्यक्षता में ए.यू.डी का वित्त विभाग विश्वविद्यालय की निधियों का सामान्य पर्यवेक्षण करने तथा इसकी वित्तीय नीतियों के संबंध में परामर्श देने के लिए जिम्मेवार है । यह विश्वविद्यालय की संपत्तियों और निवेशों का भी प्रबंधन करता है। यह विश्वविद्यालय के वार्षिक लेखे तथा बजट को तैयार करने तथा वित्त समिति द्वारा विचार करने के बाद प्रबंधन बोर्ड को प्रस्तुत करने के लिए भी जिम्मेवार है।

नियोजन प्रभाग

ए.यू.डी का नियोजन प्रभाग विश्वविद्यालय के नियोजन और विकास पर ध्यान केन्द्रित करता है। नियोजन प्रभाग फिलहाल कश्मीरी गेट परिसर के विकास का सर्वेक्षण कर रहा है। ए.यू.डी. के भावी भवनों और परिसर विकास के निर्माण की जिम्मेदारी इसकी ही होगी जिसके लिए रोहिणी और धीरपुर में जमीन मुहैया की जाने वाली है। इसके अन्य उत्तरदायित्व हैः—

1. विश्वविद्यालय की संसाधन संबंधी आवश्यकताओं की योजना बनाना।
2. फिलहाल विद्यमान अवसंरचना को ध्यान में रखते हुए भावी विकास के लिए रोडमैप तैयार करना।
3. विश्वविद्यालय के प्रकाशनों का पर्यवेक्षण।

विश्वविद्यालय का निकाय

विश्वविद्यालय में इसके कार्यकरण के लिए कई विनियामक निकाय हैं। इनमें विश्वविद्यालय का न्यायालय, अकादमिक परिषद, प्रबंधन बोर्ड ,वित्त समिति तथा स्थापना समिति शामिल हैं।

न्यायालय

विश्वविद्यालय—न्यायालय विश्वविद्यालय का सर्वोच्च प्राधिकरण है और प्रत्येक वर्ष प्रबंधन बोर्ड द्वारा निर्धारित तिथि को रसीदों और व्यय विवरण, लेखापरीक्षित तुलन पत्रों और वित्तीय अनुमान के विवरण के साथ पिछले वर्षों के दौरान विश्वविद्यालय के कार्यप्रणाली की रिपोर्ट पर विचार करने के लिए एक बैठक करता है। इसे विश्वविद्यालय की समग्र नीतियों और कार्यक्रमों की समीक्षा करने का और विश्वविद्यालय के सुधार एवं विकास के लिए उपाय सुझाने का अधिकार प्राप्त है।

31 मार्च, 2012 की स्थिति के अनुसार न्यायालय के सदस्य हैं :—

श्री तेजन्दर खन्ना
विश्वविद्यालय के कुलाधिपति

प्रोफेसर श्याम बी. मेनन
विश्वविद्यालय के कुलपति

प्रोफेसर एस.आर. हाशिम
सरकार द्वारा नामित

डॉ. किरण कार्णिक
सरकार द्वारा नामित

प्रोफेसर दीपक नैय्यर
सरकार द्वारा नामित

प्रोफेसर के. सचिदानन्दन
सरकार द्वारा नामित

न्यायमूर्ति लीला सेठ
सरकार द्वारा नामित

प्रधान सचिव–वित
राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र, दिल्ली सरकार

प्रधान सचिव–उच्च शिक्षा एवं टी.टी.ई
राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र, दिल्ली सरकार

सचिव–कला, संस्कृति और भाषा
राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र, दिल्ली सरकार

प्रोफेसर नजीब जंग
विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा नामित

डॉ. बी.पी. जोशी
पंजीयक –गुरू गोबिन्द सिंह इन्द्रप्रस्थ विश्वविद्यालय

पंजीयक –सचिव

प्रबंधन–बोर्ड

प्रबंधन बोर्ड विश्वविद्यालय का कार्यकारी प्राधिकरण है तथा इसके पास विश्वविद्यालय के सामान्य प्रबंधन और प्रशासन का प्रभार है।

31 मार्च, 2012 की स्थिति के अनुसार प्रबंधन–बोर्ड के सदस्य हैं।

प्रोफेसर श्याम बी. मेनन
विश्वविद्यालय के कुलपति

प्रोफेसर अर्मिति देसाई
सरकार द्वारा नामित

प्रोफेसर एन.आर. माधव मेनन
सरकार द्वारा नामित

डॉ. किरण दातार
सरकार द्वारा नामित

प्रधान सचिव–उच्च शिक्षा एवं टी.टी.ई
राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र, दिल्ली सरकार

प्रधान सचिव–वित
राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र, दिल्ली सरकार

प्रोफेसर अशोक नागपाल
कुलाधिपति द्वारा नामित

प्रोफेसर चन्दन मुखर्जी
कुलाधिपति द्वारा नामित

अकादमिक परिषद

अकादमिक परिषद विश्वविद्यालय का प्रधान अकादमिक निकाय है। अकादमिक परिषद् नियंत्रक और नियामक की भूमिका में होता है। यह विश्वविद्यालय में अनुदेशों, शिक्षा और परीक्षण के मापदण्डों की देख–रेख के लिए जिम्मेदार होता है ।

31 मार्च, 2012 की स्थिति के अनुसार शैक्षिक परिषद के सदस्य निम्नलिखित हैं।

प्रोफेसर श्याम बी. मेनन
विश्वविद्यालय के कुलपति

प्रोफेसर ए.के. शर्मा
विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा नामित

प्रोफेसर अशोक चटर्जी
सरकार द्वारा नामित

प्रोफेसर के. रामचन्द्रन
सरकार द्वारा नामित

डॉ. राजा मोहन
सरकार द्वारा नामित

डॉ. अनुराधा कपूर
सरकार द्वारा नामित

डॉ. मैथ्यू वर्गीस
सरकार द्वारा नामित

प्रो0 विनीता कौल
कुलपति द्वारा नामित

प्रो. डेनिस लेइटन
कुलपति द्वारा नामित

प्रो. हनी ओबरॉय वहाली
कुलपति द्वारा नामित

प्रो. सलिल मिश्र
कुलपति द्वारा नामित

प्रो. गीता वेंकटरमन
कुलपति द्वारा नामित

अधिष्ठाता – व्यवसाय, लोक नीति एवं सामाजिक उद्यमिता शिक्षालय

अधिष्ठाता – सांस्कृतिक एवं सृजनात्मक अभिव्यक्ति शिक्षालय

अधिष्ठाता – विकास अध्ययन शिक्षालय

अधिष्ठाता – शैक्षिक अध्ययन शिक्षालय

अधिष्ठाता – मानव पारिस्थितिकी शिक्षालय

अधिष्ठाता – मानव अध्ययन शिक्षालय

अधिष्ठाता – ललित अध्ययन शिक्षालय (स्कूल ऑफ़ लिबरल स्टडीज)

अधिष्ठाता – स्नातक अध्ययन शिक्षालय

डॉ. सुमंगला दामोदरन
कुलपति द्वारा नामित

डॉ. प्रवीण सिंह
कुलपति द्वारा नामित

पंजीयक –सचिव

वित्त समिति

वित्त समिति विश्वविद्यालय का सांविधिक निकाय है। यह विश्वविद्यालय के वार्षिक बजट की जांच एवं परीक्षण करती है और प्रबंधन बोर्ड को वित्तीय मामलों पर अपनी सिफारिशें देती है ।

31 मार्च, 2012 की स्थिति के अनुसार वित्त समिति के सदस्य निम्नलिखित हैं:–

प्रोफेसर श्याम बी. मेनन
विश्वविद्यालय के कुलपति

डॉ. किरण दातार
प्रबंधन बोर्ड द्वारा नामित

प्रधान सचिव–वित्त
राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र, दिल्ली सरकार

प्रधान सचिव–उच्च शिक्षा एवं टी.टी.ई
राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र, दिल्ली सरकार

प्रोफेसर चन्दन मुखर्जी
प्रबंधन बोर्ड द्वारा नामित

वित्त नियंत्रक–सचिव

स्थापना समिति

विश्वविद्यालय की स्थापना समिति प्रत्येक पद की भूमिका, उत्तरदायित्व और विभिन्न पदों, जो संविदा अथवा नियमित नियुक्तियों द्वारा भरे जाने हैं के अर्हता एवं अनुभव को परिभाषित करते हुए विभिन्न विद्यालयों/केन्द्रों/प्रभागों/इकाईयों में पदों के सृजन और आवंटन संबंधित सभी मामलों पर विचार करती है ।

31 मार्च, 2012 की स्थिति के अनुसार स्थापना समिति के सदस्य निम्नलिखित हैं।

प्रोफेसर श्याम बी. मेनन
विश्वविद्यालय के कुलपति

डॉ. किरण दातार
प्रबंधन बोर्ड द्वारा नामित

प्रोफेसर चन्दन मुखर्जी
प्रबंधन बोर्ड द्वारा नामित

प्रो.अशोक नागपाल
कुलपति द्वारा नामित

पंजीयक – सदस्य सचिव

2

विश्वविद्यालय का विकास

वर्ष 2008–09 से अब तक ए.यू.डी में छात्रों की संख्या में वृद्धि

विश्वविद्यालय ने 13 छात्रों के साथ अकादमिक सत्र 2008–09 में अपना पहला कार्यक्रम, विकास अध्ययन में स्नातकोत्तर डिप्लोमा शुरू किया।

सत्र 2009–10 में विश्वविद्यालय ने 100 छात्रों को प्रवेश देकर तीन स्नातकोत्तर कार्यक्रम शुरू किए। यह संख्या वर्ष 2010–11 में बढ़कर 118 हो गई। यह तीन कार्यक्रम थे:

1. एम.ए.विकास अध्ययन (विकास अध्ययन शिक्षालय)
2. एम.ए. पर्यावरण और विकास (मानव पारिस्थितिकी शिक्षालय)
3. एम.ए. मनोसामाजिक नैदानिक अध्ययन (मानव अध्ययन शिक्षालय)

अकादमिक सत्र 2010–11 से विश्वविद्यालय ने अपना प्रथम स्नातक कार्यक्रम शुरू किया जिसमें 68 छात्रों को नामांकित किया गया।

वर्ष 2011–12 में चार और स्नातकोत्तर कार्यक्रम शुरू किए गए । इस प्रकार स्नातकोत्तर

स्तर पर 306 छात्रों का नामांकन किया गया। वर्ष 2011–12 में शुरू किए गए चार कार्यक्रम निम्नलिखित थेः

1. एम.ए. अर्थशास्त्र (ललित अध्ययन शिक्षालय)
2. एम.ए. अंग्रेजी (ललित अध्ययन शिक्षालय)
3. एम.ए. इतिहास (ललित अध्ययन शिक्षालय)
4. एम.ए. समाज शास्त्र (ललित अध्ययन शिक्षालय)

अकादमिक वर्ष 2011–12 में, स्नातक अध्ययन शिक्षालय ने पहले से उपलब्ध चार स्नातक कार्यक्रमों के साथ तीन और स्नातक कार्यक्रम शुरू किये, जिसमें बी.ए सम्मान –अंग्रेजी (मुख्य विषय), बी.ए सम्मान – गणित (मुख्य विषय) और बी.ए सम्मान – समाजशास्त्र (मुख्य विषय) शामिल थे। इस प्रकार सत्र 2011–12 में स्नातक कार्यक्रमों में नामांकित छात्रों की कुल संख्या 208 थी।

ए.यू.डी. में छात्रों की वृद्धि

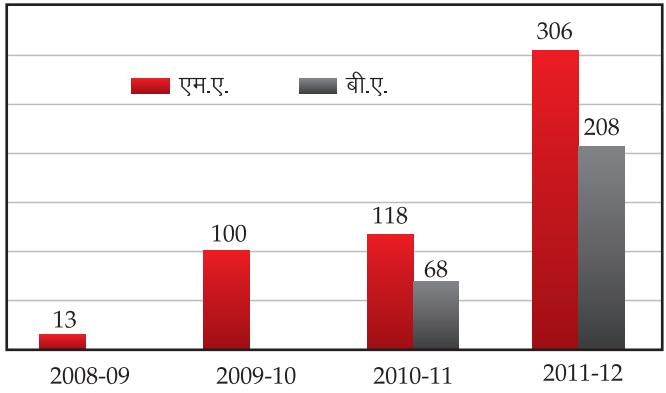

वर्ष 2008 –09 में सभी शिक्षालयों में छात्रों की कुल संख्या 13 थी, जो कि 2011–12 में बढ़कर 560 हो गयी।

संकाय

ए.यू.डी में भर्ती एक बार के कार्य की बजाय एक सतत् प्रक्रिया है। ए.यू.डी के उच्च शिक्षा प्राप्त शिक्षकों को भारत और विदेश के अग्रणी अकादमिक संस्थानों से लिया गया है। उनके पास शिक्षण और अनुसंधान उत्कृष्टता में इनका एक प्रामाणिक कार्य निष्पादन रहा

है तथा वे विश्वविद्यालय के लिए बहु–अनुशासन और ऊर्जा का इष्टतम संयोजन प्रस्तुत करते हैं। एक अनूठी संस्थागत व्यवस्था में संकाय सदस्य बहुधा अध्ययन के प्रत्येक कार्यक्रम को अधिक गहराई और विस्तार से प्रस्तुत करते हुए एक साथ विभिन्न शिक्षालयों में पढ़ाते हैं । शिक्षण और अनुसंधान के क्षेत्र में विश्वविद्यालय की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए हमारे संकाय में तेजी से प्रगति हुई है। फिलहाल ए.यू.डी में 1 प्रतिष्ठित प्रोफेसर, 9 प्रोफेसर, 17 एसोसिएट प्रोफेसर, 51 सहायक प्रोफेसर, 4 अतिथि शिक्षक, 2 अतिथि सहायक शिक्षक, 9 अकादमिक फेलो और 6 शोध सहायकों को मिलाकर कुल 99 संकाय सदस्य हैं।

3

विश्वविद्यालय के शिक्षालय

ए.यू.डी अपने शिक्षालयों और केन्द्रों के जरिए कार्य करता है। अब तक स्थापित शिक्षालय इस प्रकार हैं:—

- व्यवसाय, लोक नीति एवं सामाजिक उद्यमिता शिक्षालय (एस.बी.पी.पी.एस.ई),
- संस्कृति एवं सृजनात्मक अभिव्यक्ति शिक्षालय (एस.सी.सी.ई),
- विकास अध्ययन शिक्षालय (एस.डी.एस),
- शैक्षिक अध्ययन शिक्षालय (एस.ई.एस),
- मानव पारिस्थितिकी शिक्षालय (एस.एच.ई),
- मानविकी अध्ययन शिक्षालय (एस.एच.एस)
- ललित अध्ययन शिक्षालय (एस.एल.एस),
- स्नातक अध्ययन शिक्षालय (एस.यू.एस),

व्यवसाय, लोकनीति एवं सामाजिक उद्यमिता शिक्षालय

व्यवसाय, लोक नीति एवं सामाजिक उद्यमिता शिक्षालय की स्थापना अनुसंधान को बढ़ावा देने तथा प्रबंधन, लोक नीति और सामाजिक उद्यमिता में व्यावसायिक शिक्षा और प्रशिक्षण प्रदान करने के लिए की गई है। वर्ष 2011 में अकादमिक क्षेत्रों के विशेषज्ञों, एन.जी.ओ और

विभिन्न सहयोगी अनुशासनों के चुने हुए विशेषज्ञ समूह को शामिल करते हुए कई चक्रों की परामर्शदात्री बैठकों के आधार पर शिक्षालय के दृष्टिकोण और उद्देश्यों का विकास किया गया है। यह निर्णय लिया गया कि एस.बी.पी.पी.एस.ई लोक नीति और व्यवसाय प्रबंधन में सामाजिक उद्यमिता के तत्वों को शामिल करते हुए समाज और अर्थव्यवस्था के बृहत परिप्रेक्ष्य के अंतर्गत व्यवसाय और लाभ के लिए समग्र दृष्टिकोण विकसित करेगा।

यह शिक्षालय जुलाई, 2012 से दो वर्षीय (पूर्णकालिक) व्यवसाय प्रशासन में मास्टर कार्यक्रम (एम.बी.ए) प्रदान करेगा जबकि आने वाले 3–5 वर्षों में लोक प्रशासन में मास्टर (एम.पी.पी) एवं सामाजिक उद्यमिता में मास्टर कार्यक्रम शुरू किए जाएंगे। एम.बी.ए कार्यक्रम का इंडिया हैबिटेट सेन्टर में 1 नवम्बर, 2011 को श्रीमती शीला दीक्षित, मुख्यमंत्री, दिल्ली सरकार द्वारा औपचारिक उद्घाटन किया गया। वर्ष 2011–12 के दौरान पांच संकाय सदस्यों की भर्ती की गई। एम.बी.ए के कार्यक्रम संरचना तथा पाठ्यक्रम के ब्यौरे का विकास किया गया।

एम.बी.ए (पूर्णकालिक) कार्यक्रम का आशय भावी प्रबंधकों को व्यावसायिक शिक्षा देना एवं उनके ज्ञान और दक्षता का उन्नयन करना है। इसका उद्देश्य पेशे में पहले से लगे कार्मिकों का विकास करना और खासकर सामाजिक क्षेत्र में नए उद्यमों को शुरू करने के लिए प्रेरित करना है। यह कार्यक्रम उद्यम सृजन और रोजगार सृजन के महत्व पर जागरूकता निर्मित करके तथा विस्तृत सामाजिक आर्थिक मामलों के प्रति उन्हें संवेदनशील बनाकर धन प्रबंधकों की तरह ही धन सृजकों पर भी समान रूप से ध्यान केन्द्रित करेगा। यह भावी और वर्तमान प्रबंधकों को ज्ञान और व्यवसाय की दक्षता प्रदान करके उन्हें व्यावसायिक सामाजिक जिम्मेदारियों से जुड़े मसलों को हल करने के प्रति सक्षम बनाता है।

दो–वर्षीय (पूर्णकालिक) एम.बी.ए कार्यक्रम का पाठ्यक्रम प्रबंधन शिक्षा में अद्यतन विकासों को शामिल करते हुए, नवीन पाठ्यक्रम संरचना पर आधारित हैं। एम.बी.ए पाठ्यचर्चा पर मुख्य रूप से जोर देते हुए इस कार्यक्रम की अद्वितीयता बृहत समाज और अर्थव्यवस्था के समग्र परिप्रेक्ष्य के अंतर्गत व्यवसाय और लाभ के लिए इसका दृष्टिकोण है। इस पाठ्यचर्चा का अभिकल्पन इस प्रकार किया गया है कि छात्र अपने आस–पास के वातावरण के बारे में सोचने, क्रिया करने और अवलोकन में मूलभूत परिवर्तन लाएं।

यह कार्यक्रम युवाओं को देशी और बहु–राष्ट्रीय निगमों में चुनौतीपूर्ण कार्य शुरू करने के लिए उनकी बुद्धि को परिपक्व करेगा, कार्यक्रम अर्थव्यवस्था के सूक्ष्म/ छोटे और असंगठित क्षेत्र के मामलों का समाधान करेगा।

एम.बी.ए कार्यक्रम दो वर्ष की अवधि का होगा। दो वर्षीय एम.बी.ए कार्यक्रम की शिक्षा कुल 6 टर्म के साथ प्रत्येक वर्ष तीन टर्म में दी जाएगी। प्रत्येक सत्र 12 सप्ताह की अवधि का होगा जिसमें प्रत्येक में दो क्रेडिट के बराबर प्रति पेपर 32 घण्टे की कक्षा ली जाएगी। प्रत्येक सत्र में कार्यक्रम के दो वर्षों के दौरान 110 क्रेडिट के नौ पेपर दिए जाएंगे।

कार्यक्रम के प्रथम वर्ष के दौरान पाठ्यचर्चा में समाज, अर्थव्यवस्था, व्यवसाय का वैश्विक परिप्रेक्ष्य, नीति शास्त्र और मूल्य, व्यक्तित्व विकास और नेतृत्व, व्यवसाय प्रबंधन के मूल तत्व, लोक नीति और सामाजिक उद्यमिता शामिल होंगी । गर्मी की छुट्टी के दौरान छात्रों से आठ–दस सप्ताहों की अवधि के लिए इंटर्नशिप करने की अपेक्षा की जाएगी । कार्यक्रम के दूसरे वर्ष छात्र कॉरपोरेट सामाजिक जिम्मेदारी अन्तः–वैयक्तिक तथा समूह प्रक्रियाओं, अंतरराष्ट्रीय वातावरण और व्यवसाय नीति एवं रणनीतिक विश्लेषण के अलावा वैकल्पिक विषय का चुनाव करेंगे। एम.बी.ए कार्यक्रम के छात्रों से यह अपेक्षा की जाएगी, कि वे अपने अध्ययन के दौरान एक अतिरिक्त (विदेशी) भाषा सीखें।

कार्यक्रम का विषय–वस्तु अद्यतन ज्ञान और दक्षताएं प्रदान करते हुए मान्यताओं और नीति शास्त्र पर पर्याप्त जोर सुनिश्चित करेगा। सैद्धांतिक अवधारणाओं और अनुप्रयोग दक्षताओं को सीखने का वातावरण सृजित करने के अलावा कार्यक्रम साफ्ट स्किल (लोगों की दक्षताओं) की महत्ता की जागरूकता सृजित करने का प्रयास करेगा।

प्रबंधन विकास कार्यक्रम

इंडिया इन्टरनेशनल सेन्टर में 9–10 मार्च 2012 को नेशनल बुक ट्रस्ट के वरिष्ठ अधिकारियों के लिए एस.बी.पी.पी.एस.ई द्वारा ''नेतृत्व दक्षता पर एक 2 दिवसीय एम.डी.पी कार्यक्रम का आयोजन किया गया था। इस कार्यक्रम का उद्घाटन प्रोफेसर श्याम मेनन, कुलपति अम्बेडकर विश्वविद्यालय द्वारा किया गया तथा श्री एम.ए. सिकन्दर, निदेशक, एन.बी.टी ने इस पर परिचयात्मक टिप्पणी दी।

अनुसंधान

एस.बी.पी.पी.एस.ई सामुदायिक ज्ञान केन्द्र के साथ मध्य प्रदेश में छिन्दवाड़ा और पड़ोसी जिले के मारवाड़ी समुदाय के उद्यमिता संबंधी उपक्रमों पर अध्ययन करने की प्रक्रिया में है। इस अध्ययन का लक्ष्य प्रवासी मारवाड़ी समुदाय की मनो–सामाजिक रूपरेखा का विकास करना व समझना है तथा साथ ही उन सामाजिक आर्थिक और वातावरणीय कारकों का मूल्यांकन करना है जो सफल उद्यमिता संबंधी उपक्रमों को समर्थ बनाता है।

सहभागिता

अध्यापकों और छात्रों के आदान–प्रदान के लिए ए.यू.डी. और सेनफ्रांसिस्को राज्य विश्वविद्यालय के बीच एक लिखित सहमति हुई है। यह शिक्षालय अंतरराष्ट्रीय सहयोग हेतु अन्य कई विश्वविद्यालयों से बातचीत कर रहा है।

संस्कृति और सृजनात्मक अभिव्यक्ति शिक्षालय

संस्कृति और सृजनात्मक अभिव्यक्ति शिक्षालय (एस.सी.सी.ई) तीन मूर्ति हाउस में सम्पन्न एक समारोह में 24 फरवरी 2012 को औपचारिक रूप से शुरू किया गया था। इस अवसर पर ''राइट टू एस्थेटिक्स एण्ड द फैकल्टी ऑफ आर्ट'' शीर्षक पर प्रोफेसर सूसी द्वारा एक वार्ता तथा प्रोफेसर मदन गोपाल सिंह एवं उनके समूह द्वारा एक संगीत कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कुलपति प्रोफेसर श्याम बी. मेनन द्वारा इस समारोह की अध्यक्षता की गई।

अकादमिक वर्ष 2012–13 में संस्कृति और सृजनात्मक अभिव्यक्ति शिक्षालय द्वारा एम.ए. में इन चार विषयों में विशेषज्ञता कार्यक्रम में शुरू किया गया – (1) सिनेमा अध्ययन (2) निष्पादन अध्ययन (3) दृश्य कला (4) साहित्यिक कला : रचनात्मक लेखन ।

दृश्य कला (विजुअल आर्ट) में एम.ए.

दृश्य कला में मास्टर कार्यक्रम अभ्यासोन्मुख होगा तथा यह कलात्मक अनुसंधान तथा प्रयोगात्मक अभ्यासों पर केन्द्रित होगा। इसमें आर्ट मेकिंग की विभिन्न नई प्रवृत्तियों में प्रशिक्षण शामिल होगा जिसमें विभिन्न विषय और पद्धतियाँ जैसेः– न्यू मीडिया आर्ट, मेटा मीडिया आर्ट, इंस्टालेशन आर्ट, निष्पादन कला , फोटोग्राफी, वीडियो आर्ट, लोक कला , सहयोगात्मक कला शामिल होंगी। चूंकि शिक्षालय अनुसंधान उन्मुखता और प्रयोगात्मक

पद्धतियों पर ध्यान केन्द्रित करेगा तथापि, दृश्य कला में एम.ए. के छात्रों हेतु ऐतिहासिक और सैद्धांतिक केन्द्र बिन्दु समसामयिक कलात्मक इतिहास, विश्व कला, राष्ट्रीय कला, क्षेत्रीय और स्थानीय कला होगा।

साहित्यिक कला (लिटरेरी आर्ट) में एम.ए.

साहित्यिक कला में स्नातकोत्तर कार्यक्रम में समीक्षात्मक पठन, रचनात्मक लेखन एवं सम्पादन में अभ्यास शामिल होगा। छात्रों के समक्ष कई विकल्प रखे जायेंगे जिसमें से उन्हें लेखन के किसी भी एक रूप में विशेषज्ञता प्राप्त करना ज़रूरी होगा। इसके अलावा छात्रों से साहित्यिक मूल्यांकन और साहित्यिक पत्रकारिता के मापदंड के अनुरूप कार्य करने की अपेक्षा की जाएगी।

निष्पादन अध्ययन में एम.ए.

निष्पादन अध्ययन में एम.ए. कार्यक्रम, निष्पादन इतिहास, निष्पादन सिद्धांत और निष्पादन समालोचना के क्षेत्रों में ज्ञान एवं दक्षता प्रदान करेगा।

सिनेमाई अध्ययन

सिनेमाई अध्ययनों में एम.ए. कार्यक्रम सिद्धांत और इतिहासोन्मुख विशेषज्ञता के साथ फिल्म निर्माण के समालोचनात्मक इतिहास और सिनेमा के सिद्धांत से संबंधित होगा। कार्यक्रम में सिनेमा समालोचना, सिनेमा सिद्धांत, सिनेमा का इतिहास, सिनेमा अध्ययन और दृश्यात्मक सांस्कृतिक अध्ययन के क्षेत्रों में ज्ञान प्रदान करना तथा लेखन दक्षता शामिल होगी। यह भारतीय परिदृश्य में क्षेत्रीय सिनेमा सहित पूरे विश्व में प्रयोगात्मक सिनेमा और वृत्त चित्र सिनेमा पर विशेष ध्यान के साथ विश्व सिनेमा का गहराई से अध्ययन शुरू करेगा। एक तरफ यह कार्यक्रम भाषा और संस्कृति के क्षेत्रीय प्रभाव और विषमरूपता के साथ जुड़ेगा और दूसरी तरफ यह भारतीय सिनेमा के एक अधिक व्यापक, गैर–शासकीय और समावेशी इतिहास को समर्थ बनाएगा।

विकास अध्ययन शिक्षालय

विकास अध्ययन शिक्षालय प्रथम शिक्षालयों में से एक था जिसने ए.यू.डी में सबसे पहले कार्य करना शुरू किया । शिक्षालय में अर्थशास्त्र, राजनीति विज्ञान, सामाजिक मानव विज्ञान, समाज शास्त्र और सांख्यिकी जैसे कई विषयों से लिए गए संकाय सदस्य शामिल थे। उनकी विशेषज्ञताओं में विकास से संबंधित व्यापक क्षेत्र शामिल हैं।

सामाजिक विकास परिषद्, नई दिल्ली के सहयोग से विकास अध्ययनों में स्नातकोत्तर डिप्लोमा प्रदान करने के बाद इस शिक्षालय में नवम्बर, 2008 में अकादमिक गतिविधियाँ शुरू हुईं। बाद में 2009 में शिक्षालय ने विकास अध्ययन में एम.ए. कार्यक्रम शुरू किया। एम.ए. विकास अध्ययन के 24 छात्रों के प्रथम बैच ने वर्ष 2011 में स्नातक डिग्री हासिल की। वर्तमान में, एम.ए. कार्यक्रम के प्रथम वर्ष में 33 छात्र तथा दूसरे वर्ष में 26 छात्र हैं । वर्ष 2011–12 के दौरान शिक्षालय ने विकास अध्ययन में पी.एच.डी कार्यक्रम शुरू किया। वर्तमान में इस कार्यक्रम में 4 छात्र हैं।

विकास अध्ययन में एम.ए.

विकास अध्ययन में दो वर्षीय एम.ए. कार्यक्रम विकासशील समाज को प्रभावित करने वाले विकास और लोक नीति की चुनौतियों के समाधान की योग्यता छात्रों को प्रदान करता है। इसमें 12 पढ़ाए जाने वाले पाठ्यक्रमों में, प्रत्येक चार क्रेडिट के नौ मुख्य पाठ्यक्रम तथा प्रत्येक दो क्रेडिट के तीन वैकल्पिक पाठ्यक्रम शामिल हैं। कार्यक्रम में अनुसंधान के अंतर्गत कोर्स वर्क, अनुसंधान अभ्यास, कार्य शालाएं, संगोष्ठी तथा क्षेत्र आधारित गतिविधियाँ भी शामिल हैं।

अन्तः विषयक कार्यक्रम समाज शास्त्र, राजनीति विज्ञान और अर्थशास्त्र द्वारा प्रदत्त नींव पर आधारित हैं। यह कार्यक्रम छात्रों को विकास पर चर्चाओं की समृद्ध सैद्धांतिक नींव प्रदान करता है तथा यह विकासशील देशों खासकर भारत के अनुभवों पर आधारित है। इसे विकास सिद्धांतों के अधिगम,वृद्धि और विकास की समझ तथा राज्यों, मण्डियों और समाज द्वारा उपसंहारित, राजनीतिक और आर्थिक व्यवस्थाओं की संरचना पर खुली बहस के इर्द –गिर्द संरचित किया गया है। जेंडर, वर्ग, जाति और धर्म के आधार पर हाशियागत और भेद–भाव तथा विकासशील समाज में लोगों को प्रभावित करने वाले विषयों को प्रत्येक पाठ्यक्रम में महत्व दिया गया है।

मुख्य पाठ्यक्रम में महत्वपूर्ण मामले पर चर्चा की गई है। जिसमें नीति नियमन ,भारतीय विकास, पर्यावरण, संसाधन और विकास आदि शामिल हैं । इसमें विशेषीकृत अधिगम और व्यक्तिगत रूचि के ऐच्छिक विषयों की एक विस्तृत सीमा शामिल है ।

यह कार्यक्रम सहभागी अनुसंधान और मूल्यांकन प्रणालियों पर विशेष ध्यान के साथ अनुसंधान प्रणाली में एक नींव प्रदान करता है। जो कि छात्रों को विकासशील देशों द्वारा सामना की जाने वाली ठोस समस्याओं के प्रति सक्षम बनाती है। सैद्धांतिक पहलुओं पर समर्पित कार्यशालाएँ तथा इस क्षेत्र में विशेषज्ञों द्वारा नीति विश्लेषण कक्षाएँ तथा व्यावहारिक अधिगम को उन्नत बनाती हैं। यह कार्यक्रम विश्लेष्णात्मक दक्षता तथा मौखिक और लिखित सम्प्रेषण के निर्माण पर ध्यान केन्द्रित करता है। पाठ्यक्रम नवीन कक्षा अधिगम को संगोष्ठी, सामूहिक कार्यों, परियोजनाओं तथा अनिवार्य इंटर्नशीप और संवाद के साथ जोड़ता है। तीस प्रतिशत से भी अधिक अधिगम को औपचारिक कक्षा प्रक्रिया से बाहर के विषयों से जोड़ा गया है।

यह आशा की जाती है कि इस कार्यक्रम के स्नातक विकास संगठनों, सरकारी अभिकरणों, निगमों और वित्तीय संस्थानों, गैर–सरकारी संगठनों, परामर्शदात्री संगठनों, सभ्य–समाज की पहलों, मीडिया और अकादमिक संस्थानों में कार्य करने में समर्थ होंगे ।

शैक्षिक अध्ययन शिक्षालय

शैक्षिक अध्ययन शिक्षालय को अभियोजित छात्रवृत्ति तथा कार्यों के जरिए अपने ऐतिहासिक और समसामयिक संदर्भों में शिक्षा को समझाने में प्रयासरत व्यावसायिकों और

विद्वानों के समुदाय के रूप में विकसित करने के लिए परिकल्पित किया गया है। यह शिक्षालय अपने विविध संस्थानों में शिक्षा के सिद्धांत और व्यवहार के बीच अंतराल को पाटने का प्रस्ताव करता है। जिसमें यह सामाजिक घटना के रूप में शिक्षा के अध्ययन तथा व्यावसायिक शिक्षकों को तैयार करने के बीच अधिक समरूपता को बढ़ावा देगा। यह शिक्षालय शिक्षकों की शिक्षा, शिक्षणशास्त्र, पाठ्यक्रम, नीति, नियोजन और प्रशासन पर ध्यान देते हुए विश्लेषण और अनुसंधान हेतु कठिन अभ्यास आधारित सैद्धांतिक परिप्रेक्ष्य के विकास के लिए कार्य करता है।

एस.ई.एस विस्तृत संदर्भों–समाज, संस्कृति व राजनीतिक अर्थव्यवस्था की संरचना और प्रक्रियाओं के अंतर्गत ज्ञान की घटना और क्षेत्र के रूप में, शिक्षा की व्यवस्था का प्रयास करेगा। यह विविध विषयक परिप्रेक्ष्यों के जरिए शिक्षा के क्षेत्र के साथ जुड़ने का प्रयास करेगा तथा शिक्षा प्रणाली के सिद्धांत, अनुसंधान और आलोचनाओं के साथ गहराई से जुड़कर ज्ञान के उस क्षेत्र को जिसे शिक्षा कहते हैं, की संरचना के मार्गों का अन्वेषण करेगा। खासकर सार्वजनिक प्रणालियों और कार्यरत शिक्षकों को साथ लेकर यह शिक्षा की प्रणालियों के साथ सतत् संबंध विकसित करने का प्रयास करेगा ।

यह शिक्षालय एम.ए. या एम.एड.डिग्री प्रदान करने के विकल्प के साथ शैक्षिक वर्ष 2012–13 में शिक्षा (एम.ए. शिक्षा एम.एड) में स्नातकोत्तर कार्यक्रम शुरू करना चाहता है। एक बार जब स्नातकोत्तर कार्यक्रम शुरू हो जाता है तब शिक्षालय स्नातकोत्तर शोध कार्यक्रम स्थापित करने के लिए कार्य करना शुरू कर देगा ताकि यह शिक्षा में एम. फिल. और पी एच, डी. डिग्री प्रदान करने में समर्थ हो सके । स्कूल प्रणाली तथा विकास क्षेत्र में शिक्षकों हेतु व्यावसायिक विकास और शिक्षा के अवसरों के लिए गंभीर रूप से महसूस की गई समस्या के समाधान के लिए शिक्षा में स्कूल अध्यापकों तथा विशेषज्ञता प्राप्त विषयों पर छोटे क्रेडिट वाले पाठ्यक्रमों की भी कल्पना की जा रही है। राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र, दिल्ली सरकार के शिक्षा विभाग के साथ सहभागिता निर्माण के लिए सतत् प्रयास किए जा रहे हैं ताकि एस.ई.एस दिल्ली में विद्यालयों तथा इसमें कार्यरत शिक्षकों के साथ सतत् सहभागिता बनाने में समर्थ हो सके।

वर्ष 2011 से आह्वान ट्रस्ट की सहभागिता से एस.ई.एस विद्यालय के शिक्षकों, प्राचार्यों, अकादमिकों और शोधकर्ताओं के साथ कार्यरत व्यक्तियों को अकादमिक सहायता प्रदान करता है। दिल्ली में सरकारी विद्यालयों में कार्यरत लोगों को साथ लेते हुए यह समूह विद्यालयी शिक्षकों हेतु सार्थक मंच सृजित करने का प्रयास करता है। यह एक ऐसा मंच

बनना चाहता है जहां शिक्षक अपनी चिंताओं को लिखित या मौखिक रूप से प्रकट कर सकें, शैक्षणिक विचारों का अन्वेषण कर सकें एवं सरकारी विद्यालयों में अध्ययन–अध्यापन के वातावरण में उत्कृष्टता हेतु सामूहिक रूप से कार्य कर सकें। आह्वान समूह की नियमित आधार पर बैठक होती रही है। एस.ई.एस–आह्वान सहभागिता ने विद्यालयों में प्रतिदिन के कार्य में शिक्षकों के शैक्षणिक अभ्यास और कल्पनाशीलता के सामने आ रही चुनौतियों के संदर्भ में दिल्ली में विभिन्न सरकारी विद्यालयों में कार्यरत लगभग 40 शिक्षकों के साथ दो संकेन्द्रित सामूहिक चर्चा का आयोजन किया। यह शिक्षालय के प्रयास का एक हिस्सा होगा कि वह शिक्षण प्रणाली के साथ एक सतत् सम्बन्ध विकसित कर सके, विशेषकर लोक प्रणाली और कार्यरत शिक्षकों को साथ लेते हुए, जिससे कि आलोचनात्मक और निर्माणकारी हस्तक्षेप की समझ विकसित की जा सके।

मानव पारिस्थितिकी शिक्षालय

मानव पारिस्थितिकी शिक्षालय वातावरणीय परिवर्तन तथा सतत् विकास के सामाजिक आयामों पर ध्यान केन्द्रित करता है। इसका उद्देश्य भावी नीति निर्माताओं, सिविल समाज पहल के नेताओं, परामर्शदात्री समूहों और प्रशासकों के बीच पर्यावरण तथा विकास से संबंधित सक्षमता और संवेदनशीलता सृजित करना है। यह शिक्षालय फिलहाल पर्यावरण और विकास में स्नातकोत्तर कार्यक्रम तथा साथ ही डॉक्टोरल कार्यक्रम चलाता है ।

पर्यावरण और विकास में दो वर्षीय एम.ए. कार्यक्रम का उद्देश्य मानव समाज के अंतः भाग, मानवेत्तर और जैव–भौतिकी पर्यावरण के क्षेत्र में अन्तर्विषयक अनुसंधान और शिक्षण को बढ़ावा देना है। यह कार्यक्रम उन विचारों से निर्देशित है कि पारिस्थितिक चुनौतियां जैसे संसाधन की कमी, असमानताएं और विवाद सामाजिक और पर्यावरणीय कारकों की जटिल अन्तःक्रियाओं से घटित होते हैं और इन चर्चाओं में सार्थक हस्तक्षेप का निराकरण, विस्तृत विषयों और विषय–वस्तुओं पर ज्ञान और दक्षता द्वारा किया जाना चाहिए। यह एम.ए. कार्यक्रम छात्रों को सामाजिक और प्राकृतिक विज्ञानों तथा विश्व की अन्तःदृष्टियों की ज्ञान समझ पर आधारित अन्तःविषयक परिदृश्य प्रदान करता है। यह आशा की जाती है कि इस कार्यक्रम में उत्तीर्ण होने वाले छात्र सरकारी अभिकरणों, अकादमियों, निजी निगमों, गैर–सरकारी संगठनों, परामर्शदात्री प्रतिष्ठानों, सभ्य–समाज के पहलों तथा साथ ही मीडिया में कार्य करने में समर्थ हों। इस विषय में हमेशा सर्वोत्तम ज्ञान उपलब्ध करने के लिए पाठ्यक्रम समिति के पास संस्थानीकृत तंत्र है जिसके द्वारा इस क्षेत्र में विशेषज्ञों द्वारा आवधिक रूप से पाठ्यक्रम पर प्रतिपुष्टि प्रदान की जाती है ।

एम.ए. पर्यावरण और विकास के प्रथम बैच में वर्ष 2011 में स्नातक परीक्षा में 9 छात्र उत्तीर्ण हुए. फिलहाल एम.ए. कार्यक्रम के प्रथम वर्ष में 19 छात्र तथा द्वितीय वर्ष में 17 छात्र हैं। शिक्षालय ने शैक्षिक वर्ष 2011–12 के दौरान पीएच.डी कार्यक्रम भी शुरू किया।

मानव अध्ययन शिक्षालय

मानव अध्ययन शिक्षालय ने सम्भवतः पहली बार अपने अध्यापन में व्यक्ति और व्यक्ति के जीवन के बारे में, उनके वातावरण– परिवार, समुदाय, परिवर्तनशील जीवनशैली, संबंधों, लैंगिकता, कार्यस्थल के परिवर्तनशील स्वरूप, जीवन के चरण (खासकर वृद्धावस्था) आदि से सम्बंधित मामलों को अपने अध्यापन में समाधान करने के लिये मनोवैज्ञानिकों, सामाजिक मानव वैज्ञानिकों, समाजशास्त्रियों, दार्शनिकों और समाज कार्यों में लगे हुए व्यावसायिकों के अंतर्विषयक समूह को एक जगह एकत्रित किया है। एसएचएस उन खास वास्तविकताओं जो हमारे काल से संबंधित है और मानव अनुभव, चिंतन और स्वप्न को परिरक्षित करता है पर विचारविमर्श को बढ़ावा देना चाहता है। शब्द 'मानव' अर्ध चेतन अवस्था में चेतना को खोने के चरण से अतिविनोदप्रियता की अवस्था तक की अपनी संजीदगी को याद करना है। अतः इस क्षमता को अध्ययन द्वारा बहुआयामी बनाया जा सकता है। एसएचएस को अवधारणात्मक शास्त्र और संबंधित प्रयोगों की श्रेणी के रूप में परिकल्पित किया गया है, जो अपने कार्यक्रम के अभिबल तथा अध्यापन, मेंटरशिप, मूल्यांकन तथा समाज में व्यवहार के क्षेत्र में अनुसंधान और रोजगार की सूचना प्रदान करता है। फिलहाल यह अध्ययन शिक्षालय विनोदप्रियता, जो सामान्यतः उच्च शिक्षा से संबंधित नहीं है, के साथ मानव जीवन के घटनाक्रमों के बारे में महत्वपूर्ण मामलों पर ध्यान आकर्षित करते हुए मनोविज्ञान (मनो–सामाजिक–नैदानिक अध्ययन) और जेंडर अध्ययन में एम. ए. की डिग्री प्रदान करता है।

एम.ए मनोविज्ञान (मनो–सामाजिक–नैदानिक अध्ययन)

एक नैदानिक संवेदनशीलता जो श्रवण को सरल बनाता है। जो परानुभूति और समन्वेषण के विश्लेषणात्मक आदर्शों से दूर नहीं है। एक अंतर्विषयक दृष्टिकोण, जो सपने देखने और विनोदप्रियता के साथ–साथ संबंधों की बुनियाद में छिपे हुए समीक्षात्मक चिन्तन और अध्यापन और अध्ययन की प्रक्रिया की अनुमति देता है–इस शिक्षालय के अग्रणी कार्यक्रम में परिभाषित है ।

इसके ग्रहणकर्ता को ऐसी यात्रा में समर्थ बनाता है जो संरचनात्मक और राजनीतिक प्रक्रियाओं, जो मानव की व्यक्तिनिष्ठता के निर्माण में साथ आते हैं, के साथ मन के आंतरिक ताकतों की समझ का संयोजन करता है। इस प्रकार शिक्षालय में लगातार जोर मनोविज्ञान के उस विस्तृत दृष्टिकोण पर है जो सामाजिक सांचे में अंतःस्थापित व्यक्ति का पता लगाता है। दूसरा बल नैदानिक ग्राह्यता पर है जो अप्रस्तुत को संवेदनात्मक रूप से सुन सकता है और उससे जुड़ सकता है। इसमें ''हाशिए और लक्षण" विश्वविद्यालय की कार्यसूची में विशेष अर्थ रखते हैं। यह उस हाशिए पर पहुंचे बिना पूरा नहीं हो सकता है जिसे हम सृजित करते हैं और पहले अपने भीतर व सबसे अधिक वहन करते हैं जो कि अन्दर से अजीवित, अबाधित और निर्वासित है। इस प्रकार यह कार्यक्रम जटिल आंतरिक विश्व में प्रवेश करने को प्रोत्साहित करता है जो कि व्यक्ति के जीवन की कहानियों, निरंतरताओं और टूटन का अलग पहलू है। साथ ही ऐसे अन्वेषणों के जरिए मानव की सहनशीलता और सृजनात्मकता का भी पता लगाते हैं जो जीवन को नया अर्थ प्रदान करते हैं।

एम.ए जेण्डर अध्ययन

जेण्डर अध्ययन में एम.ए कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य अपने क्षेत्र की सम्यक अंतर्विषयक समझ को विकसित करने में सक्षम बनाना है जो कि मानवीय अनुभवों के साथ सिद्धांत, शोध और हस्तक्षेप के लिए क्षमता सृजित करता है। इस आदर्श के अनुरूप यह कार्यक्रम विज्ञानों, सामाजिक विज्ञानों और मानविकी से जेण्डर संबंधी विश्लेषणों को लेकर अंतःविषयक पाठ्यक्रम के रूप में अभिकल्पित है ।

हमारा जेंडर अध्ययन कार्यक्रम देश में चलाए जा रहे कुछ जेंडर सम्बन्धी स्नातकोत्तर कार्यक्रमों में से एक है। यह स्थिति हमें आलोचनात्मक शिक्षा के गतिशील स्थल के सृजन के लिए विशेष चुनौतियों और अवसरों को प्रदान करती हैं। ऐसे रास्तों के जरिए ऐतिहासिक विरासतों के इस क्षेत्र के साथ संयोजन ने ए.यू.डी को ध्यान में रखते हुए इसके

साथ–साथ विकसित हुआ है । खासकर मानव शिक्षालय ने इस कार्यक्रम को तैयार किया है। सामाजिक मामलों के साथ सक्रिय भागीदारी के जरिए सामाजिक न्याय और अधिगम का एक बड़ा आदर्श इस कार्यक्रम की एक प्रेरक शक्ति रहा है। यह अधिकारों और विकासात्मक पहलुओं के साथ–साथ जेंडर संबंधी अनुभवों के मनोसामाजिक तथा विषयपरक पहलुओं की समझ को एक करना चाहता है । यह इस कार्यक्रम की विशिष्ट शक्तियों में से एक है।

यह पाठ्यक्रम विस्तृत क्षेत्र में जेंडर कार्यों के प्रति छात्रों की संवेदनशीलता में विकास के लिए सिद्धांत, प्रणाली और समसामयिक परिप्रेक्ष्य को जोड़ना चाहता है । अधिगम अनुभवों को समृद्ध और विनोदपरक बनाने के लिए वैकल्पिक शिक्षा शास्त्रीय पद्धतियों का इस्तेमाल किया जाता है । इस डिग्री को प्राप्त करने वाले छात्र विविध संस्थाओं में हस्तक्षेप करने में समर्थ होंगे, जहां जेंडर से संबंधित असमानताओं पर ध्यान केन्द्रित करने की आवश्यकता है जैसे –सरकारी और गैर–सरकारी संस्थान शैक्षणिक संस्थान, मानसिक स्वास्थ्य और अक्षमता, मीडिया और साथ ही अकादमिक संस्था ।

एम.फिल मनोचिकित्सा और नैदानिक चिंतन

सितम्बर, 2011 से एस.एच.एस मनोचिकित्सा और नैदानिक चिंतन में एकीकृत एम.फिल् और पीएच.डी कार्यक्रम प्रदान कर रहा है। यह कार्यक्रम विभिन्न मनोचिकित्सकीय परिप्रेक्ष्यों की समृद्धि और अनेकता को स्वीकार करता है और इनका आदर करता है। जबकि यह मनोगतिकीय परम्पराओं में निहित रहता है। कार्यक्रम के प्रथम तीन वर्ष एम. फिल स्तर पर कठिन नैदानिक प्रशिक्षण के लिए समर्पित है। अतिरिक्त दो वर्षों हेतु निदानोन्मुख शोध में अपने आप को तल्लीन करने वाले योग्य अभ्यर्थियों के लिए पीएच.डी में कुछ सीटें आरक्षित रहेंगी। तीन वर्ष की अवधि के एम.फिल का मुख्य उद्देश्य भावी मनो–नैदानिकों का मानवीय दशाओं की विभिन्न सीमाओं में कार्य करना है तथा कई तरह से भावनात्मक उत्पीड़न में अपनी अनुक्रिया देना है मानसिक स्वास्थ्य नैदानिकों के प्रशिक्षण को गंभीर चल रही और सख्त परंपराओं पर विचार करते हुए इस कार्यक्रम का लक्ष्य ऐसे व्यावसायिकों को तैयार करना है जो संवेदनशील और सक्षम, खुले मस्तिष्क वाले, नम्य जो परामर्श पक्ष में उभरने वाली संस्कृति, इतिहास और राजनीति को समझते हों।

एहसास, मनोचिकित्सा और परामर्शी निदान केंद्र

एहसास एस.एच.एस की नई पहल है जो सामाजिक रूप से संवेदनशील मानसिक स्वास्थ्य विशेषज्ञों के प्रशिक्षण के लिए वचनबद्ध है । चिकित्सा और परामर्शी निदान केंद्र एक विशिष्ट स्थान बन जाता है। जहां व्यक्ति को स्वस्थ बनाने के लिए व्यक्ति उससे संबंध बनाना शुरू करता है। मनोविश्लेषक मानव होने के नाते रोग का पता लगाता है और उपचार हेतु उसके साथ कार्य करना शुरू करता है। दुखद अनुभवों में मस्तिष्क सोचने, अनुभव करने की अपनी शक्ति खो देता है और उसका मन भी विक्षिप्त भावनाओं से अलग रहने की कोशिश करता है। यह केन्द्र चिकित्सा, मौन और व्यक्त दुख के साथ संबंध बनाने में सक्षम बनाता है। निदान केंद्र में हम मुफ्त परामर्श तथा मनोचिकित्सा प्रारंभ करते हैं ताकि लोगों की कई सामाजिक– आर्थिक वास्तविकताओं को पूरा किया जा सके। निदान केंद्र के अंतर्गत वयस्क, शिशु और पारिवारिक निदान केंद्र सम्मिलित हैं और यह निदान परीक्षण प्रदान करते हैं। यहाँ एक घरेलू मनोचिकित्सक के साथ एक परामर्श सेवा भी उपलब्ध है।

ललित अध्ययन शिक्षालय

ललित अध्ययन शिक्षालय में सभी परंपरागत सामाजिक विज्ञान के विषय शामिल हैं। इसके अलावा इनमें वे विषय भी शामिल हैं। जिन्हें कला अथवा मानविकी संकाय के अंतर्गत परंपरागत तौर पर शामिल किया जाता रहा है। इसमें अर्थशास्त्र, इतिहास, अँग्रेजी, हिंदी और गणित शामिल हैं। शैक्षिक वर्ष 2011–12 के दौरान अध्ययन शिक्षालय ने अर्थशास्त्र, इतिहास, अँग्रेजी और सामाजिक विज्ञान पर आधारित चार विषयों में स्नातकोत्तर कार्यक्रम शुरु किये। प्रत्येक कार्यक्रम में 64 क्रेडिट होंगे जिन्हें 4 समेस्टर में पूरा किया जायेगा। इन कार्यक्रमों में दाखिला प्रवेश परीक्षा और साक्षात्कार के बाद दिया जायेगा। (केवल अंग्रेजी और अर्थशास्त्र में)। प्रत्येक कार्यक्रम हेतु सीटों की कुल संख्या लगभग 42 है।

एम. ए. अर्थशास्त्र

अर्थशास्त्र में स्नातकोत्तर उपाधि को भारत जैसे विकासशील देशों के समक्ष आने वाली चुनौतियों सहित समसामयिक आर्थिक मामलों के बारे में समझने और सोचने की क्षमता प्रदान करने पर विशेष जोर दिया गया है। इस कार्यक्रम की अवधारणा छात्रों को आर्थिक विश्लेषण में कठिन और गहन उन्नत प्रशिक्षण देने के उद्देश्य से तैयार की गयी है। यह

कार्यक्रम सम्यक प्रशिक्षण प्रदान करने के लिए सृजनात्मक शिक्षा शास्त्रीय दृष्टिकोणों के अंतर्गत विभिन्न सैद्धान्तिक परिप्रेक्ष्यों और परम्पराओं की ओर ध्यान आकर्षित करता है। जो छात्र को विभिन्न उद्देश्यों को प्राप्त करने में सक्षम बनाएगा। इसमें शामिल हैं: अर्थव्यवस्था के संबंध में सामाजिक–राजनीतिक और ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य का विकास करना; ऐसी मात्रात्मक तकनीकों में निपुण होना जिन्हें आर्थिक विश्लेषण में व्यापक रूप से तैयार किया गया है; वैश्विक और राष्ट्रीय स्तर पर समसामयिक आर्थिक मामलों का विश्लेषण करने की समझ और अधिगम; आर्थिक विचारों को समझना और समझाने की दक्षता को हासिल करना। मुख्य पेपर में समष्टि अर्थशास्त्र, व्यष्टि अर्थशास्त्र, व्यापार और पूंजी, पूंजीवाद और उपनिवेशवाद, भारतीय अर्थव्यवस्था के मामलों का अध्ययन तथा अनुसंधान प्रणालियां शामिल हैं।

एम. ए. अंग्रेजी

अंग्रेजी में स्नातकोत्तर कार्यक्रम ब्रिटिश साहित्य और अंग्रेजी में अन्य साहित्यों के बीच के सोपनीकरण, जिसमें अनुवादित साहित्य भी शामिल है, को खंडित करने का प्रस्ताव करता है। ऐसी भाषाओं और क्षेत्रों के साहित्य के महत्व को केंद्र में लाना, जिनके विषय में लोगों को कम जानकरी प्राप्त है। सामाजिक और साहित्यिक हाशिए को ध्यान में रखते हुए यह कार्यक्रम के समग्र दृष्टिकोण, दर्शन और विषय वस्तु का लगातार निर्देशन करेगा। आशा की जाती है कि कार्यक्रम का नीतिगत सम्बन्ध व्यक्तियों और समुदायों के जीवन और संघर्षो को शिक्षा के साथ जोड़ने का रहेगा जिससे छात्र साहित्य की एक समग्र समझ बनाने में सक्षम होंगे। यह उनमें गहन आत्मिक, सृजनात्मक और सामाजिक संवेदनशीलता विकसित करने में भी मदद करेगा । आगे यह भी परिकल्पित है कि इस कार्यक्रम के जरिए छात्र संस्कृति समाज और राज्य की व्यापक राजनीति के प्रति आलोचनात्मक संवेदनशीलता का विकास करेंगे ताकि वे राजनीतिक और सांस्कृतिक नेतृत्व के सिद्धांतों के अंतर्गत सक्रियता और कलात्मकता से हस्तक्षेप कर सकें। यह कार्यक्रम एक ओर विभिन्न साहित्यों, सिद्धांतों और पद्धतियों के बीच और दूसरी ओर संगीत, नृत्य, रंगमंच, सिनेमा, साहित्य और दृश्य कलाओं के बीच बेहतर समन्वय को सरल बनाने के लिए अन्तर्विषयक सिद्धांतों का समेकन करता है। छात्रों को व्यापक अन्तर्विषयक पाठ्यक्रम प्रदान किया जाएगा। कुछ ऐच्छिक द्विभाषीय और बहुभाषी पाठ्यक्रम भी प्रदान किये जाएंगे, जिन्हें ए.यू.डी के अंग्रेजी और हिन्दी शिक्षकों द्वारा संयुक्त रूप से पढ़ाया जाएगा ।

एम. ए इतिहास

इतिहास में स्नातकोत्तर कार्यक्रम के दो उद्देश्य हैंः (1) इसमें ऐतिहासिक घटनाओं और प्रक्रियाओं का ज्ञान देने का प्रस्ताव है। (2) यह ऐतिहासिक विश्लेषण के संचरण का प्रयास करता है और ऐतिहासिक कल्पना को बढ़ावा देता है। छात्रों से यह आशा की जाती है कि वे ऐतिहासिक आंकड़ों के आधार पर तथा तार्किक प्रक्रियाओं के जरिए स्वतंत्र रूप से विचार करने और निर्णय लेने में सक्षमता प्राप्त करने के लिए इतिहासकारों की कला सीखें। यह कार्यक्रम छात्रों को अंतःविषयक ढंग से ऐतिहासिक मामलों के बारे में सोचने तथा समसामयिक सामाजिक प्रश्नों के बारे में आलोचनात्मक चिंतन को बढ़ावा देगा।

एम. ए. समाजशास्त्र

समाजशास्त्र में स्नातकोत्तर कार्यक्रम के दो उद्देश्य हैं– पहला, यह अनुसंधान प्रणाली और अनुप्रयोग, लेखन और विश्लेषण में ठोस आधार तैयार करने का प्रयास करता है जो विभिन्न क्षेत्रों जैसेः विकासात्मक क्षेत्रों, निगमों, राज्य और मीडिया में छात्रों की उच्च दक्षता और प्रधान पदों पर कार्य करना सुनिश्चित करेगा; दूसरा, यह आलोचनात्मक चिंतन की संस्कृति तैयार करना चाहता है जो उदार शिक्षा के संर्वधन के लिए वचनबद्ध एवं वैश्वीकृत विश्व में लोकतांत्रिक और समावेशी समाज में सततता बनाए रखे। कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य अंतर–अनुशासनात्मक, अंतः क्षेत्रीय ज्ञान और अनुभव बांटना होगा साथ ही विश्लेषणात्मक और लेखन दक्षता का विकास करना होगा।

एस.एल.एस के सभी स्नातकोत्तर कार्यक्रमों में मूल्यांकन की ऐसी प्रणालियाँ हैं जो सतत् हैं जिसमें विविध मूल्यांकन प्रविधियां शामिल हैं। इसमें निबंध लेखन, ट्यूटोरियल, लिखित परीक्षा, मौखिक प्रस्तुतीकरण, सामूहिक चर्चा और परियोजना संबंधी कार्य शामिल हैं। कोई भी एक एसाइनमेंट पूरे एसाइनमेंट के 40 प्रतिशत से अधिक नहीं गिना जाएगा। लगातार सीखना मूल्यांकन प्रणाली का एक अभिन्न अंग है। ऐसी आशा की जाती है कि मूल्यांकन और अधिगम एक साथ चलें तथा एक–दूसरे के पूरक बनें। यह प्रणाली सुनिश्चित करती है कि छात्र अपनी अधिगम क्षमता के वृद्धि की निगरानी में समर्थ हों।

एस.एल.एस के सभी क्रियाकलाप कुछ दीर्घालिक उद्देश्यों को प्राप्त करना चाहते हैंः–

- युवा सामाजिक वैज्ञानिकों की नई पीढ़ी तैयार करना जो संज्ञानात्मक तथा प्रणालीगत दोनों ही रूपों से प्रशिक्षित तथा सामाजिक रूप से संवेदनशील है। भारत पिछले दो या तीन दशकों से अप्रत्याशित रूप से सामाजिक संक्रमण के दौर से गुजर रहा है। भारतीय अनुभव को संहिताबद्ध करने और इसकी पेचीदगियों को दूर करने की गंभीर ज़रूरत है।
- यह शिक्षालय अंतर–अनुशासनात्मक दृष्टिकोण का विकास करने तथा उसे बढ़ावा देने का प्रयास करता है फिर भी इसका मूल विशिष्ट विषय में ही होगा। यह शिक्षालय सामाजिक विज्ञानों के एक विशेष पाठ्यक्रम और दृष्टिकोण को बढ़ावा देगा जिसमें विशिष्ट विषय वह स्तम्भ होंगे जो अंतर–अनुशासनात्मकता की बुलंद इमारत के निर्माण में होंगे। अर्थशास्त्र, अंग्रेजी, हिंदी, इतिहास और सामाजिक विज्ञान गणित के साथ–साथ तत्काल दृष्टिकोण के भाग होंगे। अंततः यह शिक्षालय दर्शनशास्त्र राजनीति शास्त्र, पंजाबी और उर्दू में कार्यक्रम शुरू करेगा।
- एस.एल.एस का उद्देश्य सामाजिक विज्ञानों को हाथी के दिखावटी दांत की तरह बौद्धिक उत्कृष्टता से बाहर लाना और इसे सामाजिक रूप से संगत और जिम्मेदार बनाना है । हमारे सामाजिक विज्ञानों को बौद्धिक स्वतंत्रता की मुख्य मान्यताओं तथा सामाजिक जिम्मेवारी दोनों को ही साथ वहन करना होता है। विश्वविद्यालय , को सिविल सोसाइटी के साथ अंतःक्रिया बनाए रखने का अधिदेश प्राप्त है। यह शिक्षालय अपने आप को इस प्रयास में सक्रिय और मुख्य सहयोगी के रूप में मानता है।

स्नातक अध्ययन शिक्षालय (एस.यू.एस)

स्नातक कार्यक्रम

स्नातक अध्ययन शिक्षालय नें अकादमिक वर्ष 2011–12 में निम्नलिखित कार्यक्रम शुरू किए।

कार्यक्रम	अवधि	क्रेडिट
बी.ए. सम्मान अर्थशास्त्र (मुख्य विषय)	तीन वर्ष (छः सत्र)	96
बी.ए. सम्मान अंग्रेजी (मुख्य विषय)	तीन वर्ष (छः सत्र)	96
बी.ए. सम्मान इतिहास (मुख्य विषय)	तीन वर्ष (छः सत्र)	96
बी.ए. सम्मान, गणित (मुख्य विषय)	तीन वर्ष (छः सत्र)	96
बी.ए.सम्मान, मनोविज्ञान (मुख्य विषय)	तीन वर्ष (छः सत्र)	96
बी.ए.सम्मान, समाजशास्त्र (मुख्य विषय)	तीन वर्ष (छः सत्र)	96
बी.ए.सम्मान, सामाजिक विज्ञान और मानविकी (मुख्य विषय)	तीन वर्ष (छः सत्र)	96
बी.ए.सम्मान, दो क्षेत्रों में एक मुख्य विषय के साथ	चार वर्ष (आठ सत्र)	128

ए.यू.डी में बी.ए सम्मान की अद्वितीय विशेषताएंः

- 3 वर्ष में एक मुख्य विषय के साथ या 4 वर्ष में दो मुख्य विषयों के साथ सम्मान उपाधि का विकल्प।
- अध्ययन के एक वर्ष के बाद मुख्य अनुशासन (अनुशासनों) को चुनने की सुविधा।
- मुख्य अनुशासन के साथ–साथ कई अनुशासनों में पाठ्यक्रमों की उपलब्धता ।
- बहुत से जीविकोन्मुख विशेष रूचि के पाठ्यक्रम।
- अंग्रेजी भाषा पढ़ने में समर्थ बनाने वाले विशेष पाठ्यक्रम।
- छात्रों को वैयक्तिक सलाह।
- लगातार सत्र आधारित मूल्यांकन।
- दूसरे वर्ष में अन्य संस्थानों से पार्श्व प्रवेश।

स्नातकों हेतु सम्मान उपाधि कार्यक्रम

स्नातक अध्ययन कार्यक्रम ए.यू.डी का मुख्य कार्यक्रम है। यह कार्यक्रम ललित कला में शिक्षा का प्रस्ताव देता है। जिसका उद्देश्य ज्ञान के विविध दृष्टिकोणों से छात्रों को अवगत कराना है। कार्यक्रम का आशय आलोचनात्मक तथा सृजनात्मक ढंग से सोचने, विश्लेषण करने, तर्क करने तथा साक्ष्य आधारित निष्कर्ष निकालने के लिए छात्रों को पढ़ाना है। वे भाषण और लेखन में अपने आप को स्पष्ट रूप से तथा दृढ़ रूप से अभिव्यक्त करना भी सीखेंगे।

स्नातक कार्यक्रम का उद्देश्य पढ़ाए जाने वाले विषयों के विस्तार और गहराई के बीच अच्छा संतुलन प्राप्त करना है। प्रारम्भिक सत्रों में अध्ययन के विस्तार पर जोर दिया जाता है। छात्र मानविकी, सामाजिक विज्ञानों और गणितीय विज्ञानों के विभिन्न क्षेत्रों से सम्बंधित पाठ्यक्रमों का अध्ययन करेंगे। यह अधिगम के इन क्षेत्रों में एक सामान्य समझ और अभिमूल्यन को प्रस्तुत करेगा। छात्रों से अपेक्षा की जाएगी कि वे विभिन्न अकादमिक अनुशासनों से संबंधित गहन अध्ययन करें। छात्रों द्वारा चुना गया मुख्य विषय उनके पाठ्यक्रम विकल्प को निर्धारित करेगा, साथ ही छात्रों से यह भी आशा की जाएगी कि वे अपने मुख्य अनुशासन के अलावा विषयों के संयोजन से पाठ्यक्रम का चुनाव करें।

इसके अलावा अध्ययन के कार्यक्रम में कुछ आधारी दक्षताओं की प्राप्ति को बढ़ावा देने के लिए अभिकल्पित पाठ्यक्रम शामिल होंगे, ताकि छात्र विविध प्रकार की सीख लें और ये उनकी जीविका/व्यावसायिक स्थितियों में मदद करें।

कार्यक्रम के प्रकार

विश्वविद्यालय ने तीन प्रकार के बी.ए (सम्मान) कार्यक्रमों में उपाधियाँ प्रदान कीः

(1) बी.ए. सम्मान,किसी एक अनुशासन में एक मुख्य विषय के साथ बी.ए. सम्मान

(2) बी.ए. सम्मान. सामाजिक विज्ञान और मानविकी में तीन अनुशासनों में एक मुख्य विषय के साथ

(3) बी.ए. सम्मान, दो क्षेत्रों में दो मुख्य विषयों के साथ।

स्नातक कार्यक्रम की संरचना

ए.यू.डी में उपलब्ध कार्यक्रम की अवधि एवं इस शाखा के विकल्प और अध्ययन के विभिन्न पाठ्यक्रम नीचे दिए गए हैं –

अवधि और क्रेडिट

1. बी.ए. सम्मान कार्यक्रमों में तीन वर्षीय उपाधि हेतु 96 क्रेडिट और चार वर्षीय उपाधि कार्यक्रम हेतु 128 क्रेडिट शामिल होंगे, प्रति सत्र 16 क्रेडिट का औसत क्रेडिट भार होगा।
2. बी.ए सम्मान कार्यक्रम में एक सत्र प्रणाली होगी। प्रत्येक सत्र सामान्यतया अकादमिक कार्य के 16 सप्ताहों का होगा।
3. 16 सप्ताहों में पढ़ाये जाने वाले पाठ्यक्रम में प्रत्येक क्रेडिट एक घंटे का अध्यापन अथवा दो घंटे की संगोष्ठी /समूह कार्य/प्रयोगशाला कार्य/ प्रति सप्ताह होगा। अतः चार क्रेडिट के पाठ्यक्रम हेतु चार घंटे का नियमित अध्यापन प्रति सप्ताह अथवा आठ घंटे की अन्य कार्यक्रम गतिविधियाँ शामिल होंगी। एक छात्र के लिए एक सत्र में 16 क्रेडिट का पाठ्यक्रम होगा।

बी.ए (सम्मान) की शाखाएं

सत्र 2011–12 में निम्नलिखित विकल्प प्रदान किए गए:

अर्थशास्त्र (मुख्य विषय) में बी.ए सम्मान

अर्थशास्त्र (मुख्य विषय) में बी.ए सम्मान अर्थव्यवस्था के विश्लेषण में छात्रों को मूल किन्तु कठिन प्रशिक्षण प्रदान करने के लिए अभिकल्पित किया गया है। साथ ही भारत जैसी विकासशील अर्थव्यवस्था के समक्ष आने वाले विशिष्ट मामलों को समझने के लिए उन्हें साधन सम्पन्न बनाने पर विशेष जोर रहेगा।

अर्थशास्त्र में बी.ए सम्मान में प्रवेश हेतु आवेदन करने के लिए छात्रों को 10+2 स्तर पर एक विषय के रूप में गणित का अध्ययन किया होना आवश्यक है। साथ में बारहवीं बोर्ड परीक्षा में गणित में प्राप्त अंक को बारहवीं बोर्ड परीक्षा के सर्वोत्तम ''चार विषयों'' के कुल अंकों की गणना में शामिल किया जाना आवश्यक है।

बी.ए सम्मान में डिग्री प्राप्त करने के लिए अपेक्षित 96 क्रेडिटों में से छात्रों से अपेक्षा की जाएगी कि वे अर्थशास्त्र (मुख्य विषय) के लिए विशिष्ट अर्थशास्त्र पाठ्यक्रम (12 पाठ्यक्रमों के समतुल्य) से न्यूनतम 48 क्रेडिट प्राप्त करें। इन न्यूनतम 48 क्रेडिटों का निर्माण करने वाले अधिकतर पाठ्यक्रम अनिवार्य (मुख्य पाठ्यक्रम) होंगे। अर्थशास्त्र के पाठ्यक्रमों से अतिरिक्त 16 क्रेडिट (चार पाठ्यक्रम के समतुल्य) प्राप्त किए जा सकते हैं जो वैकल्पिक होंगे। ए.यू.डी में बी.ए सम्मान पाठ्यक्रम की संरचना छात्रों द्वारा अर्थशास्त्र को

मुख्य विषय लेते हुए भी सामाजिक विज्ञानों, मानविकी तथा गणितीय विज्ञानों के अन्य विषयों में कुछ पेपर लेने की संभावना भी प्रदान करती है। इसके अलावा छात्र एक अतिरिक्त वर्ष ले सकते हैं तथा दोहरी सम्मान उपाधि प्राप्त कर सकते हैं। उदाहरण के लिए अर्थशास्त्र और गणित में अथवा अर्थशास्त्र और इतिहास में।

अर्थशास्त्र (मुख्य विषय) के पाठ्यक्रम की विषयवस्तु आर्थिक सिद्धांत, आर्थिक इतिहास और मात्रात्मक तकनीकी का उपयुक्त मिश्रण है। इनके जरिए छात्र विषय के अंतर्गत विभिन्न परिप्रेक्ष्यों से अवगत होंगे तथा अर्थशास्त्र के सामाजिक और राजनीतिक आयामों से भी परिचित होंगे।

अर्थशास्त्र पेपर में छात्रों का मूल्यांकन परीक्षाओं, एसाइनमेंट और प्रस्तुतीकरण, जो पूरे सत्र चलेगा, पर आधारित होगा। अध्यापन प्रणालियों में व्याख्यान, अंतः क्रियात्मक सत्र, क्षेत्रीय अध्ययन आदि शामिल होंगे। यहाँ मुख्य जोर छात्रों को रटाकर अथवा प्राप्त ज्ञान के गैर–आलोचनात्मक तरीकों से शिक्षा देने के बजाय उनके विश्लेषणात्मक गुणों के विकास को बढ़ावा देने पर होगा। मूल्यांकन तदनुरूपी दृष्टिकोण का अनुसरण करेगा।

अर्थशास्त्र (मुख्य विषय) के साथ स्नातक करने वाले छात्र कारपोरेट क्षेत्र, सरकारी और गैर सरकारी क्षेत्रों तथा पत्रकारिता में कई प्रकार से अपनी जीविका अपना सकते हैं। छात्र इस अध्ययन को आगे बढ़ाने के भी पात्र होंगे, जिसमें अर्थशास्त्र या विकास अध्ययनों में स्नातकोत्तर जैसे ए.यू.डी के कार्यक्रम शामिल हैं ।

अंग्रेजी (मुख्य विषय) में बी.ए सम्मान

अंग्रेजी (मुख्य विषय) में बी.ए सम्मान कार्यक्रम साहित्य के अध्ययन के सभी पहलुओं से छात्रों को अवगत कराएगा। अंग्रेजी साहित्य के साथ–साथ पाठ्यक्रम में पूरे विश्व के महत्वपूर्ण साहित्यों तथा भारतीय साहित्य के अंग्रेजी में अनुवाद का महत्वपूर्ण घटक होगा। अंग्रेजी (मुख्य विषय) में बी.ए सम्मान उपाधि प्राप्त करने के लिए अपेक्षित 96 क्रेडिट में से छात्र को अंग्रेजी में न्यूनतम 48 क्रेडिट (12 पाठ्यक्रमों के समतुल्य) प्राप्त करना है। इनमें अनिवार्य के साथ–साथ वैकल्पिक पाठ्यक्रम शामिल होंगे।

मुख्य पाठ्यक्रम में अंग्रेजी में साहित्य की मुख्य विधाओं का विस्तृत अध्ययन शामिल हो सकता है जैसे महाकाव्य, नाटक, कविता, उपन्यास, नोवेला, लघु कहानियां, लोक

कहानियां, गैर कथा साहित्य, संगीत, गीत, और फिल्म। यह कार्यक्रम छात्रों को साहित्यिक सिद्धांत और अनुप्रयुक्त समालोचना के अध्ययन से भी अवगत कराएंगे। वैकल्पिक पाठ्यक्रमों को इस प्रकार अभिकल्पित किया गया है कि वे छात्रों को हमारे समाज में विद्यमान विविध भाषा संबंधी और साहित्यिक अभिव्यक्तियों से अवगत कराएंगे। संस्कृति अध्ययनों, फिल्म की समझ, लोक कहानी, बाल साहित्य के क्षेत्रों में अन्य कई वैकल्पिक पाठ्यक्रमों के साथ–साथ यह कार्यक्रम अन्य ऐसे कई पाठ्यक्रम प्रदान करना चाहता है जो द्विभाषीय अथवा बहुभाषीय होंगे ।

प्रत्येक पाठ्यक्रम में अध्यापन प्रणाली में व्याख्यान और कक्षा में चर्चा, प्रस्तुतीकरण छात्रों द्वारा समूह में चर्चा, फिल्म स्क्रीनिंग और नियमित कार्यशालाएं तथा संगोष्ठी शामिल होंगे। एसाइनमेंट, परीक्षा, कक्षा में प्रस्तुतीकरण और आवधिक परीक्षा वाली सतत् मूल्यांकन प्रणाली का अनुसरण किया जाएगा ।

चूंकि यह कार्यक्रम अंतः विषयक है। अतः यह आशा की जाती है कि अंग्रेजी (मुख्य विषय) लेने वाले छात्र न केवल साहित्य का अपितु जेंडर अध्ययन, इतिहास, मनोविज्ञान और समाजशास्त्र जैसे अन्य संबंधित विषयों का समग्र परिप्रेक्ष्य विकसित करेगें। छात्र ए.यू.डी में प्रदान किए जा रहे अंग्रेजी में दोहरे मेजर अथवा अन्य किसी दूसरे विषय का विकल्प चुन सकते हैं।

इस कार्यक्रम की अद्वितीय विशेषता इसके इंटर्नशिप घटक में अंतर्निहित है। जो छात्रों को विज्ञापन, संपादन, पत्रकारिता, अध्यापन, तकनीकी लेखन, सृजनात्मक लेखन, रंगमंच, कला की समझ और फोटोग्राफी जैसे क्षेत्रों में दक्षताओं के विकास का अवसर देगा। इन विविध पाठ्यक्रमों में छात्रों द्वारा प्राप्त दक्षताओं का इस्तेमाल वे अपनी पसंद की आजीविकाओं में कर सकते हैं। छात्र ए.यू.डी में अंग्रेजी में स्नातकोतर डिग्री प्राप्त करने के लिए भी इसे चुन सकते हैं । अभियोजित छात्रवृति तथा हाशिये पर पड़े हुए लोगों के साथ संबंध के ए.यू.डी के बृहत उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए इस कार्यक्रम का लक्ष्य आजकल के बृहत मामलों और समाज के साथ छात्रों की अंतः क्रिया को गहरा बनाना है।

इतिहास (मुख्य विषय) में बी.ए सम्मान

इतिहास (मुख्य विषय) में बी.ए सम्मान कार्यक्रम को इस प्रकार अभिकल्पति किया गया है कि यह विस्तृत वैश्विक प्रवृतियों के सन्दर्भ में भारत के विविध अतीत के प्रति छात्रों में रूचि

प्रेरित करे । यह छात्रों को अतीत तक पहुंचने के विभिन्न तरीकों से अवगत कराता है। यह इतिहास के अध्ययन को उत्सुकतापूर्ण और लाभप्रद बनाता है। नवीन पाठ्यक्रम जो विषयपरक और जो काल क्रमवार हैं, के संयोजन के जरिये छात्रों को ऐतिहासिक स्त्रोतों और साक्ष्य को समझने में सक्षम बनाएगा, उनका विश्लेषण करेगा, नए प्रश्न पूछेगा और रूढ़ियों व व्याख्याओं पर बहस करेगा। पाठ्यक्रम की संरचना विभिन्न विकल्पों के साथ अंतः विषयक है जो छात्रों को ज्ञान के नए पक्षों का पता लगाने में छात्रों को सक्षम बनाएगा। साम्यता, हाशियाकरण, जेंडर, पर्यावरण, और सांस्कृतिक विविधता के पहलुओं पर विशेष ध्यान दिया जाता है। संक्षेप में छात्रों से आशा की जाती है कि वे इतिहासविदों के समान प्रशिक्षित हों, सोचें और व्यवहार करें।

इतिहास (मुख्य विषय) में बी.ए सम्मान उपाधि प्राप्त करने के लिए अपेक्षित 96 क्रेडिट में से छात्र को इतिहास में न्यूनतम 48 क्रेडिट (12 पाठ्यक्रमों) के समतुल्य प्राप्त करना है। इसमें अनिवार्य के साथ–साथ वैकल्पिक पाठ्यक्रम शामिल होंगे।

ऐतिहासिक प्रणाली तथा इतिहास लेखन के लिए समर्पित अनिवार्य पाठ्यक्रम एक विषय के रूप में इतिहास के विकास तथा इतिहास लेखन की विभिन्न परम्पराओं का पता लगाता है। यह पाठ्यक्रम अतीत की संरचना के विभिन्न उपायों के संबंध में इतिहास की जांच करता है – उदाहरण के लिए महाकाव्य, वृत्तांत, मिथक और कथाएं । पाठ्यक्रम की दूसरी श्रेणी प्राचीनतम समय से लेकर समसामयिक अवधि तक के भारत से संबंधित है। भारतीय इतिहास को कई पाठ्यक्रमों के संयोजन में पढ़ाया जाता है, जिसमें विश्व का इतिहास भी शामिल है।

शहरों के इतिहास, कला, वास्तुकला, भौतिक संस्कृति, साम्राज्यवाद और उपनिवेशवाद, समाजवाद, श्रम, प्रव्रजन, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी आदि जैसे विशिष्ट विषयों पर भी पाठ्यक्रम प्रदान किए जाते हैं। विभिन्न समाजों, साम्राज्यों और राष्ट्रों जैसे चीन, जापान और अफ्रीका पर भी तुलनात्मक पाठ्यक्रम प्रदान किये जाते हैं।

इसके अलावा दिल्ली के इतिहास में एक अलग से पाठ्यक्रम प्रदान किया जाता है। यह पाठ्यक्रम पुरातात्विक, साम्राज्य और वास्तुकला, साहित्यिक और अन्य आयामों के जरिए दिल्ली के अतीत और और उससे जुडी चीज़ों का पता लगाता है। राजधानी शहर के गठन को मिथक और स्मरण के रूप में देखा गया है। जहाँ दिल्ली में समाहित पहले के कई शहरों के सांस्कृतिक अवशेष और लगातार हो रहे प्रवास, विस्थापन और हिंसा के मद्देनज़र

दिल्ली के एक शक्ति एवं प्राधिकार के रूप में उभरने को एक प्रिज्मीय नज़रिए से देखने का प्रयास किया गया है।

सभी पाठ्यक्रम पारस्परिक विचार–विमर्श और सहभागिता से पढ़ाए जाते हैं ताकि आलोचनात्मक विवेचन और छात्रों में बौद्धिक तीव्रता को बढ़ावा दिया जा सके। मूल्यांकन परीक्षाओं, लिखित एसाइनमेंट और प्रस्तुतीकरण पर आधारित होगा । कार्य का सावधानीपूर्वक मूल्यांकन अधिगम प्रक्रिया का भाग हो सकता है। छात्रों को क्षेत्रीय दौरे में भाग लेने के लिए बढ़ावा दिया गया है। वे सिनेमा और दृश्य संस्कृति का पता लगाएंगे और ऐसी परियोजनाएं बनाएंगे जो आलोचनात्मक चिंतन में वृद्धि करे तथा विश्लेषात्मक दक्षताओं का विकास कर सके । शिक्षण और मूल्यांकन सतत् होगा तथा वे एक–दूसरे के पूरक होंगे। इतिहास (मुख्य विषय) में बी.ए सम्मान करने वाले प्रत्येक छात्र को संकाय से एक सलाहकार दिया जाएगा, वे छात्रों को प्रत्येक चरण पर उनकी क्षमता बढ़ाने और खोज करने में मदद करेगा ।

छात्रों के साथ खुले व्यवहार के लिए इतिहास (मुख्य विषय) को विशिष्ट पाठ्यक्रमों से भी समृद्ध किया जा सकता है जैसे जेंडर, पर्यावरणीय मामले, शहरीकरण, साहित्यिक संस्कृति आदि। इतिहास (मुख्य विषय) सम्मान को अध्ययन के एक अतिरिक्त वर्ष में दोहरे मेजर हेतु अन्य विषय में सम्मान मेजर के साथ जोड़ा जा सकता है।

यह कार्यक्रम छात्रों को इतिहास में उच्च अध्ययन करने अथवा प्रशासन, विधि, मीडिया, विरासत प्रबंधन, संरक्षण, सामाजिक/विकास क्षेत्रों जैसे – विविध क्षेत्रों में आजीविका का चयन करने के लिए तैयार करता है। एम.ए इतिहास और ऐतिहासिक अध्ययन में आगे के अवसर तथा साथ ही संबंधित विषयों में अन्य स्नातकोत्तर कार्यक्रम ए.यू.डी में ही उपलब्ध हैं।

गणित (मुख्य विषय) में बी.ए. सम्मान

स्नातक स्तर पर गणित में सम्मान उपाधि दक्षताओं, ज्ञान आधार और आजीविका विकल्पों के संबंध में सर्वाधिक प्रमुख उपाधियों में से एक है। गणित में पाठ्यक्रमों को इस प्रकार अभिकल्पित किया गया है कि वे छात्रों को तार्किक समझ के आधार पर समस्याओं के विश्लेषण की अनुमति देता है। गणित के लेखन और प्रस्तुतीकरण के लिए आवश्यक मेहनत, एकाग्रता की दक्षताओं, कठिन कार्य और अनुशासन की प्रेरणा देता है। प्रश्न, तर्क,

विश्लेषण,अनुमान और संप्रेषण में सक्षम होना, छात्रों हेतु अनिवार्य योग्यता है। गणित में पाठ्यक्रम को छात्रों में इनके विकास के लिए अच्छी तरह से तैयार किया गया है।

गणित में बी.ए सम्मान में प्रवेश हेतु आवेदन का पात्र होने के लिए छात्र को 10+2 स्तर पर गणित का अध्ययन करना अनिवार्य है। छात्रों को गणित में न्यूनतम 60 प्रतशित अंक प्राप्त करना आवश्यक है। साथ ही 12वीं बोर्ड परीक्षा में प्राप्त अंकों को 12वीं बोर्ड परीक्षा के ''सर्वोत्तम चार विषयों'' के कुल अंकों की गणना में शामिल होना चाहिए ।

ए.यू.डी में बी.ए सम्मान उपाधि प्राप्त करने के लिए अपेक्षित 96 क्रेडिट में से छात्र को गणित (मुख्य विषय) के लिए इसमें न्यूनतम 48 क्रेडिट (12 पाठ्यक्रमों के समतुल्य) प्राप्त करना होगा। छात्रों के लिए आवश्यक न्यूनतम 12 के अलावा गणित में अधिक पाठ्यक्रम लेना तथा गणित में अतिरिक्त 16 क्रेडिट (चार पाठ्यक्रमों के समतुल्य) प्राप्त करना भी संभव है।

अध्यापन की प्रणाली पारस्परिक विचार–विमर्श और छात्र केंद्रित होगी, जहां भी संभव हो अधिगम प्रक्रिया को गणित के प्रत्यक्षिकरण के जरिए उन्नत बनाया जा सकता है। अभ्यासों के जरिए संगणनात्मक (कम्प्यूटेशनल) तथा प्रोग्रामिंग दक्षताओं को निर्मित किया जाएगा। चलचित्रों, वार्ताओं, प्रस्तुतीकरण और पुस्तकों के जरिए छात्र गणित के इतिहास तथा समाज और प्रकृति के साथ गणित की अंतः क्रिया के बारे में भी जानकारी प्राप्त कर सकेंगे। प्रत्येक छात्र को दी जाने वाली मेंटरशिप, क्षेत्रीय दौरे और ग्रीष्म कार्यक्रम गणित के बहु–आयामी दृष्टिकोण को प्रदान करने में मदद करेंगे।

मूल्यांकन विभिन्न प्रकार के अंकों के घटकों के माध्यम से होगा। ये निरंतर मूल्यांकन, मध्य–सत्र और अंतिम सत्र की परीक्षाओं, प्रयोगशाला कार्य, पुस्तक और फिल्म समीक्षाओं, परियोजनाओं और प्रस्तुतीकरण द्वारा हो सकते हैं।

ए.यू.डी में क्रेडिट आधारित सत्र प्रणाली का लचीला ढांचा आधुनिक गणित के साथ अर्थशास्त्र, अंग्रेजी,हिंदी साहित्य, मनोविज्ञान, इतिहास व समाजशास्त्र जैसे विभिन्न विषयों में पाठ्यक्रमों को व्यापक आधार के साथ जोड़कर एक सही अवसर की दृढ़ नींव प्रदान करता है। यहाँ यह भी सम्भावना है कि एक अतिरिक्त वर्ष खर्च करके दोहरे सम्मान की उपाधि ली जा सकती है, उदाहरण के लिए गणित व अर्थशास्त्र में।

ए.यू.डी से गणित सम्मान के स्नातकों को गणित में एक मजबूत आधार, समाज के प्रति एक अच्छी समझ और साथ ही साथ संगणनात्मक व संचार दक्षताओं की अच्छी समझ विकसित करने का अवसर प्राप्त होगा। वे गणित या संबंधित अनुशासन में अकादमिक कैरियर (भविष्य) चुनने की स्थिति में होंगे। वे अन्य कई क्षेत्रों के साथ–साथ वित्त या प्रबंधन, बैंकिंग या बीमा, साफ्टवेयर विकास या कंसल्टेंसी (परामर्श), सरकारी, गैर–सरकारी या कॉरपोरेट क्षेत्र, मीडिया व प्रकाशन में भी कैरियर बना सकते हैं।

मनोविज्ञान (मुख्य विषय) में बी.ए सम्मान

मनोविज्ञान (मुख्य विषय) में बी.ए सम्मान के विद्यार्थियों में इस विषय की व्यापक झलक प्रदान करने के लिए अभिकल्पित किया गया है। यह विशेष अभ्यास के माध्यम से अनुभव सहित एक मजबूत खुलासा है जो मनोविज्ञान के भिन्न क्षेत्रों के पेपर का विभिन्न थ्योरी पेपर के साथ रोचक समन्वय है। समग्र रूप से इस कार्यक्रम का लक्ष्य अनुसंधान दक्षताओं में कठिन प्रशिक्षण के साथ विषय की गहरी सैद्धान्तिक व प्रायोगिक समझ प्रदान करना है।

मनोविज्ञान (मुख्य विषय) में बी.ए सम्मान उपाधि प्राप्त करने के लिए आवश्यक 96 क्रेडिट में से एक विद्यार्थी को मनोविज्ञान में कम–से–कम 48 क्रेडिट (12 पाठ्यक्रमों के समकक्ष) प्राप्त करना अनिवार्य है। एक छात्र के लिए यह भी संभव है कि वह एक अतिरिक्त 8 क्रेडिट (2 पाठ्यक्रमों के समकक्ष) प्राप्त कर सकता है। सामान्य रूप से मनोविज्ञान में 14 पाठ्यक्रम होंगे जिनमें मुख्य व वैकल्पिक पाठ्यक्रम शामिल हैं।

मुख्य पाठ्यक्रमों का लक्ष्य विद्यार्थियों को भारतीय विश्वविद्यालयों में मनोविज्ञान के मानक स्नातक पाठ्यक्रमों के समतुल्य पर्याप्त दक्षता प्रदान करना है। मनोविज्ञान पाठ्यक्रमों के द्वितीय सत्र में बोध (कॉगनिशन) शामिल है जहां विद्यार्थी मानव व्यवहार व व्यक्तित्व को समझने के बोधगम्य आयाम का मूल्यांकन करना सीखते हैं साथ ही वे व्यक्ति के साथ उसके अद्वितीय गुणों को समझते हैं।

तीसरे सत्र पाठ्यक्रमों का लक्ष्य संदर्भ (सामाजिक मनोविज्ञान) के महत्व की जांच करना है। मनोविज्ञान का इतिहास नामक पाठ्यक्रम विद्यार्थियों को मनोविज्ञान अध्ययन (आरंभ से समकालीन समय तक) के व्यवस्थित दृष्टिकोणों के विकास की संक्षिप्त यात्रा कराएगा। सांख्यिकी नामक पाठ्यक्रम में विद्यार्थी मात्रात्मक रूप से आंकड़ों का विश्लेषण करना सीखेंगे।

चौथे सत्र में मुख्य केंद्र परिप्रेक्ष्य से हटकर बच्चों (जो इस संदर्भ में अंतर्विष्ट है) पर चला जाता है। अतः 'कांन्टैक्सचूलाइजिंग चाइल्ड डेवेलपमेंट' पर एक पेपर रखा गया है। मनोविज्ञान की पद्धतियों पर एक पाठ्यक्रम भी उपलब्ध किया गया है। जहां विद्यार्थी इस विषय में परम्परागत (क्लासिक) अनुसंधान अध्ययन के माध्यम से मनोविज्ञान में अनुसंधान के लिए प्रयुक्त उपकरणों (टूल्स) को नए ढंग से प्रतिबिंबित करेंगे। इस सत्र में मनोविज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों से परीक्षणों का उपयोग करते हुए अभ्यास कार्य (प्रैक्टिकल कार्य) वाला पाठ्यक्रम भी शामिल है।

पांचवें सत्र के पाठ्यक्रम को इस प्रकार अभिकल्पित किया गया है कि छात्र व्यवहार के शारीरिक विज्ञान आधार जानने में समर्थ बन सकें। तंत्रिका मनोविज्ञान पेपर के विषय जटिल मनोवैज्ञानिक अनुभवों व मस्तिष्क व तंत्रिका–तंत्रों की प्रक्रियाओं में मानव अभिव्यक्तियों पर आधारित होंगे। अंडरस्टैंडिंग एबनोर्मलिटी से जुड़ा हुआ पाठ्यक्रम विद्यार्थियों को रोग निदान व प्रसामान्यता, मानसिक बीमारी व विपत्ति को समझने में मदद करेगा। इस सत्र में स्पेशल प्रैक्टिकम नामक पाठ्यक्रम भी होगा। अद्भुत व्यक्तिगत रूपों का अध्ययन विभिन्न समसामयिक मनोविज्ञान के मूल सिद्धांतों में से एक है। यह पाठ्यक्रम विद्यार्थियों को मनोवैज्ञानिक मापांकन, साक्षात्कार, पर्यवेक्षण व केस अध्ययन शुरू करने की प्रक्रियाएं सीखने में सहायता करेगा।

छठा सत्र विद्यार्थियों को तीन पाठ्यक्रम परामर्श(काउंसलिंग), संगठनात्मक मनोविज्ञान और भारत के लिए मनोविज्ञान में से दो पाठ्यक्रम चुनने का विकल्प प्रदान करता है। परामर्श पाठ्यक्रम परामर्श प्रक्रिया के पहलुओं को सिखाएगा जो ग्राहक के साथ अग्र संपर्क से शुरू होकर परामर्श संबंध के समाप्ति बिन्दु तक जाता है। संगठनात्मक व्यवहार पाठ्यक्रम विद्यार्थियों को यह सिखाता है कि व्यक्ति, समूह व संगठनात्मक संरचना संगठनों में व्यवहार को कैसे प्रभावित करते हैं। भारत में मनोविज्ञान नामक पेपर सार्वभौमिकता की मान्यता की आलोचनात्मक रूप से जांच करेगा और सांस्कृतिक रूप से स्थापित मनोविज्ञान की संभावना पर विचार करेगा।

ए.यू.डी में मनोविज्ञान शिक्षण की प्रमुख विशेषता अंतःक्रियात्मक प्रणाली है। जहां विद्यार्थियों को व्यक्तिगत रूप से सम्पर्कों की खोज करके विषय को समझने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। शिक्षण में फिल्मों व लोकप्रिय कथाओं का भी उपयोग होगा ताकि पाठ्यक्रम के महत्वपूर्ण परिप्रेक्ष्यों पर रोशनी डाली जा सके और उन्हें उभारा जा सके।

विद्यार्थियों के मूल्यांकन हेतु मूल्यांकन के विभिन्न रूपों को अपनाया जाएगा। प्रस्तुतीकरण, पुस्तक समीक्षा, लिखित व मौखिक परीक्षाओं के समन्वय का उपयोग किया जाएगा। असाइनमेंट, प्रयोग व विचार–विमर्श, जारी कार्य–पाठ्यक्रमों पर आधारित होगा। इनका अनुसरण मौखिक परीक्षा करेगी।

मनोविज्ञान (मुख्य विषय) के छात्रों को दूसरे अनुशासनों जैसे अंग्रेजी,हिंदी या समाजशास्त्र से पाठ्यक्रमों को लेने के लिए प्रोत्साहित किया जाएगा। यहाँ यह भी संभव कि छात्र अध्ययन का एक अतिरिक्त वर्ष देकर दोहरे सम्मान की उपाधि हासिल कर सकता है। उदाहरण के लिए मनोविज्ञान और समाजशास्त्र में दोहरा सम्मान।

मुख्य विषय के रूप में मनोविज्ञान में स्नातक स्तर पर अध्ययन करने वाले ए.यू.डी के विद्यार्थी मनोविज्ञान या जेन्डर अध्ययन या अन्य संबंधित क्षेत्रों में स्नातकोत्तर के लिए पात्र होंगे। कुछ स्नातकोत्तर कार्यक्रम पहले से ही ए.यू.डी में उपलब्ध हैं। यह पाठ्यक्रम मास मीडिया, विज्ञापन, शिक्षा, बाल विकास, परामर्श व संगठनात्मक मनोविज्ञान जैसे कुछ प्रायोगिक क्षेत्रों में अच्छी सुविधा उपलब्ध कराएंगे। यह विद्यार्थियों को विभिन्न क्षेत्रों में कार्य करने में समर्थ बनाएगा जहां उन्हें विभिन्न परिप्रेक्ष्यों में मानवों के साथ जुड़ा रहना आवश्यक होगा ।

समाजशास्त्र (मुख्य विषय) में बी.ए .सम्मान

स्नातक स्तर पर समाजशास्त्र का अध्ययन किसी छात्र के लिए सर्वाधिक आनंददायक अनुभव हो सकता है। परिवार, विवाह, शिक्षा, धर्म, जाति, अर्थव्यवस्था, राजनीति या विकास के अध्ययन का लाभ यह है कि सभी व्यक्तियों को इन संस्थानों व घटनाओं का बोध होता है। ए.यू.डी में स्नातक स्तर पर छात्रों के लिए दो प्रमुख सीख ये हैं कि समाजशास्त्र सामान्य समझ मात्र से पृथक है और यह भी कि उन्हें समाज के सामान्य रूप से स्वीकार्य बंधन पर प्रश्न करने की आवश्यकता है।

समाजशास्त्र मुख्य विषय में बी.ए. सम्मान उपाधि प्राप्त करने के लिए आवश्यक 96 क्रेडिट में से विद्यार्थी को समाजशास्त्र में कम–से–कम 48 क्रेडिट (12 पाठ्यक्रमों के समकक्ष) प्राप्त करना जरुरी है। इनमें अनिवार्य एवं वैकल्पिक पाठ्यक्रम शामिल होंगे।

शिक्षण पारस्परिक ढंग से होगा। व्याख्यान के दौरान विचार–विमर्श व प्रश्नों को प्रोत्साहन दिया जाएगा। फिल्म स्क्रीनिंग का आयोजन किया जाएगा और विद्यार्थियों से यह अपेक्षा है कि फिल्मों को समाजशास्त्र संबंधी मसलों से जोड़कर उनकी समीक्षा करें । अकादमिक, सभ्य समाज, कला और मीडिया के विशेषज्ञों को नियमित पैनल विचार–विमर्श या व्याख्यान के लिए आमंत्रित किया जाएगा। अंततः सामाजिक वास्तविकता का प्रत्यक्ष अनुभव प्रदान करने के लिए कुछ फील्ड दौरे किए जाएंगे। मूल्यांकन प्रणाली परियोजना लेखन, पोस्टर निर्माण, प्रस्तुतीकरण, मध्य–सत्र व अंतिम सत्र परीक्षा का संयोजन होगा।

समाजशास्त्र में स्नातक स्तर पर अध्ययन करते हुए विद्यार्थी अर्थशास्त्र, अंग्रेजी, हिंदी, इतिहास व मनोविज्ञान जैसे अन्य विषयों से कई पाठ्यक्रम चुनने में समर्थ होंगे। यह विद्यार्थी को स्नातक स्तर पर स्वतः ही अंतर्विषयक अध्ययन के प्रति उद्भाषित करेगा।

इसके विस्तार के रूप में जो छात्र वास्तव में समाजशास्त्र और इतिहास या समाजशास्त्र व मनोविज्ञान में दोहरा मेजर करना चाहते हैं। उनके लिए अध्ययन का चतुर्थ वर्ष होगा, लेकिन इसका लाभ यह है कि वे दो विषयों में स्नातक होंगे।

समाजशास्त्र (मुख्य विषय) में बी.ए.सम्मान करने के बाद कोई भी विद्यार्थी समाजशास्त्र और जेन्डर अध्ययन या किसी भी विश्वविद्यालय में विकास अध्ययन जैसे संबंधित क्षेत्रों में स्नातकोत्तर कार्यक्रम कर सकेंगे। ये स्नातकोत्तर कार्यक्रम ए.यू.डी में भी उपलब्ध हैं। जो छात्र उच्च शिक्षा प्राप्त नहीं करना चाहता, वह गैर–सरकारी संगठनों, मीडिया व सरकारी क्षेत्र में अपनी जीविका के अवसर प्राप्त करने में सक्षम होगा ।

समाजविज्ञान व मानविकी (मुख्य विषय) में बी.ए.सम्मान, (एस.एस.एच)

यह कार्यक्रम विद्यार्थियों को ललित कला (लिबरल आर्ट) शिक्षा के लाभ प्राप्त करवाते हुए तीन वर्षीय पाठ्यक्रम में शिक्षालय में तीन विषयों की खोज गहराई से करने की अनुमति देता है। शिक्षालय का संकाय व स्टाफ, विद्यार्थियों को शिक्षालय में प्रदान किए जाने वाले पाठ्यक्रमों में से सार्थक श्रेणी के पाठ्यक्रमों को बनाने के लिए एस.एस.एच मेजर चुनने में सहायता करेंगे।

एस.एस.एच चुनने वाले विद्यार्थियों को आधार पाठ्यक्रम और बी.ए. सम्मान उपाधि की अन्य सामान्य आवश्यकताओं को पूरा करना अनिवार्य होगा। इसके अतिरिक्त उन्हें अपनी

पसंद के तीन विषयों में से प्रत्येक में सोलह (16) या अधिक क्रेडिट भी पूरा करना अनिवार्य है जो मानविकी, समाज विज्ञान व गणितीय विज्ञान के क्षेत्र में है। एस.एस.एच विद्यार्थियों के लिए विशेष अतिरिक्त कक्षा,संगोष्ठी, कार्यशालाएं व गतिविधियाँ आयोजित करेगा।

एस.एस.एच मेजर पूरा करने वाले विद्यार्थी ए.यू.डी व अन्य संस्थानों में एम.ए कार्यक्रम के लिए आवेदन देने के लिए पात्र होंगे। एकल–विषय से बी.ए. सम्मान स्नातकों को बहुत से समान रोज़गार अवसर भी उपलब्ध होंगे। अपनी उपाधि को दोहरे मेजर से बी.ए सम्मान में परिवर्तित करने वाले एस.एस.एच विद्यार्थी असामान्य रूप से दृढ़ सहायक घटकों से सम्मान उपाधि पूरी करेंगे जो उन्हें स्नातकोत्तर/व्यावसायिक अध्ययन कार्यक्रम और रोजगार अवसर के लिए आकर्षक उम्मीदवार बनाएगा।

दो मुख्य विषय (ड्यूल मेजर) में बी.ए सम्मान

अध्ययन के तीसरे वर्ष में विद्यार्थी दो मुख्य विषय से बी.ए. सम्मान करने के विकल्प का उपयोग कर सकते हैं। तथापि उन्हें तीसरे सत्र से इसकी योजना शुरू करनी होगी। विशेष रूप से विषय क्रेडिट की गणना करते हुए पाठ्यक्रमों के चुनाव में उन विद्यार्थियों के लिए विशेष परामर्श दिया जाएगा जो दो मुख्य विषय से बी.ए . सम्मान करने के अवसर का लाभ उठाना चाहते हैं ।

जो विद्यार्थी चार वर्षीय दोहरा मेजर डिग्री कार्यक्रम करने के इच्छुक हैं, उन्हें चौथे वर्ष में 32 क्रेडिट वाले अतिरिक्त पाठ्यक्रम करने होंगे। दो विषयों में दोहरे मेजर से स्नातक डिग्री प्राप्त करने के लिए विद्यार्थी को कुल 128 क्रेडिट में से प्रत्येक विषय में कम–से–कम निर्धारित 48 क्रेडिट पूरे करने होंगे।

एस.एस.एच मेजर आवश्यकताओं को बढ़ाकर व एकल विषय मेजर (अर्थात उस विषय में निर्धारित 48 क्रेडिट) की सभी आवश्यकताओं को पूरा करके छात्र एस.एस.एच मेजर को बढ़ाकर दोहरी मेजर उपाधि (डिग्री) पूरी कर सकते हैं। एस.एस.एच बी.ए. सम्मान के छात्र दो मुख्य विषयों, सामाजिक विज्ञान व मानविकी (एकल–विषय) में बी.ए.सम्मान में उपाधि प्राप्त कर सकते हैं। अध्ययन के चौथे वर्ष में नामांकन कराने के इच्छुक छात्रों को अध्ययन के दूसरे व तीसरे वर्ष के दौरान एस.यू.एस संकाय व स्टाफ से विशेष परामर्श प्राप्त होगा।

4

विश्वविद्यालय के केन्द्र

ए.यू.डी अनुसंधान, प्रलेखन और प्रशिक्षण केन्द्र स्थापित करने का प्रस्ताव करता है। ये केन्द्र समसामयिक महत्व के क्षेत्रों में कार्य करेंगे तथा इन्हें विश्वविद्यालय के दृष्टिकोण के साथ इसके शैक्षिक और अनुसंधान कार्यक्रम को जोड़ा जाएगा। नेतृत्व और परिवर्तन केन्द्र, समानता और सामाजिक न्याय केन्द्र, अभियोजित अध्यात्म और शांति निर्माण केन्द्र, गणित विज्ञान का सामाजिक अनुप्रयोग केन्द्र स्थापित करने की योजनाएं हैं। प्रशासन केन्द्र के लिए भी योजना बनाई जा रही है। फिलहाल तीन केन्द्र कार्य कर रहे हैं ।

प्रारंभिक बाल शिक्षा और विकास केन्द्र (सेन्टर फॉर अर्ली चाइल्डहुड एजूकेशन एण्ड डेवलपमेन्ट)

प्रारंभिक बाल शिक्षा और विकास केन्द्र 6 जून, 2009 को प्रबंधन बोर्ड द्वारा स्थापित किया गया । इसे 12 अक्तूबर, 2009 को औपचारिक रूप से शुरू किया गया। सी.ई.सी.ई.डी ए.यू.डी की संगठनात्मक संरचना के अंतर्गत एक इकाई है जो ए.यू.डी शिक्षालयों के साथ निकट का संबंध रखती है। केन्द्र स्थापित करने का मुख्य उद्देश्य समरूप और समग्र ढांचे में अनुसंधान, नीति और अभ्यास को एक साथ लाना है। यह केन्द्र ए.यू.डी में विभिन्न शिक्षालयों के साथ निकटता से कार्य करता है।

सी.ई.सी.ई.डी की गतिविधियाँ और उपलब्धियां

यह केन्द्र 2011–12 में अनुसंधान और सलाह पर मुख्य ध्यान के साथ निम्नलिखित गतिविधियों में संलग्न रहा है :–

क. अनुसंधान

पूर्ण अनुसंधान परियोजनाएँ

भारत में अध्यापक शिक्षा संस्थानों का सर्वेक्षण एन सी टी ई के सहयोग से (सर्वे ऑफ टीचर एजूकेशन इन्स्टीट्यूट इन इण्डिया) 8 राज्यों के 95 संस्थानों में किया गया। अनुसंधान दल ने प्रत्यक्ष पर्यवेक्षण हेतु इनमें से 39 का दौरा किया। यह सर्वेक्षण विद्या भवन सोसायटी, उदयपुर, आन्ध्र महिला सभा, आन्ध्र प्रदेश और लर्निंग इम्प्रिंट्स गुजरात की साझेदारी में किया गया। 29 मार्च 2012 को "आरंभिक बाल शिक्षा के लिए अध्यापकों को तैयार करना" (प्रिपेयरिंग फॉर टीचर्स अर्ली चाइल्डहुड एजूकेशन) शीर्षक पर प्रतिवेदन जारी किए गए।

अधिगम के लिए जुड़ाव–बिहार में केयर (सी.ए.आर.ई) इण्डिया के सहयोग से एक सक्रिय अनुसंधान (लिंक्ड फॉर लर्निंग–एन एक्शन रिसर्च इन बिहार विद केयर इंडिया): अधिगम के लिए जुडाव परियोजना का दृष्टिकोण यह सुनिश्चित करना था कि बिहार के चयनित स्थानों के, जन्म से आठ वर्ष तक की आयु सीमा के हाशियागत बच्चों का घर से औपचारिक विद्यालयों तक सही अन्तरण हो सके। इसका आशय था कि घर, आरंभिक विद्यालय और प्राइमरी / प्राथमिक विद्यालयों को तीन वातावरणों की क्रमिकता के रूप में लाया जाए जो बाल केन्द्रित / बाल अनुकूल हों तथा एक से दूसरे तक सही अन्तरण सुनिश्चित करें और प्रारंभिक शिक्षा को बढ़ावा दें।

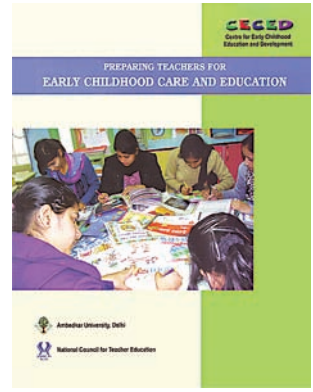

सी.ई.सी.ई.डी ने अध्ययन हेतु तकनीकी सहायता प्रदान की जिसका निष्कर्ष 30 जनवरी 2012 को निकला । इस परिप्रेक्ष्य में सी.ई.सी.ई.डी ने निम्नलिखित में योगदान दिया:–

- निगरानी एवं मूल्यांकन के लिए अध्ययन का आधारभूत ढांचा तैयार करना।
- आधारभूत आंकड़ों के एकत्रण के लिए सामुदायिक

विशेषज्ञों का प्रशिक्षण।

- प्रतिवेदन तैयार करना और आंकड़ों का विश्लेषण करना जो कि तंत्र की बड़ी ज़रूरतों को उजागर करेगी और हस्तक्षेप के लिए ज़रूरी सिफारिशें करेगी।
- सामुदायिक विशेषज्ञ ए.डब्लू.डब्लू.एस और कार्यक्रम अधिकारियों द्वारा उपयोग के लिए निगरानी स्वरूपों की तैयारी को आधारभूत ढांचे के साथ जोड़ा गया है।
- जन्म से लेकर 3 वर्ष तक के शिशुओं के लिए हिंदी में तैयारी और क्षेत्र परीक्षण का एक सचित्र शिशु प्रोत्साहन पैकेज है जो कि केयर इंडिया द्वारा प्रकाशित है। जिसमें ए. डब्लू.डब्लू .एस की मासिक बैठकों के लिए सहयोगी पुस्तकें और एक गतिविधि कैलेंडर शामिल है।
- रैपिड एण्ड लाइन सर्वेक्षण/समीक्षा करना तथा प्रतिवेदन तैयार करना।
- तीन से छः वर्ष के बच्चों के लिए ए. डब्ल्यू. डब्ल्यू. एस. प्राथमिक विद्यालय के अध्यापकों द्वारा एक विषयगत गतिविधि बैंक (थीमैटिक एक्टिविटी बैंक) तैयार करना जिसे केयर (सी.ए.आर.ई) इण्डिया द्वारा प्रकाशित किया जाएगा।

कार्यरत अनुसंधान परियोजनाएं

सी.ई.सी.ई.डी के अंतर्गत ''एक्सप्लोरिंग इम्पेक्ट आफ अर्ली लर्निंग सोशलाइजेशन एण्ड सोशल रेडीनेस एक्पेरिऐंसेस एलांग द प्राइमरी स्टेज" शीर्षक वर्तमान में एक देशान्तरीय अध्ययन संचालित कर रहा है। इस अध्ययन का उद्देश्य सार्वजनिक, निजी और स्वैच्छिक क्षेत्रों में भारतीय परिप्रेक्ष्य में किसी ई.सी.ई कार्यक्रम हेतु अनुभवजनित जरूरतों की पहचान करना और बिना समझौते के गुणवत्ता युक्त तत्वों का पता लगाना है। जो आरंभिक शिक्षा के उद्देश्यों पर सतत् प्रभाव सुनिश्चित करेगा तथा बच्चों के समग्र विकास में योगदान देगा। यह अध्ययन निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर देने का प्रयास कर रहा है :–

1. विद्यालय हेतु तत्परता और वैयक्तिक विकास के संबंध में किस तरह बच्चों को प्राथमिक विद्यालय के लिए तैयार किया गया है ?
2. हम आरम्भिक बाल शिक्षा में गुणवत्ता को किस प्रकार परिभाषित करें?
3. विषय वस्तु और प्रक्रिया दोनों के संबंध में ई.सी.ई कार्यक्रम के मुख्य तत्व कौन–कौन से हैं जिसका बच्चों की प्रारंभिक शिक्षा सामाजीकरण और शिक्षालय हेतु तत्परता पर प्रभाव पड़ता है ?
4. प्रारंभिक शिक्षा, सामाजीकरण और शिक्षालय तत्परता के सम्बन्ध में ई.सी.ई स्तर पर बच्चों द्वारा प्राप्त किए गए लाभ का किस सीमा तक उनके मनो–सामाजिक, व्यावहारिक और शैक्षणिक परिणाम शिक्षा के प्राथमिक स्तर पर सतत् प्रभाव डालते हैं।

5. भारत की सामाजिक–सांस्कृतिक विविधता को देखते हुए क्या ई.सी.ई में समान कार्यात्मक परिभाषा और गुणवत्ता के विनिर्देश पूरे देश के लिए जारी किये जा सकते हैं?
6. एक ई.सी.ई कार्यक्रम में अनिवार्य गुणवत्ता तत्वों को सुनिश्चित करने में शामिल लागत कितनी होगी ?

इस अध्ययन के अंतर्गत निम्नलिखित गतिविधियाँ शुरू की गयी हैं ।

(क) दो चरणों में पायलट अध्ययन किए गए – राजस्थान और आन्ध्र प्रदेश में एक और दूसरे इन तीन राज्यों आन्ध्र प्रदेश, असम और राजस्थान में। पायलट अध्ययन के निष्कर्षों के आधार पर ''वेयर आर द 3–5 इयर ओल्डस " शीर्षक पर एक पेपर तैयार किया गया। इस पेपर को सी.ई.सी.ई.डी द्वारा आयोजित संगोष्ठी में प्रस्तुत किया गया और इसके बाद अक्टूबर, 2011 में चण्डीगढ़ में अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन में एक पोस्टर के रूप में प्रस्तुत किया गया।

(ख) पायलट अध्ययन में पहचान की गई चुनौतियों पर विचार करते हुए पायलट अध्ययन के प्रतिवेदन को साझा करने तथा मुख्य अध्ययन हेतु दिशानिर्देश प्राप्त करने के लिए जुलाई, 2011 में अनुसंधान सलाहकार समिति की बैठक आयोजित की गई।

(ग) सभी तीन राज्यों में समस्त सार्वजनिक, निजी और एन.जी.ओ क्षेत्रों में 2,766 चार साल के बच्चों और 298 ई.सी.ई केन्द्रों पर परीक्षण पूर्व आंकड़ों का संकलन कर लिया गया है। इन आंकड़ों को कम्प्यूटर में डाला जा रहा है।

(घ) 1507 चार वर्ष की आयु वाले तथा 153 ई.सी.ई केन्द्रों पर राजस्थान और आन्ध्र प्रदेश में दस्ते की तिमाही ट्रैकिंग बाद के परीक्षण से पहले ही पूरी हो चुकी थी। असम में 80 प्रतिशत ट्रैकिंग की गयी है तथा इसे अप्रैल 2012 तक पूरा कर लिए जाने की आशा है।

(ङ) केस अध्ययनः स्ट्रैंड सी का अध्ययन गुणात्मक अनुसंधान प्रणाली का अनुसरण करते हुए ई.सी.सी.ई में अच्छी पद्धतियों के आठ केस अध्ययन की तैयारियों को शामिल करता है। इस प्रणाली को अंतिम रूप देने के लिए जुलाई 2011 में अनुसंधान सलाहकार समिति की बैठक आयोजित हुई जिसके दौरान शोधार्थियों के एक समुदाय ने प्रणाली का परिष्करण किया तथा केस अध्ययन के लिए आठ कार्यक्रमों को चुना। इसके बाद दिसम्बर 2011 और फरवरी 2012 में अपनी खोज से जुड़े शोधार्थियों के समूह के साथ दो कार्यशालाएं आयोजित हुईं । केस अध्ययनों के लिए क्षेत्रीय दौरे मार्च 2012 में शुरू किए गये।

ख. अधिवक्तृता (एडवोकेसी)

त्रैमासिक व्याख्यान संगोष्ठी

- **आरंभिक बाल संरक्षण एवं शैक्षिक परिदृश्य (अर्ली चाइल्डहुड केयर एण्ड एज्यूकेशन सिनेरियो):** जमीनी हकीकत से प्रतिपुष्टि (फीडबैक फ्राम द ग्रासरूट): यह वर्ष 2011–12 की पहली संगोष्ठी थी और इसे आरंभिक बाल शिक्षा और बाल विकास (सी.ई.सी.ई.डी) अम्बेडकर विश्वविद्यालय और गली गली सिम सिम (जी.जी. एस.एस) द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित किया गया था। डॉ. श्रीरंजन, संयुक्त सचिव, महिला और बाल विकास मंत्रालय द्वारा इसकी अध्यक्षता की गई थी।
- **आरंभिक साक्षरता:** घर से विद्यालय तक भाषा का संक्रमणः इसे इण्डिया इन्टरनेशनल सेंटर में 12 अगस्त 2011 को पैनल चर्चा के रूप में आयोजित किया गया था। इस पैनल चर्चा की अध्यक्षता प्रो0 आर गोविन्द कुलपति, एनयूईपीए द्वारा की गई और पैनल सूची में श्री धीर झींगन, डॉ. शोभा सिन्हा और प्रो. मिनाटी पाण्डा शामिल थे।
- प्रोफेसर अरनॉल्ड समरऑफ और प्रो.सुजान ने क्रमशः ''द लिमिट्स ऑफ रेजीलिएंस, कन्सट्रेन्ट्स ऑन डेवलपमेन्ट ऑर फोस्टरिंग हाई रिस्क फेमिली रिजीलिएंस फॉर यंग चिल्ड्रेन'' पर 20 अक्टूबर 2011 को व्याख्यान दिए। इस सत्र की अध्यक्षता मानव अध्ययन शिक्षालय ए.यू.डी से प्रो. रचना जौहरी द्वारा की गई।
- **आरंभिक अधिगम –चुनौतियां और संभावनाएं (अर्ली लर्निंग– चैलेंजेज़ एण्ड प्रोसपेक्ट्स):** इसे प्रो. ए.के. जलालुद्दीन और डॉ. रुक्मिणी बनर्जी के बीच वार्तालाप के रूप में अभिकल्पित किया गया था। यह इण्डिया इस्लामिक सेंटर, नई दिल्ली में 4 नवम्बर 2011 को सम्पन्न हुआ।
- **आरंभिक बाल शिक्षा के लिए अध्यापकों को तैयार करना – बहु–आयामी परिप्रेक्ष्य (प्रीपेयरिंग टीचर्स फॉर अर्ली चाइल्डहुड एज्यूकेशन– मल्टीपल पर्सपेक्टिव):** सी.ई.सी.ई.डी ने केयर इण्डिया के साथ "आरंभिक बाल शिक्षा संरक्षण और विकास के लिए अध्यापकों को तैयार करना" (प्रीपेयरिंग टीचर्स फार अर्ली चाइल्डहुड एड्युकेशन केयर एण्ड डेवलपमेन्ट) पर एक पैनल चर्चा का आयोजन किया गया और इसके बाद एक प्रतिवेदन प्रस्तुत किया गया। इस चर्चा का आयोजन इण्डिया हैबिटेट सेंटर में 29 मार्च,2012 को किया गया था।

ग. वेबसाईट का आरम्भ

जनवरी, 2012 में सी.ई.सी.ई.डी वेबसाईट सफलतापूर्वक शुरू की गई। यह सी.ई.सी.ई.डी के दृष्टिकोण क्रियाकलाप,गतिवधियों और उत्पादों का अवलोकन प्रस्तुत करती है तथा आने वाले महीनों में नई घटनाओं या नियोजित पहलों पर दर्शकों को अद्यतन सूचना प्रदान करती है।

घ. गुणवत्ता संवर्धन, क्षमता निर्माण और नीतिगत स्तर पर समर्थन

कई सी.ई.सी.ई.डी सदस्यों ने आरंभिक बाल शिक्षा और विकास के क्षेत्र में सर्वोत्तम पद्धतियों को बढ़ावा देने के लिए अन्य संगठनों के साथ अपनी विशेषज्ञता को साझा किया है।

आई.एस.एस.बी.डी कार्यशाला– सुश्री अपराजिता भरगढ़, अकादमिक फेलो और सुश्री स्वाती बावा, प्रोजेक्ट एसोसिएट ने ''रिस्क, प्रोटेक्शन एण्ड रिजीलिएंस अमंग चिल्ड्रन एट रिस्कः रिसर्च एण्ड एक्शन" पर चण्डीगढ़ में 13–15 अक्टूबर तक व्यवहारात्मक विकास अध्ययन हेतु अन्तरराष्ट्रीय सोसायटी द्वारा आयोजित क्षेत्रीय कार्यशाला में क्रमशः ''एवेलेबिलिटी एण्ड यूटिलाइजेशन ऑफ़ अर्ली चाइल्डहुड प्रोविजन इन राजस्थान एण्ड आन्ध्र प्रदेश" और "सिचुएशनल एनेलिसिस ऑफ़ 3–6 इयर्स ओल्ड्स इन समस्तीपुर डिस्ट्रिक्ट ऑफ़ बिहार" पर पोस्टर प्रस्तुतीकरण का संचालन किया।

प्रो. विनीता कौल, निदेशक सी.ई.सी.ई.डी और आदर्श शर्मा, अतिथि प्रोफेसर ने महिला और बाल विकास मंत्रालय और अन्य कई उच्च स्तरीय समितियों में ई.सी.सी.ई पर राष्ट्रीय नीति तैयार करने में भाग लिया।

सामुदायिक ज्ञान केन्द्र (सी.सी.के)

प्रबंधन बोर्ड ने 24 जून 2011 को अपनी बैठक में सामुदायिक ज्ञान केंद्र (सी.सी.के) का औपचारिक रूप से अनुमोदन किया जबकि इसके अनुमोदन के पहले ही वर्ष के दौरान इसकी गतिविधियाँ शुरू हो चुकी थीं, जिसका वर्णन नीचे किया गया है:–

मई–जून 2011 से एक सहयोगात्मक क्षेत्रीय परियोजना जिसका शीर्षक "कोन्यक समुदाय सांस्कृतिक संसाधन" है भारतीय मानव–विज्ञान सर्वेक्षण (एन्थ्रोपोलोजिकल सर्वे ऑफ़ इण्डिया) कोलकाता और वालो संगठन, मोन,नागालैण्ड की सहभागिता से चल रही है। मोन, नागालैण्ड जिले में और उसके आसपास पारंपरिक ज्ञान की विस्तृत दक्षताओं, कार्य प्रक्रियाओं और मौखिक ज्ञान को सामुदायिक नेतृत्व की प्रक्रियाओं के तहत इस परियोजना में डिजिटली अभिलेखबद्ध किया जाएगा। इस डिजिटल आंकड़े को मौखिक ज्ञान अनुसंधान और प्रलेखन हेतु ए.यू.डी के साथ साझा किया जाएगा। यह मोन शहर में विकास और शिक्षा हेतु जनजातीय विरासत केन्द्र के सामुदायिक डिजिटल पुरालेख पर भी उपलब्ध होंगे । वर्तमान में इस परियोजना के लिए वित्तीय सहायता मोन में क्षेत्रीय दौरे और क्षेत्रीय कार्यशालाओं के जरिए भारतीय मानव–विज्ञान सर्वेक्षण द्वारा की जा रही है । इसके अलावा राष्ट्रीय मौखिक ज्ञान भण्डार के शिक्षण व सहायता के लिए अमूर्त सांस्कृतिक विरासत पर राष्ट्रीय मिशन की तरफ से भारतीय मानव–विज्ञान सर्वेक्षण द्वारा सामुदायिक ज्ञान केंद्र (सी.सी.के) को भी कहा जा चुका है ।

नागरिकों की कहानियों, निजी और वैयक्तिक मौखिक इतिहासों और संकलनों को तलाश करने और उनका प्रलेखन करने के लिए अनुसंधान को बढ़ावा देने हेतु एस.एल.एस के संकाय छात्रों को नियुक्त करके जुलाई, 2011 में दिल्ली सिटिजन मेमोरी प्रोजेक्ट शुरू किया गया। यह अभिलेखागारों को और समृद्ध करेगा । परियेाजना के भाग के रूप में सी. सी.के दारा शिकोह पुस्तकालय के समय से ही शहर में शिक्षा और ज्ञान संवर्धन के रूप में कश्मीरी गेट परिसर के इतिहास के विकास की योजना बना रहा है। सी.सी.के दिल्ली शहर के बहु–विषयक मौखिक अभिलेखागार का विकास करने के लिए ए.यू.डी के अन्य शिक्षालयों को भी शामिल करेगा।

सी.सी.के ने समसामयिक इतिहास से संबंधित अभिलेखागार, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय के सहयोग से दोनो विश्वविद्यालयों के स्नातकोत्तर और डॉक्टोरल छात्रों के लिए जनवरी से मार्च 2012 तक प्रत्येक सप्ताहांत में मौखिक इतिहास कार्यशाला का आयोजन किया है। इसमें उन इतिहासकारों के व्याख्यान शामिल थे जिन्होनें पठन आधारित चर्चाओं, साक्षात्कार लेने के व्यावहारिक तरीकों को एक साथ मिलाकर और साथ ही दृश्य–श्रव्य रिकॉर्डिंग पर तकनीकी सत्र को शामिल करते हुए, अपने कार्य में मौखिक स्त्रोत का प्रयोग किया । सरकारी वामपंथ के इतिहास को मद्देनज़र रखते हुए शोध छात्रों के समूह द्वारा आठ प्रस्तुतीकरण निष्कर्ष रूप में दिए गए जिसमें, कामगारों का श्रम इतिहास और दिल्ली क्षेत्र से नेतृत्व व 2000 के बाद के राजनीतिक आंदोलन शामिल थे।

राष्ट्रीय नवीनीकरण संस्थान (नेशनल इनोवेशन फाउण्डेशन) के साथ समझौते के अंतर्गत परम्परागत ज्ञान में सामुदायिक ज्ञान और जमीनी नवाचारों के समुदाय आधारित क्षेत्रीय प्रलेखन का समन्वय करके शैक्षिक अनुसंधान की सहायता करने के लिए समुदाय सदस्यों के चयन हेतु जनवरी, 2012 में ए.यू.डी–एन .आई.एफ क्षेत्रीय फेलोशिप कार्यक्रम शुरू किया गया। एन.आई.एफ द्वारा पोषित यह कार्यक्रम सी.सी.के द्वारा प्रशासित किया जाता है, जिसने मई 2012 से कार्य शुरू करने के लिए दो क्षेत्रीय प्रलेखन फेलो का चयन किया।

सी.सी.के ने ए.यू.डी में बहु–विषयक उत्तर–पूर्व मंच के संकाय सदस्यों द्वारा सामुदायिक ज्ञान पर 7 अनुसंधान परियोजनाओं की समाप्ति पर मार्च 2012 में एक कार्यशाला का आयोजन किया। "भौतिक संस्कृति, सृजन और उपयोगः समुदाय के आंतरिक परिप्रेक्ष्य", यह वर्ष 2011–12 के लिए वार्षिक अनुसंधान परियोजना की पहली श्रृंखला थी। कार्यशालाओं और परिसंवादों की यह श्रृंखला अनुसंधान अध्ययनों के परिणामों का बहुत से श्रोताओं, भौतिक संस्कृति विद्वानों और संग्रहालय के क्यूरेटर से लेकर समुदाय के सदस्यों तक प्रसार करेगी । वस्तुओं के सांस्कृतिक अमूर्त रूप का समाधान देते हुए भौतिक संस्कृति आदानों (कोश) का यह अध्ययन समृद्ध सामाजिक शब्दकोशों का गतिशील निर्धारण करेंगे और समाज से अलग–थलग स्थिर वस्तुओं से आगे बढ़कर उन्हें मूर्त रूप में देखेंगे।

सी.सी.के संस्थागत स्मृति कोश सहित ए.यू.डी डिजिटल मल्टीमीडिया कोश के कार्यान्वयन हेतु ए.यू.डी के आई.टी प्रभाग से सहयोग ले रहा है। हार्डवेयर की आवश्यकताओं की पहचान कर ली गई है। आई.टी सेवा के मुख्य स्टाफ को प्रशिक्षण देने के लिए प्रदर्शन आधार पर सॉफ्टवेयर और प्रचालन प्रणालियां स्थापित की जा रही हैं ताकि विश्वविद्यालय स्तर पर डिजिटल मल्टीमीडिया कोश का विकास, निर्माण,अनुरक्षण व प्रबन्धन किया जा सके। यह अनुसंधानकर्ताओं और सामान्य जनता तक पहुंच बनाएगा।

जनवरी 2012 में स्वदेशी ज्ञान के डिज्टिन रिपैट्रीऐशन पर पैनल में स्मिथसोनियन संस्थान, वाशिंगटन, यू.एस.ए में श्री सुरजीत सरकार,सलाहकार, द्वारा सी.सी.के का प्रतिनिधित्व किया गया। एफ.एम.एस.एच पेरिस; अमेरिकन यूनिवर्सिटी, पेरिस; येल यूनिवर्सिटी, साउथ एशिया स्टडीज काउंसिल और कैंब्रिज यूनिवर्सिटी में भूगोल विभाग एवं मानव–विज्ञान व पुरातत्व संग्रहालय के साथ अन्य अंतरराष्ट्रीय सहभागिता की खोज की जा रही है।

भारत के अंतर्गत देश के उत्तर पूर्व क्षेत्र से सामुदायिक ज्ञान से संबंधित परियोजनाओं में सहयोग हेतु इन्स्टीट्यूट आफ नार्थ ईस्ट स्टडीज, गुवाहाटी विश्वविद्यालय के साथ चर्चा कर रहा है। वर्ष 2012–13 हेतु छात्र इंटर्नशिप कार्यक्रम पर भारतीय कला और संस्कृति से संबंधित आनलाइन विश्वकोश के बारे में साहाकोश (साहा पीडिया) के साथ चर्चा की जा रही है । फिलहाल इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मानव संग्रहालय, भोपाल; भारतीय ऐतिहासिक अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली; संस्कृति मंत्रालय, नई दिल्ली; राष्ट्रीय समुद्र संस्थान, गोवा और अन्य सरकारी एवं निजी एजेंसियों से परामर्श लिया जा रहा है।

सामाजिक विज्ञान अनुसंधान प्रणाली केन्द्र

सामाजिक विज्ञान और मानविकी में अनुसंधान और अध्यापन करने के अधिदेश के साथ नए विश्वविद्यालय के रूप में अम्बेडकर विश्वविद्यालय ने वर्ष 2010–11 में सामाजिक विज्ञान अनुसंधान केन्द्र की स्थापना की।

यह परिकल्पित किया गया है कि यह केन्द्र ए.यू.डी के अन्दर और बाहर से विश्वविद्यालय के छात्रों और संकाय सदस्यों हेतु सामाजिक विज्ञान अनुसंधान प्रणाली में नवीन कार्यक्रमों (स्टैण्ड एलोन और प्लग इन पाठ्यक्रमों और कार्यशालाओं) का अभिकल्पन करेगा तथा उन्हें प्रदान करेगा, विश्वविद्यालय के चल रहे अकादमिक और अनुसंधान कार्यक्रमों,शिक्षण प्रलेखों और शोध प्रणालियों से सम्बंधित पाठ्यक्रमों के संचालन में सहायता देगा। छोटे और बड़े अनुसंधान अध्ययनों हेतु परामर्शी सेवाएं प्रदान करेगा और भारत तथा विदेशों में अन्य विश्वविद्यालय और अनुसंधान संस्थाओं में अनुसंधान प्रणालियों में कार्यक्रमों से जुड़े हुए विद्वानों के सहयोग और नेटवर्किंग को सरल बनाएगा।

5

विश्वविद्यालय के छात्र

ए.यू.डी में छात्रों का नामांकन : 2011–12

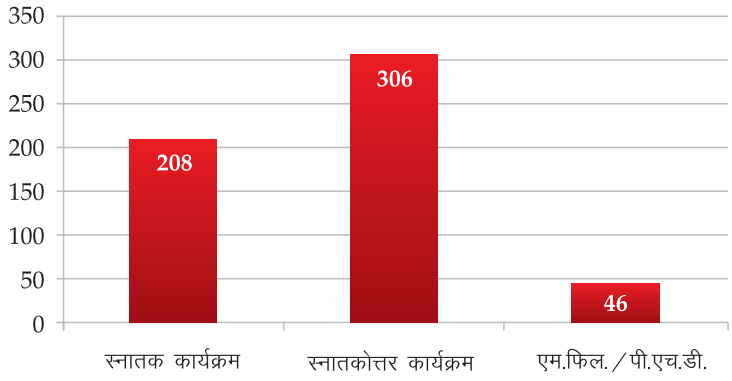

स्नातक कार्यक्रम में छात्रों का नामांकन

कार्यक्रम का नाम	कुल छात्रों की संख्या	लड़के	लड़कियां	अनु. जाति	अनु.जनजाति	अन्य पिछड़ा वर्ग	शारीरिक अक्षम	सी.डब्ल्यू.ए.पी./ रक्षा	विदेशी छात्र	सामान्य
बी.ए. अर्थशास्त्र	72	38	34	03	01	08	—	—	01	59
बी.ए. अंग्रेजी	32	06	26	—	05	05	—	01	—	21
बी.ए. इतिहास	16	10	06	02	03	02	—	—	—	09
बी.ए. गणित	10	05	05	—	—	01	—	—	—	09
बी.ए. समाजशास्त्र	11	06	05	—	01	01	—	01	—	08
बी.ए. मनोविज्ञान	32	08	24	02	02	—	—	—	01	27
बी.ए.सामजिक विज्ञान एवं मानविकी	35	22	13	01	03	03	—	—	—	28
कुल (बी.ए.)	**208**	**95**	**113**	**08**	**15**	**20**	**—**	**02**	**02**	**161**

स्नातकोत्तर कार्यक्रम में छात्रों का नामांकन :—

कार्यक्रम का नाम	कुल छात्रों की संख्या	लड़के	लड़कियां	अनु. जाति	अनु.जनजाति	अन्य पिछड़ा वर्ग	शारीरिक अक्षम	सी.डब्ल्यू.ए.पी./ रक्षा	विदेशी छात्र	सामान्य
विकास अध्ययन शिक्षालय										
एम.ए विकास अध्ययन	59	25	34	02	05	02	01	—	03	46
मानव पारिस्थितिकी शिक्षालय										
एम.ए. पर्यावरण एवं विकास	36	10	26	01	04	03	—	—	—	28
ललित अध्ययन शिक्षालय										
एम.ए अंग्रेजी	29	02	27	01	04	04	——	——	——	20
एम.ए. अर्थशास्त्र	42	11	31	02	01	03	——	——	——	36
एम.ए इतिहास	18	05	13	01	06	02	——	——	——	09
एम.ए समाजशास्त्र	30	04	26	01	08	——	——	——	——	21
मानव अध्ययन शिक्षालय										
एम.ए मनोविज्ञान	70	02	68	01	01	01	01	0	——	65
एम.ए जेंडर अध्ययन	22	——	22	——	——	01	——	—	01	20
कुल (एम.ए)	**306**	**59**	**247**	**09**	**29**	**16**	**02**	**0**	**04**	**245**

कुछ आरक्षित श्रेणी के विद्यार्थियों ने सामान्य श्रेणी में प्रवेश लिया क्योंकि उन्होंने अर्हक परीक्षा में उच्च प्रतिशत प्राप्त किया था।

एम.फिल कार्यक्रम में छात्रों का नामांकन :–

कार्यक्रम का नाम	कुल छात्रों की संख्या	लड़के	लड़कियां	अनु. जाति	अनु.जनजाति	अन्य पिछड़ा वर्ग	शारीरिक अक्षम	सी.डब्ल्यू.ए.पी./ रक्षा	विदेशी छात्र	सामान्य
मनोचिकित्सा एवं नैदानिक चिंतन	17	02	15	01	–	–	–	–	–	16
हिंदी	08	04	04	02	–	03	–	–	–	03
इतिहास	07	03	04	–	–	01	–	–	–	06
कुल (एम.फिल)	**32**	**09**	**23**	**03**	**–**	**04**	**–**	**–**	**–**	**25**

पीएच.डी कार्यक्रम में छात्रों का नामांकन :–

कार्यक्रम का नाम	कुल छात्रों की संख्या	लड़के	लड़कियां	अनु. जाति	अनु.जनजाति	अन्य पिछड़ा वर्ग	शारीरिक अक्षम	सी.डब्ल्यू.ए.पी./ रक्षा	विदेशी छात्र	सामान्य
हिंदी	03	–	03	01	–	–	–	–	–	02
इतिहास	03	–	03	–	–	–	–	–	01	02
विकास अध्ययन	04	03	01	01	01	–	–	–	–	02
मानव पारिस्थितिकी	04	02	02	–	–	–	–	–	–	04
कुल(पीएच.डी)	14	05	09	02	01	–	–	–	01	10
पूर्ण योग	**560**	**168**	**392**	**22**	**45**	**40**	**02**	**03**	**07**	**441**

एम.फिल. और पी.एचडी. की उपाधियाँ स्नातक अध्ययन शिक्षालय को छोड़कर विश्वविद्यालय के किसी भी शिक्षालय द्वारा दी जा सकती हैं। एम.फिल. और पी.एचडी. उपाधियों से संबंधित सभी शैक्षिक मामलों का निरीक्षण अकादमिक परिषद् की स्थायी समिति (अनुसंधान) द्वारा विश्वविद्यालय स्तर पर किया जाएगा। जब तक शैक्षिक परिषद एस.सी.आर का गठन नहीं कर लेती, कुलपति एक अंतरिम एस.सी.आर नियुक्त करेंगे जो एस.सी.आर के सभी कार्यों को सम्पन्न करेगी।

एम.फिल्. और पी.एचडी. उपाधियों से संबंधित सभी अकादमिक मामले अनुसंधान अध्ययन समिति (आर.एस.सी) द्वारा स्कूल स्तर पर देखे जाएंगे। आर.एस.सी इन शिक्षालयों के अध्ययन बोर्डों की उपसमिति होगी । यह समिति प्रत्येक संबंधित शिक्षालय के क्षेत्राधिकार में अनुसंधान विषयों/क्षेत्रों के एम.फिल्. और पी.एचडी. कार्यक्रमों का विनियमन करेगी। एक शिक्षालय के लिए एक से अधिक आर.एस.सी समिति हो सकती हैं। आर.एस.सी का गठन अकादमिक परिषद् द्वारा निर्धारित किया जाएगा। अंतरिम तौर पर प्रत्येक आर.एस.सी का गठन निम्न रूप में होगाः

शिक्षालय के अधिष्ठाता (सभापति)

- शिक्षालय के चार सदस्य जो डॉक्टोरल पर्यवेक्षक के रूप में मान्य होने के लिए पात्र हों और जिन्हें शिक्षालय में नियुक्त किया गया हो या हाल ही में नियुक्त किया जाना हो, बोर्ड द्वारा नामित किया हो।
- स्कूल के बाहर से एक सदस्य जिन्हें कुलपति द्वारा नामित किया गया हो।

प्रवेश के लिए मानदण्ड

- उन एम.फिल् एवं पी.एच.डी छात्रों के लिए जिनके पास एम.फिल उपाधि नहीं है, के लिए प्रवेश जून–जुलाई में व प्रत्येक वर्ष में एक बार होगा।
- वे छात्र जिन्होंने एम.फिल् किया है, के लिए पी.एचडी. प्रवेश पूरे वर्ष चलेगा।
- प्रत्येक शिक्षालय में एम.फिल् हेतु सीटों की संख्या आर.एस.सी की सिफारिश पर एस.सी.आर द्वारा निर्धारित की जाएगी और इसे प्रवेश प्रक्रिया के शुरू होने के पहले घोषित/प्रकाशित किया जाएगा।
- प्रत्येक शिक्षालय में पी.एचडी कार्यक्रम में सीटों की संख्या संकाय में मान्यता प्राप्त पर्यवेक्षकों की संख्या पर निर्भर करते हुए, वर्ष दर वर्ष अलग–अलग हो सकती है तथा डॉक्टोरल छात्र की अधिकतम संख्या जब उन्हें किसी निश्चित समय में पर्यवेक्षण करने की अनुमति दी जाती है।
- यह संख्या आर.एस.सी द्वारा निर्धारित की जाएगी तथा पूरे वर्ष आवधिक रूप से घोषित की जाएगी।

शैक्षिक वर्ष 2011–12 के लिए नामांकित एम.फिल. और पी.एचडी. छात्र

वर्ष 2010–11 के शैक्षिक सत्र में एम.फिल. और पी.एचडी. कार्यक्रमों में कुल 8 छात्रों का नामांकन किया गया था, जबकि सत्र 2011–12 में इसकी संख्या बढ़कर 46 हो गई। फिलहाल विकासात्मक अध्ययन शिक्षालय, मानव पारिस्थितिकी शिक्षालय, मानव अध्ययन शिक्षालय और ललित अध्ययन शिक्षालय एम.फिल. और पी.एचडी उपाधियाँ प्रदान कर रहे हैं।

ए.यू.डी में एम.फिल और पी.एच.डी छात्रों की वृद्धि

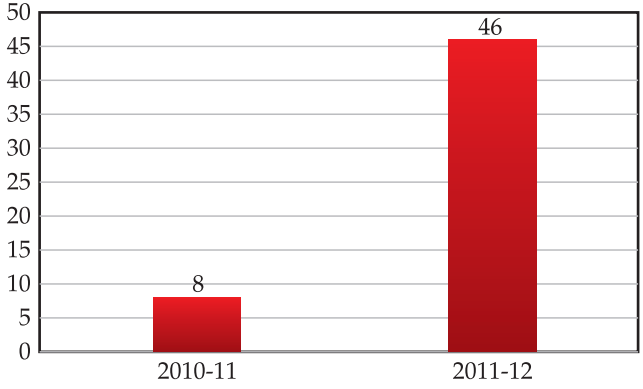

अनुसंधान कार्यक्रम हेतु कुल 46 छात्रों का नामांकन किया गया है जिसमें से 1 छात्र पी.एचडी. में हैं और 32 छात्र एम.फिल् कार्यक्रम में हैं ।

पुरातत्व विभाग
DEPARTMENT OF ARCHAEOLOGY

6

विश्वविद्यालय की भौतिक परिसम्पत्तियां

पुस्तकालय

ए.यू.डी के पुस्तकालय का धीरे–धीरे विकास हो रहा है । वर्ष 2011–12 में पुस्तकालय ने पुस्तकों और पत्रिकाओं (प्रिंट और ऑनलाइन) डाटाबेस और पुस्तकालय नेटवर्क की सदस्यता में वृद्धि की है।

1. फिलहाल पुस्तकालय में कुल 11,417 पुस्तकें हैं जिसमें 3742 पुस्तकों की खरीद इस वित्तीय वर्ष में की गई है। सभी पुस्तकों को वर्गीकृत किया गया, उनकी सूची बनाई गई, बार कोड दिया गया है एवं यह पुस्तकें प्रयोगकर्ताओं को सुलभ हैं।
2. ए.यू.डी पुस्तकालय जुलाई 2011 से दो परिसरों से कार्य कर रहा है।
3. इस वर्ष स्नातक छात्रों हेतु अलग से पाठ्य पुस्तक (टेक्स्ट बुक) अनुभाग की स्थापना की गई।
4. पुस्तकालय ने उन 100 मुद्रित पत्रिकाओं के चंदे का पुनःनवीनीकरण किया है जो ऑनलाइन उपलबध नहीं है ।
5. दोनों परिसरों के पुस्तकालय में सॉफ्टवेयर लिब्सिस (एल.आई.बी.एस.वाई.एस) स्थापित किया गया है तथा यह सॉफ्टवेयर ठीक प्रकार से कार्य कर रहा है।

- ए.यू.डी पुस्तकालय ने वर्ष 2012–13 हेतु इनफ्लीबनेट के जरिए सभी 6 ई–रिसोर्स का पुनःनवीनीकरण किया गया।
  1. जस्टर (खण्ड 1 और संस्करण 1 से 1046 पत्रिकाएँ)
  2. कैब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस (वर्ष 1997 से कुल 197 पत्रिकाएँ)
  3. ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस (202 पत्रिकाएँ)
  4. स्प्रींगर (1200 पत्रिकाओं से अधिक)
  5. नेचर–वीकली 1997 के बाद से अब तक
  6. मैथसाईनेटः इसमें 2 मिलियन मदों से भी अधिक मदें तथा मूल लेख के लिए 700,00 प्रत्यक्ष लिंक शामिल हैं। 80,000 से भी अधिक कई मदों को प्रत्येक वर्ष जोड़ा जाता है। जिनमें से अधिकतर को गणित विषय आधारित वर्गीकरण के अनुसार वर्गीकृत किया जाता है।

- ए.यू.डी पुस्तकालय ने कई अन्य ई–रिसोर्स को भी सब्सक्राइब किया है। विवरण इस प्रकार हैः
  1. प्रोजेक्ट म्यूज (523 पत्रिकाएँ)
  2. ए.ए.ए.एस (1 डाटाबेस)
  3. एब्सको – एकेडमिक सर्च कम्पलीट (8500 पूर्ण पाठ्य पत्रिकाएँ)
  4. एब्सको होस्ट – बिजनेस रिसोर्स कम्पलीट (1300 पत्रिकाएँ)
  5. एमराल्ड मैनेजमेंट (200 पत्रिकाएँ)
  6. कैपिटलाइन.कॉम (1 डाटा बेस)
  7. सेज रिसर्च मैथड्स ऑनलाइन (एस.आर.एम.ओ)
  8. साइंस डायरेक्ट (2 पत्रिकाएँ)
  9. विली (4 पत्रिकाएँ)
  10. टोरन्टो यूनिवर्सिटी प्रेस (1 पत्रिका)

- ए.यू.डी पुस्तकालय का कुल खर्च 1,06,80,143.34 रूपए था जिसमें से 52,27,243.00 रूपए पुस्तकों पर खर्च किए गए तथा 54,52,900.34 रूपए राष्ट्रीय और अन्तरराष्ट्रीय प्रिंट और इलेक्ट्रानिक रिसोर्सेस पर खर्च किए गए।
- वर्तमान में 700 से भी अधिक प्रयोक्ता इश्यू–रिटर्न, रेफरेंस सर्विस, ई–रिसोर्स एक्सेस और आवधिक पत्रिकाओं जैसी पुस्तकालय सुविधाओं का प्रयोग कर रहे हैं।

- ए.यू.डी पुस्तकालय ने पुस्तकालय विशेषज्ञों हेतु आर्थिक विकास और समाज संस्थान के साथ संयुक्त रूप से संस्कृति मंत्रालय, आई.सी.एस.एस.आर, डी.आर.डी.ओ और सी. एस.आई.आर की सहायता से नई दिल्ली में 16–17 मार्च 2012 को ''लीडरशिप, एथिक्स, एकाउंटबिलिटी एंड प्रोफेशनलिज्म इन लाइब्रेरी सर्विसेस" पर दो दिवसीय अन्तरराष्ट्रीय सम्मेलन'' लाइब्रेरी एण्ड इन्फारमेशन प्रोफेशन्स समिट" (एल.आई.पी. एस) 2012 का आयोजन किया है।

आई.टी. सेवाएं

आई.टी सेवा प्रभाग कश्मीरी गेट और द्वारका परिसर दोनों में आई.टी सम्बंधित गतिविधियों के रीढ़ के रूप में सेवा प्रदान करता है। सूचना प्रौद्योगिकी विकास में नई प्रविष्टियां लाने हेतु इसके उन्नयन के लिए लगातार प्रयास किए जाते रहे हैं। विश्वविद्यालय के मुख्य मिशन में से सूचना का स्थान महत्वपूर्ण है जो कि सृजन, संरक्षण, प्रसार और ज्ञान के अनुप्रयोग हैं । विश्वविद्यालय के पास द्वारका और कश्मीरी गेट परिसरों को शामिल करते हुए, लगभग 500 नेटवर्क कनेक्शन (वायर्ड और वायरलेस) हैं।

कार्य

- आई.टी नीति, नेटवर्क डिजाइन, क्षमता नियोजन और बहु परिसर पहुंच हेतु प्रबंधन।
- आई.टी हार्डवेयर इंफ्रास्ट्रक्चर की खरीद, संस्थापन, सभी आईटी सेवाओं का प्रबंधन करना।
- आई.टी सेवा प्रभाग को विश्वविद्यालय की इन्ट्रानेट, इन्टरनेट और वर्चुअल प्राइवेट नेटवर्क सेवाओं को चलाने की जिम्मेदारी दी गई है।
- आई.टी सेवाएं फ़ायरवॉल सिक्यूरिटी,प्रॉक्सी, डी.एच.सी.पी, वी.पी.एन भी चला रही हैं तथा दो स्थानों से विश्वविद्यालय के नेटवर्क का प्रबंधन कर रही हैं।
- आईटी सेवाएं टैली ईआरपी9 और लिबसिस सॉफ्टवेयर का भी अनुरक्षण कर रही हैं । दोनों सेवाएँ वी.पी.एन पर प्रयोगकर्ताओं के लिए उपलब्ध हैं।

उत्तरदायित्व

- विण्डोज 2008 एक्टिव डायरेक्ट्री सेक्योर्ड आथेंटिकेशन का कार्यान्वयन।
- ए.यू.डी नेटवर्क के बाहर संकाय हेतु सुरक्षित वी.पी.एन आधारित ई–जर्नल और इन्ट्रानेट पहुंच प्रदान करना।

- ग्लोबल नेमिंग और आईपी एड्रेसिंग।
- नेट एक्सेस आई.डी और ई–मेल का लेखा प्रदान करना।
- कम्प्यूटर हार्डवेयर और पुर्जों का अनुरक्षण करना।
- ए.यू.डी के कश्मीरी गेट परिसर ने बैकअप के रूप में एन.के.एन (राष्ट्रीय ज्ञान नेटवर्क) से 1 जी.बी.पी.एस और ई.आर.एन.ई.टी से 8 एम.बी.पी.एस का हाईस्पीड इंटरनेट कनेक्शन प्राप्त किया है।
- द्वारका परिसर के पास बैकअप के रूप में 2 एम.बी.पी.एस, एम.टी.एन,एल ब्राण्डबैंड के साथ 4 एम.बी.पी.एस ई.आर.एन.ई.टी लीज्ड लाईन लिंक हैं।
- द्वारका और कश्मीरी गेट कैम्पस के बीच वर्चुअल प्राइवेट नेटवर्क (वी.पी.एन) है।
- परिसरों के बीच सूचना अन्तरण हेतु केन्द्रीकृत इंटरनेट सुविधा है।
- पूरे परिसर में वायर्ड और वायरलैस नेटवर्क प्रणाली विश्वविद्यालय के लैन एण्ड वैन प्रणालियों का भाग रहा है जो बहुत ही अधिक गति की नेटवर्क पहुँच रखता है।
- दोनों परिसरों में सर्वर का वर्चुअलाइजेशन किया गया है जो बेहतर कार्यात्मक नियंत्रण, परिचालन लागत को कम करने और बेहतर स्केलिंग की अनुमति देता है।
- दोनों परिसरों में यूनीफायड थ्रैट मैनेजमेन्ट उपकरण लगाए गए हैं जो विश्वविद्यालय की सुरक्षा रणनीति के प्रबंधन को सरल बनाते हैं साथ ही एक सिंगल केन्द्रीकृत कन्सोल से सभी सुरक्षा समाधानों पर नज़र रखी जा सकती है तथा उनका विन्यास किया जा सकता है ।

ए.यू.डी के पास प्लेटफार्म मुक्त अवसंरचना है। इस प्रकार शिक्षक, छात्र, अनुसंधानकर्ता, कर्मचारी विभिन्न प्रचालन प्रणालियों जैसे कि अपने लैपटॉप और डेस्कटॉप के बिना ए.यू. डी. नेटवर्क प्रणाली से आसानी से संपर्क स्थापित कर सकते हैं।

सर्वर के संसाधनों के बेहतर कार्यात्मक नियंत्रण हेतु प्रतिमान बनाया गया है। जिसके परिणामस्वरूप कार्यालय ऑटोमेशन एप्लीकेशन और अन्य ऑनलाइन संसाधनों में 24x7 आधार पर सामान्य पहुंच है।

ए.यू.डी की आई.टी सेवाएं विभिन्न शैक्षिक समुदायों को डीजीटीकृत सूचना प्रदान करने हेतु उसके प्रबंधन और वितरण के लिए डीस्पेस पर रिपोजिटरी प्रणाली का रखरखाव कर रही हैं। ए.यू.डी के प्रत्येक शिक्षक, स्टॉफ एवं छात्रों को गूगल एप्स में 25 जी.बी. का मेल बॉक्स प्रदान किया गया है।

ए.यू.डी के पास अपनी आई.टी नीति है जो विश्वविद्यालय की कम्प्यूटिंग सुविधाओं के उपयोग के लिए दिशानिर्देश के रूप में कार्य करती है। इन नीतियों को बनाते हुए प्रयोक्ताओं द्वारा सही संचालन हेतु सुरक्षा और क्षमता के बीच में अच्छा संतुलन बनाने के लिए सभी प्रयास किए गए हैं ।

250 डेस्कटॉप (कोर–2, आई3, आई5 आदि) के अलावा, ए.यू.डी ने संकाय को उनके उपयोग के लिए डेल, लेनोवो, एच.पी कम्पैक और एपल (मैक) के 100 लेपटॉप दिए हैं। द्वारका और कश्मीरी गेट परिसर में डेल, लेनोवो और एच.पी के 250 कम्प्यूटर रखे गए हैं। परिसरों में बिजली निर्बाध गति से प्रदान की जाती है एवं 1 के.वी.ए, 5 के.वी.ए और 10 के. वी.ए के 69 ऑफलाइन यू.पी.एस और 20 के.वी.ए के 3 ऑनलाइन यू.पी.एस सिस्टम दोनों परिसरों में रखे गए हैं।

भविष्य: अपने लगातार प्रयास में ए.यू.डी का आई.टी सेवा प्रभाग नई सुविधाओं को प्रदान करने में प्रगति कर रहा है जैसे कि –

1. सूचना के सक्रिय आदान–प्रदान के लिए वीडियो और ऑडियो कान्फ्रेंसिंग प्रणालियां।
2. ई.आर.पी (एंटर प्राइज रिसोर्स एण्ड प्लानिंग) सॉफ्टवेयर विश्वविद्यालय के विस्तृत स्वचालन के लिए लगाया जाएगा।

3. 24X7 आधार पर छात्रों और कर्मचारियों के उपयोग के लिए (व्यक्ति रहित) कंप्यूटर केंद्र का प्रबंध।

एयूडी में आई टी उपकरण– कश्मीरी गेट एवं द्वारका परिसर

क्रम.संख्या.	उपकरण	कश्मीरी गेट	द्वारका
1.	डेस्कटॉप	98	125
2.	लैपटॉप	44	24
3.	प्रिंटर	16	29
4.	डाटा कार्ड	06	03
5.	राऊटर	19	17
6.	यू.पी.एस	29	42
7.	प्रोजेक्टर	15	12
8.	स्विच	38 (सिस्को एल 3–1, एल 2 –30) + 7 डलिंक	03
9.	यू.टी.एम	01	01

छात्रावास की सुविधा :–

द्वारका परिसर में छात्रों हेतु छात्रावास में रहने की सुविधा उपलब्ध है। ए.यू.डी, आई.आई.टी, सी.बी.पी.जी.ई.सी और ए.यू.डी के छात्रों के लिए छात्रावास का प्रबंध कर रहा है। ए.यू.डी, कश्मीरी गेट परिसर में छात्राओं हेतु छात्रावास में रहने का भी प्रबंध कर रहा है। शैक्षिक वर्ष 2011–12 के दौरान ए.यू.डी के आरक्षित श्रेणी के सभी छात्रों को, जिन्होंने छात्रावास में रहने के लिए आवेदन दिया था उन्हें प्रवेश दे दिया गया है ।

श्रेणीवार नामांकन

लड़कों का छात्रावास

	सामान्य	अनु. जाति	अनु. जनजाति	अन्य पिछड़ा वर्ग	कुल
ए.यू.डी	13	3	5	–	21

लड़कियों का छात्रावास

	सामान्य	अनु. जाति	अनु. जनजाति	अन्य पिछड़ा वर्ग	कुल
ए.यू.डी	17	–	7	–	24

7

विश्वविद्यालय का संगठनात्मक ढांचा

विश्वविद्यालय का संगठनात्मक ढांचा

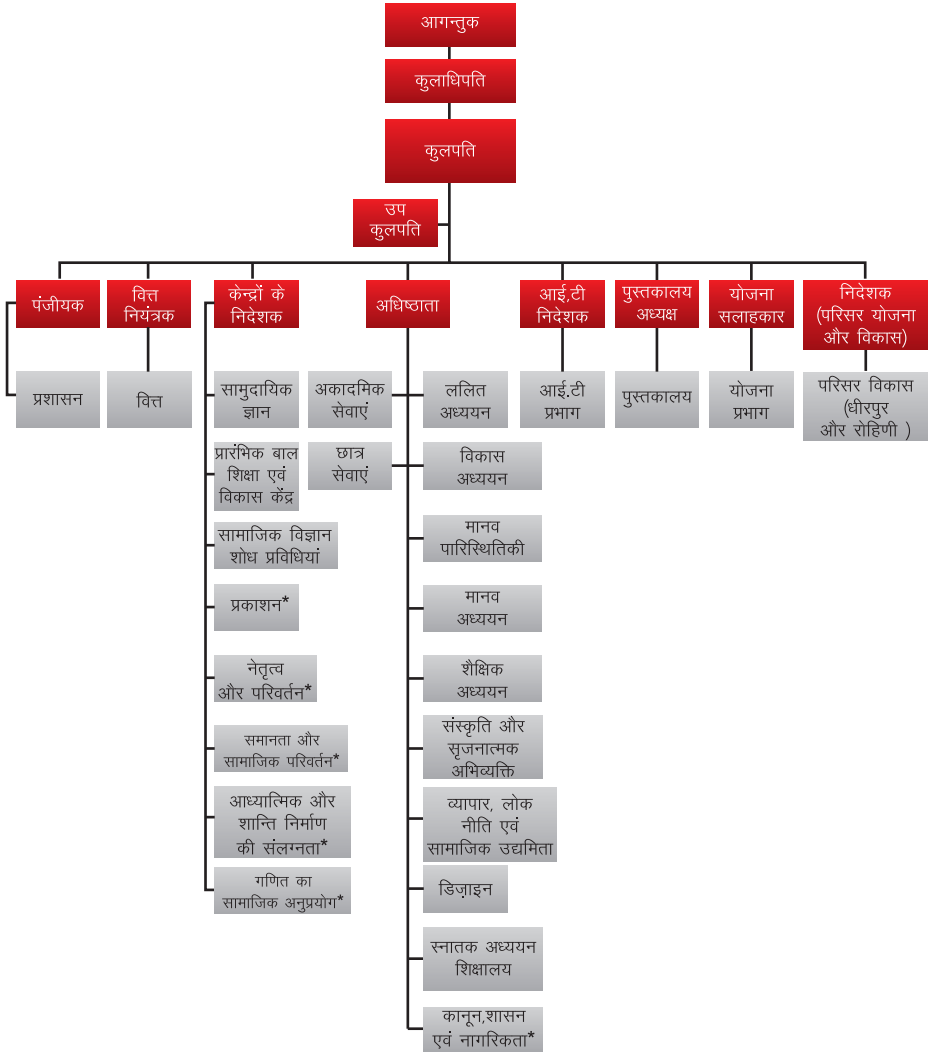

*प्रस्तावित

विश्वविद्यालय प्राधिकारियों का संगठनात्मक ढांचा

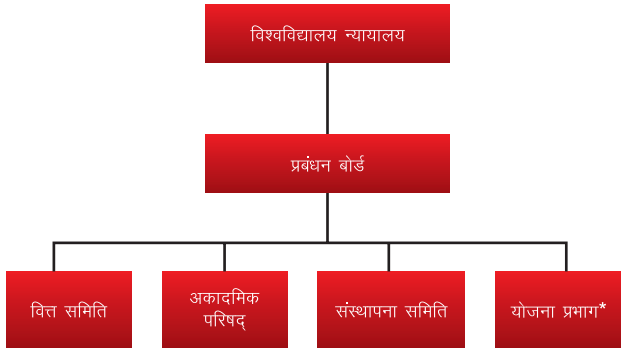

*प्रस्तावित

अम्बेडकर विश्वविद्यालय, दिल्ली

8

परिशिष्ट

परिशिष्ट–क

प्रवेश प्रक्रिया

प्रवेश सूचना

चयनित मुख्य समाचार पत्रों और विश्वविद्यालय की वेबसाईट में विज्ञापनों के जरिए प्रवेश अधिसूचित किए जाते हैं।

शैक्षिक वर्ष 2011–12 हेतु बी.ए, एम.ए, एम.फिल और पी.एचडी. कार्यक्रमों के लिए कई प्रवेश परीक्षाओं और साक्षात्कारों का संचालन किया गया और छात्रों को विश्वविद्यालय के निर्धारित नियमों और विनियमों के अनुसार प्रवेश दिया गया। लिखित परीक्षा के आधार पर चुने गए अभ्यर्थियों को साक्षात्कार के लिए बुलाया जाता है।

सीटों का आरक्षण

उच्च शिक्षा के संस्थानों को यथा लागू विभिन्न सामाजिक समूहों और श्रेणियों के संबंध में राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र, दिल्ली सरकार की आरक्षण नीतियों के अनुसार प्रवेश दिए जाते हैं।

विदेशी छात्रों को प्रवेश

प्रत्येक कार्यक्रम में कुछ सीटें विदेशी छात्रों के लिए अलग से रखी गई हैं। अध्ययन से संबंधित शिक्षालयों द्वारा निर्णित प्रक्रिया के जरिए विदेशी छात्रों को प्रवेश दिया जाता है। विदेशी छात्रों के लिए शैक्षिक योग्यता के संबंध में पात्रता वही है जो भारतीय छात्रों के लिए है। तथापि विदेशी छात्रों को अंग्रेजी में प्रवीणता का साक्ष्य प्रस्तुत करना होगा।

फीस माफी और छात्रवृत्ति

विद्यार्थियों के लिए काफी संख्या में आंशिक और पूर्ण फीस माफी एवं छात्रवृत्ति उपलब्ध है। विश्वविद्यालय यह सुनिश्चित करता है कि जहां तक संभव हो किसी भी प्रतिभावान छात्र को फीस अदा करने में अक्षम होने के कारण ए.यू.डी में अध्ययन करने की सुविधा से वंचित न किया जाए।

अभ्यर्थियों का चयन

अध्ययन के विभिन्न कार्यक्रमों में प्रवेश हेतु अभ्यर्थियों का चयन लिखित परीक्षा और साक्षात्कार के बाद किया जाता है।

प्रवेश परीक्षा में भाग लेने के लिए पात्रता संबंधी योग्यताएं

प्रवेश परीक्षा में भाग लेने के लिए पात्रता मानदण्ड (सामान्य और आरक्षित श्रेणी के अभ्यर्थियों को) के संबंध में विश्वविद्यालय द्वारा निर्धारित दिशानिर्देशों को तैयार किया जाता है । अभ्यर्थी जो अपने संबंधित अर्हक परीक्षा में भाग ले रहे हैं, उन्हें प्रवेश परीक्षा में भाग लेने की भी अनुमति दी जाती है । चयन की इस प्रक्रिया में उनका प्रवेश अर्हक परीक्षा में अंकों के निर्धारित प्रतिशत प्राप्त करने तथा उत्तीर्ण होने और प्रवेश के समय अर्हक परीक्षा की अंतिम अंकतालिका सहित सभी कागजातों की प्रस्तुति अपेक्षित है ।

पंजीकरण

प्रवेश हेतु चयनित अभ्यर्थियों से विश्वविद्यालय द्वारा निर्धारित समय अनुसूची के भीतर ही सभी पंजीकरण औपचारिकताएं पूरी करने की अपेक्षाएं की जाती हैं।

बी.ए कार्यक्रमों हेतु पात्रता

किसी भी मान्यताप्राप्त बोर्ड से न्यूनतम 55 प्रतिशत अंक के साथ कक्षा 12 उर्त्तीण होना आवश्यक है। अनु. जनजाति और शारीरिक रूप से असमर्थ श्रेणी के अभ्यर्थियों को 5 प्रतिशत की छूट दी जाती है। जो छात्र ऐसे परीक्षा बोर्ड से उर्त्तीण होकर आये हैं जहाँ उन्हें केवल ग्रेड दिये जाते हैं, ऐसे छात्रों के लिए उनके ग्रेड औसत के आधार पर समतुल्य प्रतिशत की गणना करने हेतु उपयुक्त प्रक्रिया तैयार की जाएगी। अर्थशास्त्र अैर गणित का अध्ययन करने के इच्छुक छात्रों का 10+2 स्तर पर एक विषय के रूप में गणित का अध्ययन होना अनिवार्य है।

एम.ए कार्यक्रमों हेतु पात्रता

सभी पाठ्यक्रमों के लिए न्यूनतम पात्रता मानदण्ड किसी मान्यता प्राप्त विश्वविद्यालय से 55 प्रतिशत अंक (अथवा समतुल्य ग्रेड) के साथ किसी भी विषय में स्नातक उपाधि है ।

परिशिष्ट–ख

विश्वविद्यालय के अधिकारी

(31 मार्च, 2012 तक)

प्रोफेसर श्याम बी. मेनन	कुलपति
प्रोफेसर चन्दन मुखर्जी	पंजीयक (कार्यवाहक)
आशा आर रुंगटा	वित्त नियंत्रक

शिक्षालय के अधिष्ठाता

प्रोफेसर कुरियाकोस मंकूट्टम	अधिष्ठाता (डीन), व्यवसाय, लोक नीति एवं सामाजिक उद्यमिता
प्रोफेसर सलिल मिश्र	अधिष्ठाता, ललित अध्ययन शिक्षालय
प्रोफेसर चन्दन मुखर्जी	अधिष्ठाता, विकास अध्ययन शिक्षालय एवं मानव पारिस्थितिकी शिक्षालय
प्रोफेसर अशोक नागपाल	अधिष्ठाता, मानव अध्ययन शिक्षालय
प्रोफेसर शिवाजी के पणिक्कर	अधिष्ठाता, संस्कृति एवं सृजनात्मक अभिव्यक्ति शिक्षालय
प्रोफेसर गीता वेंकटरमन	अधिष्ठाता, स्नातक अध्ययन शिक्षालय

केन्द्रों के सभापति

प्रोफेसर विनीता कौल	प्रारंभिक बाल शिक्षा और विकास केन्द्र
प्रोफसर संजय शर्मा	निदेशक, सामुदायिक ज्ञान केन्द्र
प्रोफेसर चन्दन मुखर्जी	अधिष्ठाता (डीन), सामाजिक विज्ञान अनुसंधान प्रविधि केन्द्र

विश्वविद्यालय के अन्य अधिकारी

प्रोफेसर विजया एस. वर्मा	सलाहकार (योजना)
डॉ. देबल सी कार	पुस्तकालयाध्यक्ष
डॉ. श्रीनिवास	निदेशक, आईटी (सेवाएं)

परिशिष्ट–ग

शासी निकायों की बैठक

विश्वविद्यालय न्यायालय की प्रथम बैठक दिनांक 23 नवम्बर 2011 को राजनिवास में सम्पन्न हुई।

उपस्थित सदस्य

1.	श्री तेजन्दर खन्ना , कुलाधिपति लेफ्टिनेंट गवर्नर , दिल्ली	–	सभाध्यक्ष
2.	प्रोफेसर श्याम बी.मेनन कुलपति, ए.यू.डी	–	सभापति
3.	डॉ. किरण कार्णिक पूर्व अध्यक्ष, एन.ए.एस.एस.सी.ओ.एम	–	सदस्य
4.	प्रोफेसर एस.आर. हाशिम पूर्व सदस्य–सचिव, योजना आयोग	–	सदस्य
5.	प्रोफेसर के. सच्चिदानंदन पूर्व सचिव, साहित्य अकादमी	–	सदस्य
6.	डॉ. किरण दातार सदस्य, प्रबंधन बोर्ड, ए.यू.डी	–	सदस्य
7.	न्यायमूर्ति लीला सेठ पूर्व मुख्य न्यायाधीश, हिमाचल प्रदेश	–	सदस्य
8.	सुश्री आशा आर. रूंगटा वित्त नियंत्रक, ए.यू.डी	–	सदस्य
9.	श्री आनन्द प्रकाश प्रमुख सचिव, उच्च शिक्षा	–	सदस्य
10.	डॉ. बी.पी. जोशी पंजीयक,जी.जी.एस.आई.पी,विश्वविद्यालय	–	सदस्य
11.	प्रोफेसर चन्दन मुखर्जी पंजीयक, ए.यू.डी	–	सचिव
12.	प्रो. अशोक नागपाल अधिष्ठाता, (एस.एच.एस), ए.यू.डी	–	सदस्य

प्रबंधन बोर्ड

प्रबंधन मण्डल की ग्यारहवीं बैठक दिनांक 14 नवम्बर 2011 को सम्पन्न हुई।

उपस्थित सदस्य

1.	प्रोफेसर श्याम बी0 मेनन, कुलपति	–	सभापति
2.	प्रोफेसर एन. आर. माधव मेनन	–	सदस्य
3.	डॉ. किरण दातार	–	सदस्य
4.	श्री आनन्द प्रकाश प्रधान सचिव, (उच्च शिक्षा) राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र, दिल्ली सरकार	–	सदस्य
5.	श्री डी.एम सपोलिया प्रधान सचिव(वित्त) राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र, दिल्ली सरकार	–	सदस्य
6.	प्रोफेसर अशोक नागपाल	–	सदस्य
7.	प्रोफेसर चन्दन मुखर्जी	–	सदस्य–सचिव
8.	सुश्री आशा आर. रुंगटा	–	विशेष रूप से आमंत्रित

अकादमिक परिषद

विश्वविद्यालय की अकादमिक परिषद की पहली बैठक 17 अगस्त, 2011 को आयोजित की गई।

उपस्थित सदस्य

1.	प्रोफेसर श्याम बी. मेनन, कुलपति	–	सभापति
2.	प्रोफेसर ए. के.शर्मा, यू.जी.सी द्वारा नामित	–	सदस्य
3.	प्रोफेसर अशोक नागपाल, अधिष्ठाता, एच.एच.एस	–	सदस्य
4.	प्रोफेसर सलिल मिश्र, अधिष्ठाता, एस.एल.एस	–	सदस्य
5.	प्रोफेसर गीता वेंकटरमन, अधिष्ठाता, एस.यू.एस	–	सदस्य
6.	प्रोफेसर शिवाजी पणिक्कर, अधिष्ठाता, एस.सी.सी.ई	–	सदस्य
7.	प्रोफेसर हनी ओबरॉय वहाली, एच.एच.एस	–	सदस्य
8.	प्रोफेसर विनीता कौल, निदेशक, सी.ई.सी.ई.डी	–	सदस्य
9.	प्रोफेसर डेनिस लेइटन, एस.एल.एस / एस.यू.एस	–	सदस्य
10.	डॉ. सुमंगला दामोदरन, एस.डी.एस	–	सदस्य
11.	डॉ. प्रवीण सिंह, एस.एच.ई	–	सदस्य
12.	प्रोफेसर कुरियाकोस ममकूट्टम, एस.बी.पी.पी.ए.सई	–	सदस्य

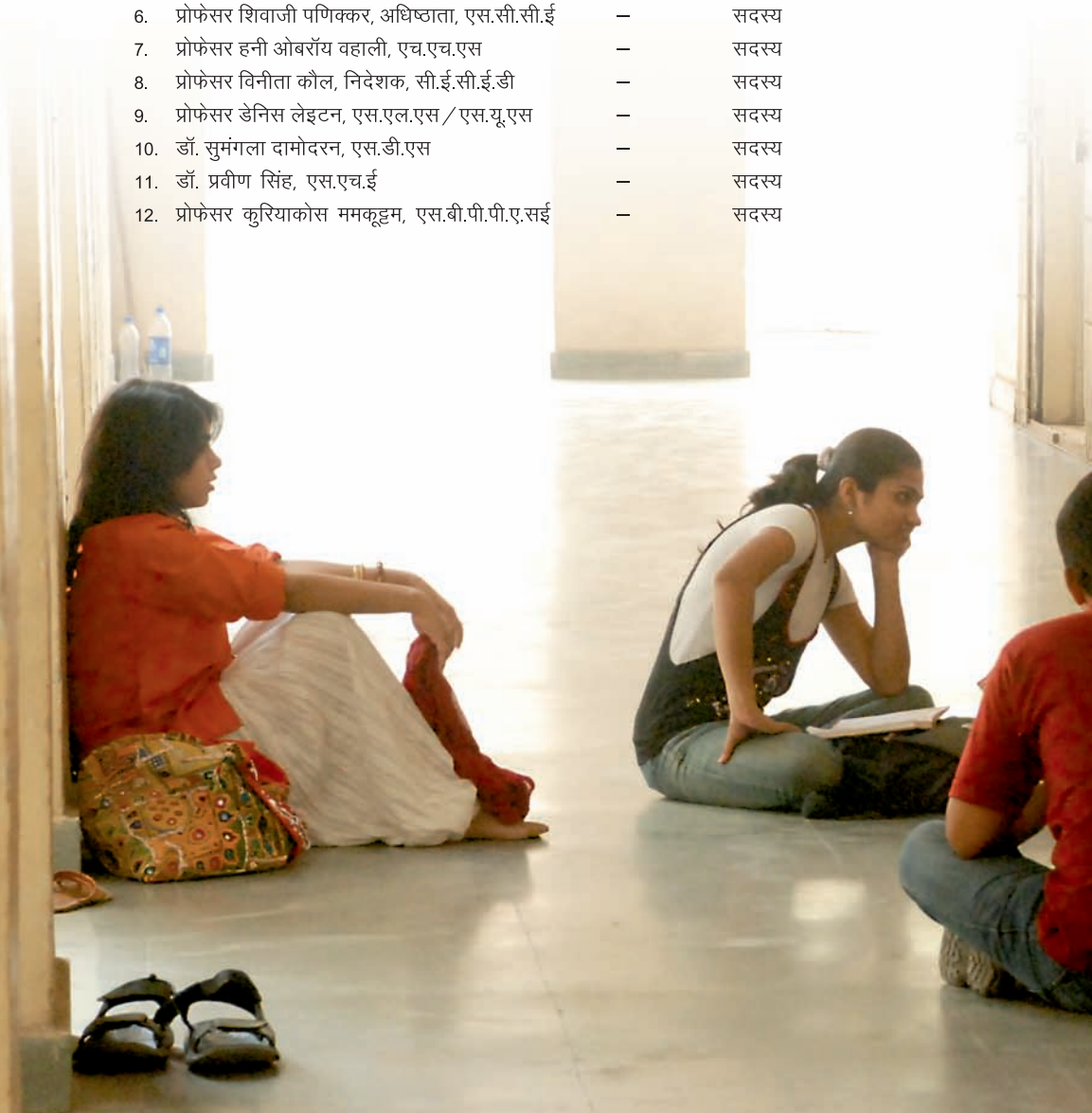

वित्त समिति

वित्त समिति की पांचवी बैठक 21 सितम्बर, 2011 को आयोजित की गई।

उपस्थित सदस्य

1.	प्रोफेसर श्याम बी0 मेनन, कुलपति	–	सभापति
2.	श्री डी0 एम0 सपोलिया मुख्य सचिव (वित्त), जी.एन.सी.टी, दिल्ली	–	सदस्य
3.	श्री आनन्द प्रकाश मुख्य सचिव (उच्च शिक्षा), जी.एन.सी.टी, दिल्ली	–	सदस्य
4.	डॉ.किरण दातार	–	सदस्य
5.	सुश्री आशा रानी रूंगटा वित्त नियंत्रक	–	सचिव
6.	प्रोफेसर अशोक नागपाल अधिष्ठाता , एच.एच.एस	–	विशेष रूप से आमंत्रित
7.	प्रोफेसर चन्दन मुखर्जी अधिष्ठाता , एस.डी.एस एवं पंजीयक	–	विशेष रूप से आमंत्रित

स्थापना समिति

सीापना समिति की छठी बैठक 9 नवम्बर, 2011 को आयोजित की गई।

उपस्थित सदस्य

1.	प्रोफेसर श्याम बी. मेनन, कुलपति	अध्यक्ष
2.	डॉ. किरण दातार	सदस्य
3.	प्रोफेसर अशोक नागपाल	सदस्य
4.	प्रोफेसर चन्दन मुखर्जी	सदस्य सचिव
5.	प्रोफेसर ए.आर. खान	विशेष रूप से आमंत्रित
6.	सुश्री आशा आर. रूंगटा	विशेष रूप से आमंत्रित
7.	डॉ. एस. के. पुलिंस्त, उप–पंजीयक (प्रशासन)	विशेष रूप से आमंत्रित

परिशिष्ट–घ

अध्ययन बोर्ड

विश्वविद्यालय ने निम्नलिखित शिक्षालयों के लिए अध्ययन बोर्ड का गठन किया है :–

1. व्यवसाय,लोक नीति एवं सामाजिक उद्यमिता शिक्षालय
2. विकास अध्ययन शिक्षालय
3. शैक्षिक अध्ययन शिक्षालय
4. मानव पारिस्थितिकी शिक्षालय
5. मानव अध्ययन शिक्षालय
6. ललित अध्ययन शिक्षालय
7. स्नातक अध्ययन शिक्षालय

निम्न शिक्षालयों के लिए अध्ययन बोर्ड का गठन अभी किया जाना है:–

1. संस्कृति व सृजनात्मक अभिव्यक्ति शिक्षालय
2. डिजाइन शिक्षालय

परिशिष्ट–ड.

आर.टी.आई अधिनियम

आर.टी.आई अधिनियम, 2005 की धारा 4 (1) के तहत, आवश्यकतानुसार अम्बेडकर विश्वविद्यालय , दिल्ली द्वारा 17 नियमावलियाँ तैयार की गयी हैं जो इसकी वेबसाईटः www.aud.ac.in पर उपलब्ध है।

नियमावली

1. ए.यू.डी की संस्था, कार्यों व कर्तव्यों का ब्यौरा।
2. इसके अधिकारियों व कर्मचारियों की शक्तियां और कर्तव्य।
3. निर्णयन की प्रक्रिया में पर्यवेक्षण और उत्तरदायित्व के उचित माध्यम को सम्मिलित करना।
4. इसके प्रकार्य के निष्पादन के लिए विश्वविद्यालय द्वारा निर्धारित किए गए मानक।
5. अपने प्रकार्यों के निष्पादन हेतु विश्वविद्यालय के स्वामित्व में या इसके नियंत्रण में या इसके कर्मचारियों द्वारा उपयोग किये जा रहे नियम विनियम, निर्देश, नियमवाली व अभिलेख।
6. विश्वविद्यालय के स्वामित्व में या इसके नियंत्रण के अंतर्गत दस्तावेजों की श्रेणियों का विवरण।
7. इसकी नीति के गठन या कार्यान्वयन के संबंध में पब्लिक के सदस्यों के परामर्श या प्रतिनिधित्व की व्यवस्था का ब्यौरा।
8. अपनी ओर से या सलाह के उद्देश्य से गठित दो या अधिक व्यक्तियों वाले परामर्शदात्री बोर्ड, परिषद, समिति व अन्य निकायों (क्या उन बोर्ड, परिषद, समिति व अन्य निकायों की बैठकें जनता के लिए खुली हैं या ऐसी बैठकों के कार्यवृत्त जनता के लिए सुलभ प्राप्य हैं) का विवरण।
9. इसके अधिकारियों व कर्मचारियों की निर्देशिका।
10. अपने विनियमों में अधिकारियों और कर्मचारियों के द्वारा प्राप्त मासिक पारिश्रमिक सहित मुआवजे की प्रणाली को भी बताया जाए।
11. ऐसी रिपोर्ट जिसमें हर एजेंसी को निर्धारित किये गए बजट की जानकारी हो। इस रिपोर्ट में सभी एजेंसियों की योजनाओं एवं प्रत्येक योजना के लिए प्रस्तावित व्यय तथा उसके संवितरण की जानकारी भी हो।
12. ऐसा विवरण जिसमें रियायत (सब्सिडी) कार्यक्रमों के निष्पादन की नीति और आबंटित राशि सहित ऐसे कार्यक्रमों के लाभार्थियों की भी जानकारी हो।
13. ऐसे ब्यौरे जिसमें उन प्राप्तकर्ताओं की जानकारी हो जिनको रियायतें, परमिट या प्राधिकार प्रदान किये गए हैं।
14. ऐसी जानकारी के सम्बन्ध में विवरण जो इलेक्ट्रॉनिक रूप को कम करने के लिए उपलब्ध हों या उसके द्वारा धारित हों।
15. सूचना प्राप्त करने के लिए नागरिकों को दी गयी सुविधाओं का विवरण, जिसमें पुस्तकालय या वाचनालय के काम के घंटे भी शामिल हों , अगर उन्हें सार्वजनिक उपयोग के लिए बनाया गया है।
16. जन सूचना अधिकारियों के नाम, पद तथा उनसे सम्बंधित अन्य जानकारी का विवरण।
17. यथा निर्धारित सूचनाओं का प्रकाशन एवं समय–समय पर इन सूचनाओं में आवश्यक फेरबदल करना ।

आर.टी.आई हेतु अधिकारी

प्रथम अपीलीय प्राधिकरण एवं सार्वजनिक सूचना अधिकारी

क्रम.संख्या.		नाम	पदनाम
1	प्रथम अपीलीय प्राधिकारी	प्रो. चन्दन मुखर्जी	पंजीयक
2	सार्वजनिक सूचना अधिकारी (पी.आई.ओ)	श्री पी.के. कटारमल	उप–पंजीयक
3	नोडल अधिकारी	श्री सुचा सिंह	सहायक–पंजीयक (प्रशासन)

सहायक सार्वजनिक सूचना अधिकारी

क्रम.संख्या.	नाम	पदनाम	सूचना क्षेत्र
1	श्री सुचा सिंह	सहायक– पंजीयक	प्रशासन प्रभाग से संबंधित सभी सूचनाएँ
2	श्री संथानम आयंगर	सहायक– पंजीयक	अकादमिक सेवाओं से संबंधित सभी सूचनाएँ
3	डॉ. आर.डी. शर्मा	सहायक– पंजीयक	वित्त प्रभाग से जुड़ी सभी सूचनाएँ
4	श्री नरेन्द्र मिश्रा	सहायक– पंजीयक	आई.टी सेवाओं से संबंधित सूचनाएँ
5	सुश्री अर्चना शर्मा	सहायक–पंजीयक	योजना प्रभाग से जुड़ी सभी सूचनाएँ
6	श्री राजीव कुमार	सहायक– पंजीयक	विद्यार्थी सेवाओं से संबंधित सभी सूचनाएँ

अनुसूचित जाति / जनजाति हेतु सम्पर्क अधिकारी

विश्वविद्यालय में भर्ती व दाखिले में अनु.जाति / जनजाति के पक्ष में आरक्षण नीति के प्रभावी कार्यान्वयन हेतु डॉ. अरूण कुमार मोंडीकोटा, सहायक प्राध्यापक, विकास अध्ययन शिक्षालय, को ए.यू.डी में सम्पर्क अधिकारी के रूप में नामांकित किया गया है ।

सम्पर्क अधिकारी के कर्तव्य निम्नलिखित हैं

1. अनु.जाति / जनजाति के आरक्षण आदेशों और दूसरे स्वीकृत लाभों को विश्वविद्यालय के अनुपालन द्वारा सुनिश्चित करना।
2. मंत्रालय / विभाग के नियोक्ता प्राधिकारी द्वारा निर्धारित वार्षिक विवरण की जांच करना और शीघ्रतम उसकी प्रस्तुति सुनिश्चित करना और वार्षिक विवरण का समेकन और डी.ओ.पी.टी (DOPT) को ऐसे वार्षिक विवरण भेजना।
3. अनारक्षण के सभी प्रस्तावों की उचित रूप से जाँच करना और पूरी संतुष्टि के बाद यह प्रमाणित करना कि ऐसे अनारक्षण अपरिहार्य हैं और इस संबंध में सभी कदम विश्वसनीयता से उठाये गए हैं।
4. अपेक्षित सूचना की आपूर्ति, सवालों के जवाब देने व संदेह के स्पष्टीकरण हेतु मंत्रालय विभाग के बीच सम्पर्क स्थापित करना।
5. रोस्टर की वार्षिक जांच आयोजित करना और ऐसी जांच का रिकार्ड रखना।
6. अपने कर्तव्यों व कार्य निष्पादन में अनु.जाति / जनजाति आयोग को आवश्यक सहायता प्रदान करना।

परिशिष्ट च

समितियों की सूची

विश्वविद्यालय की विभिन्न संस्थागत प्रक्रियाओं जैसे कि– अकादमिक विनियमों, वित्तीय विनियमों, सेवा विनियमों को प्रशासित करने हेतु नियमों के गठन के लिए निम्नलिखित कार्य समूह की स्थापना की गई है।

प्रोफेसर चंदन मुखर्जी	अध्यक्ष
प्रोफेसर ए.आर. खान, इग्नू	
श्री सी. आर. पिल्लई	वित्त नियंत्रक, ए.यू.डी
प्रोफेसर कुरियाकोस ममकूट्टम	रजिस्ट्रार, ए.यू.डी
आशा आर. रूंगटा	

स्टाफ के लिए सेवा शर्तें व भर्ती–नियमावली गठन समिति–

यह समिति समय–समय पर प्रबंधन बोर्ड द्वारा पारित विभिन्न संकल्पों पर विचार करेगी और उपयुक्त नियमावली का गठन करेगी।

पंजीयक	सभापति
वित्त नियंत्रक या नामित सदस्य	
डॉ. देबल सी. कार, पुस्तकालयाध्यक्ष	
श्री आर. त्यागराजन, भूतपूर्व उप–पंजीयक, इग्नू	
डॉ. प्रवीण सिंह, सहायक प्रोफेसर, एस.एच.ई	
उप–पंजीयक (प्रशासन)	सदस्य सचिव

स्थायी समिति (अकादमिक कार्यक्रम)

यह समिति शिक्षालय अध्ययन बोर्ड द्वारा परिकल्पित विभिन्न चरणों के माध्यम से विभिन्न अकादमिक कार्यक्रमों के विकास की मानिटरिंग करेगी एवं उसे मार्गदर्शन प्रदान करेगी।

कुलपति या उसके द्वारा नामित सदस्य	अध्यक्ष
प्रोफेसर चन्दन मुखर्जी	
प्रोफेसर अशोक नागपाल	
प्रोफेसर शिवाजी पणिक्कर	
प्रोफेसर गीता वेंकटरमन	
प्रोफेसर सलिल मिश्र	सदस्य सचिव

स्थायी समिति (छात्र सेवाएं)

यह समिति विद्यार्थी सेवाओं से संबंधित सभी मामलों की जांच करने के लिए जिम्मेदार होगी।

प्रोफेसर के ममकूट्टम, निदेशक, एस.बी.पी.पी.एस.ई	अध्यक्ष
प्रोफेसर विनीता कौल, निदेशक, सी.ई.सी.ई.डी	
प्रोफेसर हनी ओबराय, वहाली, एसएचएस	
डॉ. सुमंगला दामोदरन, एस.डी.एस	
डॉ. प्रवीण सिंह, एस.एच.ई	
डॉ. आभा वरमानी, उप पंजीयक (छात्र सेवाएं)	सदस्य सचिव

अनुसूचित जाति / जनजाति के लिए सम्पर्क अधिकारी

डॉ.अरूण कुमार मोन्डिटोका, सहायक प्रोफेसर, एस.डी.एस, विश्वविद्यालय में नीति के कार्यान्वयन में अनु.जाति व अनु.जनजाति के आरक्षण व छूट की जांच करेगें।

अकादमिक सेवा परामर्शदात्री समिति

कुलपति अधिष्ठाता (अकादमिक सेवाएं)	अध्यक्ष
प्रोफेसर ए.आर. खान, इग्नू	सदस्य
प्रोफेसर कुरियाकोस ममकूट्टम, निदेशक, एस.बी.पी.पी.एस.ई	सदस्य
उप–पंजीयक (अकादमिक सेवाएं)	सदस्य सचिव

ए.यू.डी के लिए कार्य समूह

डॉ.अस्मिता काबरा	सभापति एवं सयोंजक
डॉ. राधिका गोविन्द	
डॉ. तनुजा कोठियाल	
डॉ. प्रीति मान	
डॉ. उषा मुदिगंति	
डॉ. रोहित नेगी	
सुश्री संजू थॉमस	

रैगिंग–विरोधी समिति और रैगिंग– विरोधी दस्ता

पंजीयक	सभापति
प्रोफेसर सलिल मिश्र, अधिष्ठाता, (एस.एल.एस)	
डॉ. सुरजीत मजूमदार, एसोसिएट प्रोफेसर	
प्रोफेसर अशोक नागपाल, अधिष्ठाता (एस.एच.एस)	
श्री विनोद आर., वरिष्ठ वार्डन	

रैगिंग–विरोधी दस्ता

प्रोफेसर हनी ओबरॉय वहाली
डॉ. सुरेश बाबू, सहायक प्राध्यापक
डॉ. अभिजीत एस. बर्डपुरकर, सहायक प्राध्यापक
डॉ. राधिका गोविन्द, सहायक प्राध्यापक
डॉ. अंशु गुप्ता, सहायक प्राध्यापक
श्री रिक मित्रा, सहायक प्राध्यापक
डॉ. अरूण कुमार मोन्डिटोका, सहायक प्राध्यापक
सुश्री गुंजन शर्मा, सहायक प्राध्यापक
डॉ. योगेश स्नेही, सहायक प्राध्यापक
श्री विक्रम सिंह ठाकुर, सहायक प्राध्यापक
श्री विनोद आर., वरिष्ठ वार्डन
डॉ. ओइनम हेमलता देवी, वार्डन

परिशिष्ट–छ

विश्वविद्यालय की गतिविधियाँ

विरोध में – टैगोर

15 दिसम्बर, 2011 को अम्बेडकर विश्वविद्यालय दिल्ली में रवीन्द्र टैगोर की 150 वीं वर्षगांठ बनाने के लिए सांस्कृतिक अकादमिक कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में यह बताया गया कि किस प्रकार टैगोर ने अपने लेखों के माध्यम से अपने समय के राजनैतिक, सांस्कृतिक व सामाजिक मानकों के खिलाफ विरोध किया था मई, 1919 में जलियांवाला बाग हत्याकाण्ड के विरोध में टैगोर को प्रदान की गई नाइटहुड उपाधि का त्याग कर उन्होंने प्रत्यक्ष विरोध किया था।

कार्यक्रम की मुख्य विशेषताएं

- कार्यक्रम की शुरूआत पत्र के पठन से हुई जिसे उन्होंनें तथाकथित सभ्य सरकार द्वारा की गई हिंसा के विरोध में लिखा था।
- कस्तूरी दत्ता, अकादमिक फैलो, विकास अध्ययन शिक्षालय ने 'जोड़ी तोर दक शूने केऊ ना आशे' (अगर तुम्हारे बुलाने पर कोई प्रतिक्रिया न दे) और 'बांग्ला माटी बांग्लार जोल' (बंगाल की मिट्टी व जल) जैसे गाने गाए जिसे उन्होंनें 1905 में लार्ड कर्जन द्वारा बंगाल विभाजन के विरोध में लिखा था।
- अंशुमिता पाण्डे, सहायक प्रोफेसर, मानव अध्ययन शिक्षालय ने 'पैरट्स टेल' एक लघु कथा का पाठन किया, जिसमें शिक्षा प्रणाली के खिलाफ कवि के क्रोध को दर्शाया गया जो बच्चों में रटने की प्रवृति को विकसित करता है और उनकी सृजनात्मक कल्पना को पूरी तरह से नष्ट करता है।
- सत्यकेतु सांकृत, एसोसिएट प्रोफेसर, ललित अध्ययन शिक्षालय ने कवि व महात्मा–उनके सामंजस्य व विवाद के संबंध पर विवेचना की।
- सत्यजीत रे द्वारा रविन्द्रनाथ टैगोर पर बनायी गयी डाक्यूमेंट्री की स्क्रीनिंग की गयी । गोपालजी प्रधान, एसोसिएट प्रोफेसर, ललित अध्ययन शिक्षालय ने टैगोर की हिन्दी में अनूदित कविताओं का पाठन किया।
- रुक्मिणी सेन, सहायक प्राध्यापक, ललित अध्ययन शिक्षालय ने नृत्य नाटिका चंडालिका का प्रस्तुतीकरण किया। यह नृत्य नाटिका छुआछूत के खिलाफ टैगोर के विरोध,महिलाओं की दबी हुई काम इच्छाओं में उनकी खोज व उनकी बौद्ध आध्यात्मिकता पर आधारित थी।
- अनूप धर, एसोसिएट प्रोफेसर, मानव अध्ययन शिक्षालय ने टैगोर के कुछ उपन्यासों–गोरा एवं घर व बाहर (द होम एण्ड आउटसाइड) पर विवेचना की जिसमें टैगोर का विरोध स्पष्ट व अस्पष्ट रूप से दिखाई देता है। कार्यक्रम का अंत 'द वाइफस लैटर' के उद्धरण पाठन के साथ हुआ जहां रूढ़िवादी सामन्ती बंगाली परिवार की पत्नी ने घर की चारदीवारी से बाहर आकर अपनी पहचान हासिल की और स्वयं को स्वतंत्र किया।

हिस्ट्री वाक (इतिहास पदयात्रा)

19 फरवरी, 2012 को उत्तरी रिज क्षेत्र में 'हिस्ट्री वाक'' का आयोजन किया गया जहां ऐतिहासिक स्मारकों की बहुतायत है । इस सुहावने दिन की सुबह ए.यू.डी के सदस्य अपने परिवार एवं मित्रों के साथ म्युटिनी स्मारक में एकत्रित हुए।

ब्रिटिश की तरफ से लड़ते हुए लड़ाई में मारे गए, गायब या घायल हुए लोगों की स्मृति में ब्रिटिश ने गोथिक स्टाइल स्मारक का निर्माण किया था । 1857 के विद्रोह के उन्मूलन के बाद इस स्मारक की स्थापना 1863 में की गई जहां विद्रोहियों द्वारा बार–बार हमला किया जाता था।

इस स्थल से सभी लोग अशोक स्तम्भ की ओर बढ़े, जो लगभग 2300 वर्ष पुराना है। फिरोजशाह तुगलक इस स्तम्भ को दिल्ली लाया था और उसने इस पर ब्राह्मी लिपि में शिलालेख लिखवाया था । इसके बाद सभी लोग बाड़ा हिन्दू राव अस्पताल में गए जहां एक पुरानी बावड़ी और 14वीं सदी की खगोलशास्त्रीय प्रयोगशाला है जो पीर गायब के नाम से मशहूर है। एकदन्त कथा के अनुसार संत (पीर) यहाँ रहस्यमयी रूप से गायब हो गए थे। फिर हम अगले स्मारक चौबुरजा गए जो 14वी सदी में बनाई गई मस्जिद है। इसके पेड़ों की छांव में सभी खाने–पीने के लिए बैठ गए। फिर हम दोनों तरफ से कंटीली झाड़ियों व पेड़ों से घिरे रास्ते पर आगे बढ़े जो अब उत्तरी रिंज का अभिन्न अंग है । ब्रिटिश ने इस क्षेत्र के कई हिस्सों को साफ कर दिया क्योंकि 1857 की ग्रीष्म ऋतु के दौरान यहाँ कई विद्रोही गतिविधियां घटित हुई थीं। फ्लैगस्टाफ टावर दिल्ली विश्वविद्यालय के मुख्य द्वार के नजदीक रिज के सबसे उच्चतम हिस्से में स्थित है। मई 1857 में जब स्वतंत्रता सेनानियों ने दिल्ली पर आक्रमण किया तो इस स्मारक में ब्रिटिश परिवारों को करनाल भागने से पहले शरण दी गयी थी। उस समय की यादें ताज़ा करने के लिए विलियम डैलरीमपल की पुस्तक ''द लास्ट मुगल" के उद्धरण का पाठन किया गया। यह पदयात्रा दिल्ली विश्वविद्यालय के कुलपति– कार्यालय के समक्ष हरे–भरे मैदान पर विश्राम के साथ समाप्त हुई। इस पूरी यात्रा के दौरान पशु–पक्षियों को देखना, वृक्षों व पुष्पों की सुगंध शामिल थी तथा कुछ सुखद क्षणों की सुन्दर तस्वीरें भी ली गयीं।

शैक्षिक अध्ययन शिक्षालय

वर्ष 2011–12 के आरंभिक महीनों के दौरान अधिकांश गतिविधियों में संकाय भर्ती व सामूहिक प्रतिबिंबन और शिक्षालय के संकल्पना नोट, अवलोकन विवरण व लक्ष्यों के समूह पर आगमन हेतु गहन विचार–विमर्श शामिल थे। अनुवर्ती महीनों में शिक्षालय का मुख्य उद्देश्य एम.ए./एम.एड पाठ्यक्रम का विकास था । इसके लिए शिक्षालय ने नियमित आंतरिक विचार–विमर्श और अन्य संस्थानों के विशेषज्ञ सहित परामर्शदात्री कार्यशालाओं की शृंखला का आयोजन किया ।

क्रम.संख्या.	दिनांक	विशेषज्ञ / सम्बद्ध प्रतिभागी
1.	28 फ़रवरी 2012	प्रोफेसर ए.के शर्मा, अम्मन मदान,अविनाश कुमार सिंह,फरीदा खान, नंदिनी मांजरेकर एवं रमा मैथ्यू
2.	5 मार्च 2012	प्रोफेसर पद्मा सारंगपाणि,जयश्री माथुर, शारदा बालागोपालन और फरीदा खान
3.	22 एवं 23 मार्च 2012	प्रोफेसर ए.के शर्मा, आर.गोविन्द,के रामचंद्रन, शेषाद्री और जयश्री माथुर
4.	एस.ई.एस संकाय ने शिक्षा में स्नातकोत्तर कार्यक्रम के स्वरुप के सम्बन्ध में प्रोफेसर कृष्ण कुमार और विमला रामचंद्रन से भी मुलाकात की तथा प्रोफेसर जलालुद्दीन एवं फरीदा खान के साथ मिलकर विचार–विमर्श की एक श्रृंखला आयोजित की।	

ए.यू.डी में अनुसंधान परियोजनाएं

मानव अध्ययन शिक्षालय

- जनवरी, 2012 में राधिका गोविन्द, सहायक प्रोफेसर, मानव अध्ययन शिक्षालय द्वारा एम.ए जेंडर अध्ययन के अन्तिम वर्ष के छात्रों के लिए मूल अनुसंधान दक्षता पर एक दिन की कार्यशाला आयोजित की गई।

शैक्षिक अध्ययन शिक्षालय

- पदमा सारंगपाणि और राहुल मुखोपाध्याय के साथ जैन, मनीष ''कम्पेरेटिव इन्क्वायरी इन टू द पोस्ट आर.टी.ई स्कूल सिनेरियो इन इण्डियाः सर्वे ऑफ़ स्कूल्ज(संस्थागत गुणवत्ता,अध्यापक एवं अभिभावक)",एम.एच.आर.डी द्वारा समर्थित (2011 –2012)।

विकास अध्ययन शिक्षालय

- आईवी धर, सहायक प्रोफेसर विकास अध्ययन शिक्षालय ने "वीविंग द जैनेरम धाराः एक्सप्लोरिंग द क्रॉस–कल्चरल क्रिएशन ऑफ़ खासी एटायर्स इन असम–मेघालय", भौतिक संस्कृति, सृजन एवं उपयोगः समुदाय के भीतर का परिदृश्य पर कार्य करने वाले शिक्षकों के सहयोग से इस कार्यशाला का आयोजन किया । यह कार्यशाला उत्तरपश्चिमी फोरम, सामुदायिक केंद्र,ए.यू.डी (2011–12) द्वारा समर्थित थी।

ललित अध्ययन शिक्षालय

- वेंकटरमन, गीता को पुस्तक–लेखन परियोजना के लिए अम्बेडकर विश्वविद्यालय, दिल्ली द्वारा अप्रैल 2011 में पुरस्कृत किया गया । यह पुरस्कार पाठ्य–पुस्तक के लिए दिया गया था / यह पाठ्य पुस्तक ललित कला (लिबरल आर्ट्स) विद्यार्थियों हेतु बुनियादी गणित कार्यक्रम के लिए बनायी गयी थी। अम्बर हबीब (शिव नादर विश्वविद्यालय) एवं शोभा बागई (दिल्ली विश्वविद्यालय) इस परियोजना में सह–लेखक थे।

साहित्यिक सोसायटी

ए.यू.डी में अकादमी सत्र 2011–12 के मानसून सत्र में साहित्यिक सोसायटी की स्थापना की गयी थी। तत्पश्चात दो छात्र साहित्यिक सोसायटी से संयुक्त सचिव के रूप में सदस्य चुने गए थे। कवि एवं अंग्रेजी के प्रोफेसर होशांग मर्चेन्ट के साथ 18 नवम्बर को साहित्यिक सोसायटी कलेन्डर की शुरुआत की गयी। उन्होंने अपनी आत्मकथा (जीवनी) "द मैन टू वुड वी क्वीन" के कुछ अंश श्रोताओं के समक्ष पढ़े । उसके बाद चर्चा के सक्रिय सत्र का आयोजन किया गया था। प्रो. आरी सीताज, कैपटाऊन विश्वविद्यालय ने 25 नवम्बर को "दक्षिण अफ्रीका 1970–1990 में प्रदर्शन और सामाजिक आन्दोलन" पर चर्चा की। रवीन्द्र नाथ टैगोर की जन्म शताब्दी के अवसर पर प्रो.आलोक भल्ला और आवेरी चौरे द्वारा 'टैगोर की खोज मेंरू एक आन्तरिक यात्रा' विषय पर चर्चा एवं कोलाज प्रदर्शन आयोजित किया गया। साहित्यिक सोसायटी ने 21 और 28 मार्च को प्रो. भल्ला (एस.एल.एस, ए. यू.डी) द्वारा दिए गए दो व्याख्यानः "लॉस्ट इन फारेस्ट ऑफ सिम्बल्सः कैन सम एनिमल, बर्ड, ट्री ऑर दजिन्न हेल्प अस अंडरस्टैंड मिथ एंड फोकलोर" एवं "क्राइसिस इन अयोध्याः ए रीडिंग ऑफ वन मिनिएचर पेंटिंग फ्रॉम कम्ब रामायण फोलियो" का आयोजन किया। मोइनक विश्वास एसोसिएट प्रोफेसर, फिल्म स्टडीज, जादवपुर विश्वविद्यालय,कलकता द्वारा निर्देशित एक फिल्म "स्प्रिंग इन द कालोनी" की स्क्रीनिंग की गयी, इस फिल्म की चर्चा के लिए निर्देशक स्वयं मौजूद थे।

अर्थशास्त्र से सम्बंधित विषयों पर संगोष्ठी श्रृंखला

ललित अध्ययन शिक्षालय में अर्थशास्त्र हेतु विषय समूह ने अपने सहपाठियों के कार्य से ए.यू.डी. समुदाय को अवगत कराने तथा अनुसंधान के विभिन्न मामलों से परिचित कराने के लिए आवधिक प्रस्तुतीकरण का एक क्रम शुरू किया। इस क्रम में आंतरिक संकाय एवं बाहरी विशेषज्ञों ने प्रस्तुतीकरण किया। संगोष्ठी के विभिन्न भागों का आयोजन इस प्रकार हुआः–

आन्तरिक

- 7 सितम्बर, 2011 को डा. सुरजीत मजूमदार द्वारा ''एक्सप्लोरिंग इंडियाज हाई ग्रोथ इन द करेंट सेंचुरी"
- 27 अक्टूबर, 2011 को डा. अरिन्दम बनर्जी द्वारा "ग्रेन बेज्ड एथानोल एण्ड न्यू इम्प्लीकेशन फॉर ग्लोबल फूड सिक्युरिटीः हैडिंग टुवर्ड्स डिजास्टर"
- 13 जनवरी, 2012 को डॉ. ज्योतिर्मय भट्टाचार्य द्वारा "भारतीय अर्थव्यवस्था में मूल्य निर्धारण"।
- 16 फरवरी, 2012 को डा. मीनाकेतन बेहेरा द्वारा ''ओडिशा में आदिम जनजातियों का विकास"।

बाह्य

- 23 नवम्बर, 2011 को डॉ. हाजीम साटो वरिष्ठ एसोसिएट शोध फैलो, इंस्टीट्यूट ऑफ डवलपिंग इकनोमिज (आई.डी.ई दृ जे.ई.टी.आर.ओ) द्वारा ''लैण्ड एक्विजिशन प्रोब्लम –द एन्टीनोमी ऑफ प्रोपर्टी राईट आन लैंड इन डेवलैपमैंट"।

"सिंपल डायनामिक्स मॉडल्स विद एप्लिकेशन्सः कन्वर्जेन्स,साइकल्स एंड च्वाइस" पर व्याख्यान माला

सिम्पल डायनेमिक मॉडल्सः पर तीन व्याख्यान श्रृंखलाएँ विशेष रूप से स्नातकोत्तर विद्यार्थियों के लिए आयोजित की गईं। इस अवसर पर प्रो. अंजन मुखर्जी ने व्याख्यान दिया जो कि इकॉनोमिक थ्योरी के प्रोफेसर रह चुके हैं

एवं रिज़र्व बैंक ऑफ इण्डिया, सेंटर फॉर इकोनोमिक स्टडीज एंड प्लानिंग, जेएनयू से सेवानिवृत्त हुए हैं। वर्तमान में यह नई दिल्ली के राष्ट्रीय सार्वजनिक वित्त एवं नीति संस्थान के जेएनयू फैलो हैं और इसके साथ ही यह अंतरराष्ट्रीय विकास केंद्र (आई.जी.सी), बिहार कार्यक्रम के कन्ट्री डायरेक्टर हैं। कश्मीरी गेट परिसर में इस व्याख्यान शृंखला में निम्न व्याख्यानों का आयोजन किया गया :–

व्याख्यान I : परिचय, 28 फरवरी, 2012
व्याख्यान II : कंटिन्यूअस मॉडल्स ओन द प्लेन, 7 मार्च 2012
व्याख्यान III : डिस्क्रिट मॉडल्स, 13 मार्च 2012

एम.ए पाठ्यक्रम में "पूंजीवाद,उपनिवेशवाद एवं विकास" पर विशेष व्याख्यान

एम.ए पाठ्यक्रम में "पूंजीवाद,उपनिवेशवाद एवं विकास" के एक भाग पर विशेष व्याख्यान आयोजित किया गया। यह व्याख्यान आर्थिक अध्ययन और योजना केंद्र, जेएनयू नई दिल्ली में अर्थशास्त्र के सेवानिवृत्त प्रो. उत्सा पटनायक द्वारा दिया गया था। ''औपनिवेशिक अवधि के दौरान भारत और ग्रेट ब्रिटेन के बीच आर्थिक संबंध" पर 6 मार्च, 2012 को व्याख्यान आयोजित किया गया था।

"भारत और वैश्विक अर्थव्यवस्था" पर विशेष व्याख्यान माला

एम.ए अर्थशास्त्र कार्यक्रम के लिए "भारत और वैश्विक अर्थव्यवस्था" पर प्रख्यात विद्वानों द्वारा एक विशेष व्याख्यान माला आयोजित की गई। तीन व्याख्यान शृंखलाओं में प्रत्येक की अवधि दो घंटे की थी। शृंखला में पहला व्याख्यान 30 मार्च, 2012 को प्रो. सी. पी चन्द्रशेखर, जवाहर लाल नेहरु विश्वविद्यालय , नई दिल्ली द्वारा 'आर्थिक संकट' पर दिया गया था।

इसके बाद दो अन्य व्याख्यान अप्रैल, 2012 में आयोजित किए गए ।

प्रकाशनः

1. सार्वजनिक लोक नीति व सामाजिक उद्यमिता शिक्षालय

लेख –

- अनिल,के,ए.मिश्र एवं डी सिंह (2011): " शारीरिक रूप से अक्षमों के लिए रोज़गार हेतु माइक्रो क्रेडिट उपकरण : गुजरात में बी.पी.ए के स्वयंसिद्ध कार्यक्रम का एक केस", यह लेख निर्मला, एस और एस.पूमिमा द्वारा सम्पादित 'प्रतिस्पर्धा की वृद्धि में माइक्रो फाइनेंस का प्रभाव तथा भारत में ग्रामीण बाज़ारों का विकास', मैकमिलिन, इण्डिया, में प्रकाशित हुआ।
- गुप्ता, अंशु,पीके कपूर, एच. फाम एवं पी.सी झा (2011): सॉफ्टवेयर रिलायबिल्टी एसेसमैंट विद ऑर एप्लीकेशन्स इन स्प्रिंगर सीरीज इन रिलायबिलिटी इंजीनियरिंग सीरीज,स्प्रिंगर–वेर्लग,लन्दन
- कैकर,निधि,स्मृति कौर एवं प्रेम वशिष्ठ (2011): ''एशिया और प्रशांत क्षेत्र में समृद्धि हेतु कृषि के नए रास्ते", यह प्रतिवेदन इंटरनेशनल फण्ड फॉर एग्रीकल्चरल डेवलपमेंट,रोम द्वारा प्रकाशित हुआ।

- कैकर,निधि एवं राघव गैहा (2011): "क्या खाद्य मूल्य मुद्रास्फीति गरीबों को चोट पहुंचाती है" 7, जुलाई को द इकॉनोमिक टाइम्स में प्रकाशित।
- कैकर,निधि एवं राघव गैहा (2012): ''गरीब अधिक कुपोषित हो गए हैं ?'' 18 फरवरी को इकॉनोमिक टाइम्स में प्रकाशित।
- कैकर,निधि एवं राघव गैहा(2012): "कैलोरी थ्रेशोल्डस एंड अंडरन्युट्रीशंस इन इण्डिया,1993–2004" जर्नल ऑफ पॉलिसी मॉडलिंग- http://dx.doi.org/10.1016/j.jpolmod.2012.04.002.
- राय,ए एवं के.अनिल (2011): "माइक्रोफाइनेंस संस्थानों,बैंकों का वित्तीय प्रदर्शन बनाम एन.बी.एफ.सी", इंटरनेशनल जर्नल ऑफ मैनेजमेंट एंड स्ट्रेटेजी(आई.जे.एम.एस),II
- राय, ए एवं के. अनिल (2011): "माइक्रोफाइनेंस संस्थानों का वित्तीय प्रदर्शन" यह लेख ओझा,एस तथा के.एन बंदनी द्वारा सम्पादित 'अस्तित्व और विकास के लिए वित्तीय सुधार लाना', ग्लोबल अलायन्स पब्लिशर, गाज़ियाबाद से प्रकाशित हुआ है।

2. विकास अध्ययन शिक्षालय

प्रस्तुत किये गए पेपर

- मंडल,सुब्रत (2011) ने "वैश्विक तेल अर्थव्यवस्था" विषय पर ,अकेडमिक स्टाफ कॉलेज,जवाहरलाल नेहरु विश्वविद्यालय,नई दिल्ली में पेपर प्रस्तुत किया।
- मंडल,सुब्रत (2011) ने 'व्यापार और सतत विकासः विकासशील देशों के मुद्दे' संगोष्ठी में "एमिशन ट्रेडिंग इन एम्बोडीड एमिशन" विषय पर, टाटा एनर्जी रिसर्च इंस्टिट्यूट, नयी दिल्ली, में अपना पेपर प्रस्तुत किया।
- मंडल,सुब्रत (2012) ने 'हेल्थ–एनवायरनमेंट लिंकेज' सम्मलेन में "सेविंग्स इन हेल्थ कॉस्ट ड्यू टू फ्यूल स्विचिंग टू सीएनजी इन इण्डिया" विषय पर, जामिया मिलिया इस्लामिया, नयी दिल्ली में पेपर प्रस्तुत किया।
- मंडल,सुब्रत (2012) ने "ओप्टीमायजेशन ऑफ लैंड एंड एनर्जी यूज़ इन माउंटेन इकोसिस्टम,केस स्टडी फ्रॉम द हिमालयाज़", विश्व भारती विश्वविद्यालय,शांतिनिकेतन,बोलपुर में अपने पेपर का प्रस्तुतीकरण किया।
- मंडल, सुब्रत (2012) ने "वैल्यूएशन टेक्निक्स फॉर मॉडलिंग इकोलॉजी एंड इकॉनमी" विषय पर, इंडियन इंस्टिट्यूट ऑफ फारेस्ट मैनेजमेंट, भोपाल में पेपर प्रस्तुत किया।

पुस्तकों में प्रकाशित अध्याय

- धर, आइवी (2011): "असम थ्रु द प्रिज्म ऑफ रीआर्गेनाईजेशन एक्स्पेरिन्सस" यह अध्याय पाइ,सुधा और आशा सारंगी द्वारा सम्पादित पुस्तक 'इन्टेरोगेटिंग स्टेट्स रीआर्गेनाईजेशनः कल्चर,आइडेंटिटी एंड पॉलिटिक्स इन कंटेम्परेरी इण्डिया',रूटलेज, नयी दिल्ली में प्रकाशित हुआ।

3. शैक्षिक अध्ययन शिक्षालय

प्रस्तुत किये गए पेपर

- बनर्जी, राखी (2011) ''करीकूलम एंड पेडागोजी एट मिडल एंड सैकेंडरी स्कूल लैवल", गणित शिक्षा में राष्ट्रीय पहलः उत्तरी क्षेत्र सम्मेलन, दिल्ली।
- बनर्जी, राखी (2012): ''भारत में गणितीय शिक्षा अनुसंधानः मुद्दे एवं चुनौतियाँ" गणितीय शिक्षा में राष्ट्रीय पहलः राष्ट्रीय सम्मेलन, मुम्बई।
- जैन, मनीष (2011): ''इंट्रोड्यूसिंग ए टेक्स्टबुकः पॉलिसीस एंड कंटेस्टिएंस इन नाइनटिंथ कोलोनियल इण्डिया", भारत की तुलनात्मक शैक्षिक सोसायटी के वार्षिक अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन (सी.ई.एस.आई), हैदराबाद विश्वविद्यालय, में लेख प्रस्तुत किए गए।
- जैन, मनीष(2012): ''समकालीन भारत में शिक्षा में उभरती हुई प्रवृतिः मानव अधिकार परिदृश्य'', मानव अधिकार और नीतिशास्त्र शिक्षा पर यू.जी.सी द्वारा प्रायोजित कार्यशाला, जामिया मिलिया इस्लामिया, विश्वविद्यालय , दिल्ली।
- मैथ्यू, आर.मानसी थपलियाल (2012): ''डायरी राइटिंग एस ए टूल फॉर प्रोफेशनल डेवलपमैंट", अंग्रेजी भाषा के अध्यापक शिक्षकों हेतु दूसरा अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन, हैदराबाद।
- शर्मा, गुंजन (2011): ''एक्सपीरिएसिंग कास्ट इन ए मेट्रोपोलीस", साउथ एशिया इन ट्रांजिशन डिपार्टमेन्ट ऑफ सोशियोलॉजी एण्ड आक्सफोर्ड पावर्टी एण्ड ह्यूमन डवलपमेन्ट इनिशिएटिव, आक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी, आक्सफोर्ड,सम्मेलन में पेपर प्रस्तुत किया गया।
- थपलियाल, मानसी (2011): ''रिफलेक्टिव प्रैक्टिस एंड एंगेज्ड पेडागॉजीसः साइनपोस्टस फ्राम टीचर्स लाइव्स इन स्कूल्स" अंतरराष्ट्रीय ई.एल.टी.ए.आई सम्मेलन दिल्ली में पेपर प्रस्तुत किया गया।

पुस्तकों में प्रकाशित अध्याय

- माओ, अक्खा के. (2012): ''कान्ट्रैक्ट एंड इश्यूज ऑफ एजूकेशन इन माओ सोसायटी" यह अध्याय कैयसी एंड ए फ्रासिंस द्वारा सम्पादित पुस्तक 'ट्राइबल फिलासफी एंड कल्चरः माओ–नागा ऑफ नार्थ ईस्ट' , मित्तल पब्लिकेशन, नई दिल्ली में प्रकाशित हुआ।
- शर्मा, गुंजन (2012) ने इग्नू के प्राथमिक शिक्षा डिप्लोमा कार्यक्रम के लिए 5 प्रकार के मोड्यूल को प्रस्तुत किया :
  1. बच्चे और बचपनः एक परिचय
  2. बाल विकास की समझ
  3. संज्ञानात्मक विकास
  4. विकसित होते हुए बच्चे की समझः विचार एवं शिक्षकों का अनुभव
  5. अनुसंधान का परिचय

लेख

- जैन, मनीष (2011): ''कक्षा में उठे सवाल'' (क्वेशचन रेज्ड इन द क्लास), सामयिक वार्ता, 34 (5–6): 42–43

4. मानव पारिस्थितिकी शिक्षालय

प्रस्तुत किये गए पेपर

- देवी, ओइनम हेमलता (2011): "फूम्दिस और इसके प्रभावः मणिपुर के कारंग मछुआरों की एक सामाजिक–सांस्कृतिक प्रणाली", इंटर–कांग्रेस इन एंथ्रोपोलॉजी,ए.एस.आई,कलकत्ता।
- देवी,ओइनम हेमलता (2012): अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी 'संसाधन,जनजाति और राज्य',आर.जी.यू, अरुणाचल प्रदेश में " तिपाईमुख बांध और जन–आन्दोलन पर एक नज़र" विषय पर पेपर प्रस्तुत किया गया।
- देवी,ओइनम हेमलता (2012): "विस्थापन के मुद्दे और चुनौतियां", इंटर–कांग्रेस इन एंथ्रोपोलॉजी, लखनऊ विश्वविद्यालय।
- शाहबुद्दीन,गज़ाला, पंखुरी चौधरी एवं राजेश तदानी (2012): अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी 'बायोडाइवर्सिटी, इकोसिस्टम और रेसिलिएंस इन द कॉन्टेक्स्ट ऑफ ग्लोबल चेंज,चार्टिंग द वे फॉरवर्ड', द एनर्जी एंड रिसोर्सेज इंस्टिट्यूट,नई दिल्ली तथा ऑक्सफ़ोर्ड यूनिवर्सिटी में "बायोडाइवर्सिटी–लाइवहुड ट्रेड–ऑफ्स इन द वन पंचायत ऑफ सेंट्रल हिमाल्यास" विषय पर पेपर प्रस्तुत किया गया।
- शाहबुद्दीन,गज़ाला (2012): 'भारत में पर्यावरणीय मुद्दे' इंस्टिट्यूट ऑफ लाइफ–लॉन्ग लर्निंग,इतिहास विभाग, इन्द्रप्रस्थ कॉलेज, नई दिल्ली की कार्यशाला में "बोलचाल में विज्ञान और शासन" विषय पर पेपर प्रस्तुत किया गया।
- शाहबुद्दीन,गज़ाला एवं रमन कुमार (2011): भारतीय पक्षी विज्ञान के अंतरराष्ट्रीय सम्मलेन, सलीम अली सेंटर फॉर ओर्निथोलोजी एंड नेचुरल रिसोर्सेज(एस.ए.सी.ओ.एन),कोइम्बटोर में "अस्सेसिंग द स्टेटस एंड डिस्ट्रीब्यूशन ऑफ द ग्रेट स्लेटी वुडपेक्कर इन सब–हिमालयन उत्तराखंड" विषय पर पेपर प्रस्तुत किया गया।
- शाहबुद्दीन, गज़ाला (2012): 'पर्यावरण और इतिहास', नेहरु मेमोरियल म्यूजियम एंड लाइब्रेरी,नई दिल्ली के सम्मलेन में "वेन पीपल वर्क फॉर फॉरेस्ट्सः री–एग्ज़ामिनिंग कम्युनिटी फॉरेस्ट्री विद ए बायोलॉजिकल लेन्स इन द सेंट्रल हिमालयाज़, इंडिया" विषय पर पेपर प्रस्तुत किया गया।

पुस्तकों में प्रकाशित अध्याय

- देवी,ओइनम हेमलता (2011): इग्नू के पी.जी डिप्लोमा सस्टेनेबिलिटी साइंस कार्यकम के लिए 8 खण्डों का योगदान दिया।
  1. समाज एवं संस्कृति का परिचय
  2. मानव पारिस्थितिकी
  3. समाज और संस्कृति में स्थिरता
  4. पर्यावरण और मानव सम्बन्ध
  5. इक्विटी सिद्धांत
  6. मानव अधिकार और जिम्मेदारियां
  7. सामुदायिक सहभागिता
  8. अन्य जीवों के प्रति होमो सेपियन्स की जिम्मेदारी
- देवी, ओइनम हेमलता (2011–2012): यू.जी.सी–सी.ई.सी ई–कंटेंट प्रोग्राम, ई.एम.एम.आर.सी मणिपुर यूनिवर्सिटी, नेशनल मिशन प्रोग्राम ऑफ ई–पैकेजिंग, में 5 मोड्यूल का योगदान दिया।

1. मोड्यूल 43: सामाजिक और सांस्कृतिक मानव विज्ञान की अवधारणा और क्षेत्र
2. मोड्यूल 44: इतिहास,अर्थशास्त्र एवं मनोविज्ञान के साथ सामाजिक– सांस्कृतिक मानव विज्ञान के सम्बन्ध
3. मोड्यूल 45: राजनीतिक विज्ञान, भाषा –विज्ञान एवं समाजशास्त्र के साथ सामाजिक– सांस्कृतिक मानव विज्ञान के सम्बन्ध
4. मोड्यूल 49: समाज और संस्कृति
5. मोड्यूल 168: फुटनोट्स, सन्दर्भ,ग्रन्थ सूची और परिशिष्ट।

- नेगी, आर(2011): "माइनिंग बूम, कैपिटल एंड चीफ्स इन द न्यू कॉपरबेल्ट" यह अध्याय फ्रासेर ए. और एम. लार्मेर द्वारा सम्पादित पुस्तक 'ज़ाम्बिया,माइनिंग एंड निओलिबेरिस्मः बूम एंड बस्ट ऑन द ग्लोबलाइज्ड कॉपरबेल्ट' पालग्रेव मैकमिलन,न्यूयॉर्क में प्रकाशित हुआ।
- सिंह, प्रवीण (2011): "फ्लड कण्ट्रोल इन नार्थ बिहार,एन एनवायरनमेंट हिस्ट्री फ्रॉम द 'ग्राउंड –लेवल'(1850–1954)" यह अध्याय कुमार,दीपक, वी.दामोदरन एवं रोहन डिसुजा द्वारा सम्पादित पुस्तक 'द ब्रिटिश एम्पायर एंड द नेचुरल वर्ल्डः एनवायरनमेंटल एनकाउंटर्स इन साउथ एशिया',ऑक्सफ़ोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, नई दिल्ली में प्रकाशित हुआ।

लेख

- कामेइ आर.जी,डी.एस मौरो, डी.जे गौवर,आई.वैन वॉक्लैर, ई.शेराट्ट, ए. थॉमस,एस.बाबू, एफ.बोसाइट, एम. विलकिंसन एवं एस.डी बीजू (2012): "डिस्कवरी ऑफ ए न्यू फैमिली ऑफ एम्फीबियन्स फ्रॉम नार्थईस्ट इण्डिया विद एनशिएंट लिंक्स टू अफ्रीका", फिलोस्फिकल ट्रांसेक्शन ऑफ द रॉयल सोसायटी बी (22 फरवरी 2012 के ऑनलाइन संस्करण में प्रकाशित); DOI:10-1098/rspb.2012.0150.

- कुमार, रमन, गज़ाला शाहबुद्दीन एवं अजित कुमार (2011): "हाउ गुड आर मैनेज्ड फॉरेस्ट्स एट कंजर्विंग नेटिव वुडपैकर कम्युनिटीज? ए स्टडी इन सब–हिमालयन डिपटेरोकार्प फॉरेस्ट्स ऑफ नार्थवेस्ट इण्डिया" बायोलॉजिकल कन्वर्सेशन 144(6):1876–1884.
- नेगी,आर (2011): "सोमाली समुद्री डकैती की समझः वैश्वीकरण,संप्रभुता एवं न्याय", इकनोमिक एंड पोलिटिकल वीकली,जून 18–24:35–37.
- नेगी, आर (2011): "द माइक्रो पॉलिटिक्स ऑफ माइनिंग एंड डेवलपमेंट इन ज़ाम्बिया : इनसाइट्स फ्रॉम द नार्थवेस्टर्न प्रोविंस", अफ्रीकन स्टडीज क्वाटरली,12 (2):27–44

5 . मानव अध्ययन शिक्षालय

प्रस्तुत किये गए पेपर

- चौधरी,रचना (2012): "एन्जेन्डरिंग वायलेंस एंड सेक्सुएलिटी इन कान्टेम्परैरी हिंदी सिनेमा", अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में ब्रेव न्यू वर्ल्डः सेन्ट स्टीफन कालेज, दिल्ली विश्वविद्यालय में द जेन्डर्ड पोलिटिकल इकॉनोमी ऑफ टेररिज्म एंड फन्डामेंटालिज्म पर पेपर प्रस्तुत किया गया।
- गोविंद, राधिका (2011): "रेसिस्टिंग वायलेंस, एक्सपिरीएसिंग इम्पावरमेंट?एक्सप्लोरिंग पर्सनल एंड प्रोफेशनल स्ट्रगल ऑफ वूमन्स एन.जी.ओ एक्टीविस्ट इन उत्तर प्रदेश", विषय पर जामिया मिलिया इस्लामिया विश्वविद्यालय ,दिल्ली की अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी में जेन्डर, वायलेंस और डेवलपमैंट में पेपर प्रस्तुत किया गया।
- जीमो, लोवितोली एवं अक्खा के. माओ (2012): "मीनिग्स एंड सिग्नीफीकेंस ऑफ ट्रैडिशनल शाल्स अमंग द नागा ट्राईब्स (माओ एंड सूमी)", नार्थ–ईस्ट फोरम (एनईएफ) अम्बेडकर विश्वविद्यालय, दिल्ली द्वारा आयोजित कार्यशाला 'मेटेरियल कल्चरः कन्टेम्पेटरी क्रिएशन एंड यूज' में पेपर प्रस्तुत किया गया।
- करोल्लिल, ममता (2012): इंटरनेशनल इन्स्टीट्यूट ऑफ सोसायटी, नई दिल्ली के 'आफ्टर वेस्टर्न हैजीमोनीः सोशल साइंस एंड इट्स पब्लिक्स', 40वें विश्व सम्मेलन में ''लव इन द टाईम्स ऑफ च्वाईस– ए क्रास– कल्चरल लाईफ–स्टोरी स्टडी" पर लेख प्रस्तुत किया गया।
- करोल्लिल, ममता (2011): ''द स्लैब / सबमिसिव एंड द मास्टर विद देमः औटोनोमी, कंसेंट एंड द फैमिनिस्ट डिस्कोर्स", XIII आई.ए.डब्लू.एस महिला अध्ययन के अंतरराष्ट्रीय सम्मलेन, 'रैसिस्टिंग मार्जिनालाईजेशन, चैलेजिंग हेजीमोनीजः रीविजिनिंग जेंडर पालीटिक्स',वर्धा में पेपर प्रस्तुत किया गया।

प्रकाशित पुस्तकें / अध्याय

- धर, ए. (2011): ''कल्चरल स्टडीज एज़ लेबर ऑफ नेगोशिएशन इन हायर एजुकेशन" जर्नल ऑफ कल्चरल स्टडीज (संस्करणः ग्रेासबर्ग,लॉरेंस), 25(1),: रूटलेज. न्यूयार्क और लंदन।
- धर, ए. (2012): "वर्ल्ड ऑफ द थर्ड एंड ग्लोबल कैपिटलिज्म"(सह–लेखक), वर्ल्डव्यू प्रेस, नई दिल्ली।
- धर, ए. (2012): ''द एजूकेटेड सबजैक्ट" यह अध्याय रणवीर समाद्दार एवं सुनीत के. सेन द्वारा सम्पादित पुस्तक 'भारत में नए विषय और नए शासन', 329–375,: टलेज. लंदन, न्यूयार्क और नई दिल्ली में प्रकाशित हुआ।
- धर, ए. (2012): ''ग्रैवल इन द शूः नेशनलिज्म एंड वर्ल्ड ऑफ द थर्ड, रिथिंकिंग मार्कसिज्म" ए जर्नल ऑफ इकोनॉमिक्स, कल्चर एंड सोसायटी, 24 (1), : रूटलेज. न्यूयार्क एंड लंदन।

- धर, ए. (2012): ''मंदिर और पागलखाना" (सह–लेखक), एसाईलमः द मैगजीन फॉर डेमोक्रेटिक साइकोलाजी, 19 (1), (http://www.asylumonline.net/)
- नागपाल, अशोक (2011): "ए हिंदू रीडिंग ऑफ फ्रायड्स बियोन्ड द प्लेजर प्रींसिपल" यह अध्याय अख्तर,सलमान एवं मैरी कै ओ. नील द्वारा सम्पादित पुस्तक' ऑन फ्रायडस बियोन्ड द प्लेजर प्रींसिपल', कर्नाक बुक्स,लन्दन में प्रकाशित हुआ।
- ओबेराय, एच. (2012): "फ्राम वाइल्ड ग्रासलैंड्स टू नर्चर्ड गार्डन्सः द इनवर्ड जर्नी इन बुद्धिज्म, साईक्लोएनालिसिस एंड इनगेज्ड सोशियल एक्टीविज़्म" यह अध्याय 'कल्चर एंड साइकोएनालिसिस', इंडियन कांसिल ऑफ फिलासौफिकल रिसर्च, के संस्करण में प्रकाशित हुआ।

लेख

- नागलिया, शुभ्रा (2011): प्रेम चौधरी" पोलिटिकल इकोनोमी ऑफ प्रोडक्शन एंड रीप्रोडेक्शन-कास्ट, कस्टम एंड कम्युनिटी इन नार्थ इण्डिया" की पुस्तक समीक्षा, साउथ एशियन हिस्ट्री एंड कल्चर, खण्ड– 2, अंक –3,जुलाई, 440–442 ,: टलेज,यू.के.

6. ललित अध्ययन शिक्षालय

प्रस्तुत किये गए पेपर

- सेन,रुक्मिणी (2011): "नरेटिव्सः ट्रेसिंग जेनडर्ड वोइस ऑफ एक्सक्लूजन एन एनटाईटलमेंटस", राजनीति विज्ञान विभाग, जामिया मिलिया इस्लामिया, नई दिल्ली द्वारा आयोजित सम्मेलन 'ह्यूमन राईट्स एंड सोशल इन्क्लूजनः कंटम्परैरी कन्सर्न' में पेपर प्रस्तुत किया गया।
- वेंकटरमन,गीता (2011): "महिला और गणित–एक परिप्रेक्ष्य", फ्रंटियर्स ऑफ हिस्ट्री सीरीज,इण्डिया इंटरनेशनल सेंटर,दिल्ली
- वेंकटरमन,गीता (2011): "अध्यापकों का प्रशिक्षण", विषय पर पेपर 'गणितीय शिक्षा–प्रवृतियाँ एवं चुनौतियां', हैदराबाद विश्वविद्यालय, सम्मेलन में प्रस्तुत किया गया।
- वेंकटरमन,गीता (2012): "नए संस्थानः अवसर और चुनौतियां" विषय पर पेपर 'गणित में भारतीय महिला', द इंस्टि्ट्यूट ऑफ मैथमेटिकल साइंसेज,चेन्नई, सम्मेलन में प्रस्तुत किया गया।
- वेंकटरमन,गीता (2012): "स्नातक स्तर पर गणितीय शिक्षा", नेशनल इनिशिएटिव ऑन मैथमेटिक्स एजुकेशन–राष्ट्रीय सम्मेलन,एच.बी.सी.एस.ई मुंबई ।
- वेंकटरमन,गीता (2012): "ग्रुप्स एंड सिमिट्री", गणितम,शहीद भगत सिंह कॉलेज,दिल्ली।

प्रकाशित पुस्तकें /अध्याय

- बनर्जी, अरिन्दम एवं के.एन नायर (2011): 'स्ट्रक्चरल चेंजेस इन लैंड डिस्ट्रीब्यूशन एंड इट्स इम्पलीकेशन फॉर इम्प्रूविंग एक्सेस टू लैंड" यह अध्याय नारायणा, डी और रमन महादेवन द्वारा सम्पादित पुस्तक 'शेपिंग इंडियाः लैंड, पापुलेशन, इन्स्टीट्यूशन एंड स्टैट इन हिस्टोरिकल पर्सपेक्टिव',: रूटलेज,नई दिल्ली में प्रकाशित हुआ।
- बनर्जी, अरिन्दम (2011): "रिव्यूइंग द ग्लोबल फूड क्राईसिसः मैग्नीट्यूड, कॉजेज, इम्पैक्ट एंड पालिसी आप्शनस" बी.एन घोष द्वारा सम्पादित पुस्तक 'ग्लोबल फूड क्राइसिसः जैनेसिस, मैग्नीट्यूड, इम्पैक्ट एंड

पॉलिसी आप्शन्स', विज्डम बुक्स, यू.के. में प्रकाशित।

- बेहेरा, मीनाकेतन,(2011): ''रोल ऑफ नॉन–गर्वनमेंटल आर्गेनाइजेशन इन ट्राइब्ल डवलपमेंटः ए फोकस ऑन धन फाउंडेशन इन द कोरापुट डिस्ट्रिक्ट ऑफ ओडिशा" राज,पी.सुंदर (सं), 'वुमन एंड रूरल डवलपमेंट', नावेल कोरपोरेशन पब्लिकेशन, नई दिल्ली।
- डंगवाल, धीरेन्द्र, (2011): 'डाइवर्स लाईवलीहूड स्ट्रेटजीज एंड द चेंजिंग इकनोमी ऑफ कॉलोनियल उत्तराखंड", सिंह,चेतन(सं.) 'रेकॉगनाईजिंग हिमालयन डाइवर्सिटीः सोसायटी एंड कल्चर इन द हिमालय', आक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, नई दिल्ली।
- दास, बिधान चंद्र(2011):''दलित मूवमेंट मीडिया" जॉन, डी.एच.डाउनिंग(सं.) 'एनसाइक्लोपीडिया ऑफ सोशल मूवमेंट मीडिया', सेज पब्लिकेशन, नई दिल्ली।
- दास गुप्ता, चिरश्री(2011): "अनरैवेलिंग बिहार्स ग्रोथ मीरेकल",पाई,एस.(सं.), 'ऑक्सफोर्ड हैण्डबुक ऑन स्टेट पोलिटिक्स', ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, नई दिल्ली।
- कपाड़िया, अपर्णा(2012): "यूनीवर्सल पोयट, लोकल किंग्सः संस्कृत द रिटोरिक ऑफ किंगशिप एंड लोकल किंग्डम इन गुजरात", ऑर्सिनी, फ्रांचेस्का एवं समीरा शेख (सं.) 'आफ्टर तैमूर लैफ्टः मल्टीपल स्पैसेज ऑफ कल्चरल प्रोडक्शन एंड सर्कुलेशन इन फीफटीथ –सेंचुरी नार्थ इंडिया', ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, नई दिल्ली।
- कृष्णा, मुरली एम.(2012): ''पेडागोजिक प्रैक्टिस एंड द वायलेंस एगेंस्ट दलित इन स्कूलिंग" क्रिस्टीन स्लीटर, एस.बी उपाध्याय, अरविन्द मिश्रा एवं संजय कुमार (सं.) 'स्कूल एजुकेशन, प्लूरेलिज्म एंड मार्जिनलिटीः कम्पैरेटिव परस्पैक्टिव्स', ओरियन्ट ब्लैक स्वान, हैदराबाद से प्रकाशित।
- लेइटन,डेनिस पी(2012): "कम्पेरेटिविस्म एंड मॉडर्न इंडियन फिलोसफीः एक्सप्लैनिंग द कैरियर ऑफ सर्वपल्ली राधाकृष्णन", स्वीट,विल (सं.) 'माइग्रेटिंग टेक्स्ट एंड ट्रेडीशन्स, ओटावा यूनिवर्सिटी प्रेस, ओटावा।
- मजूमदार, सुरजीत(2011): "द एग्रेरियन कन्सट्रेंट ऑन इंडस्ट्रीलाइजेशनः हैज़ इंडिया आउटग्रोन द प्रोब्लम?", मोहन्ती, बिमल के. (सं.) 'इकोनामिक डवलपमेंट ऑफ इंडियाः इश्यूज एंड चैलेंजेज', न्यू सैन्चुरी पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली।
- मजूमदार, सुरजीत (2011): ''द स्टेट, इंडस्ट्रीलाइजेशन एंड कॉम्पिटिशनः ए रिअसैसमेंट ऑफ इंडियाज लीडिंग बिजनेस एंटरप्राइजिज़ अंडर डीराइजिस्म" यह अध्याय 'इकानोमिक हिस्ट्री ऑफ द डवलपिंग रीजन्स',26 (2) द्वारा प्रकाशित हुआ।
- मजूमदार, सुरजीत(2011): "द कॉरपोरेट सेक्टरः परपैटरेटर, विक्टिम ऑफ सेवियर?" यह अध्याय 'इकोनोमिक ग्रोथ एंड डवलपमेंट इन इंडियाः डिपनिंग डाइवरजेंस, अलटरनेटिव इकोनोमिक सर्वे, इंडिया, अलटरनेटिव इकोनोमिक सर्वे ग्रुप, युवा संवाद प्रकाशन, नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित हुआ।
- मजूमदार, सुरजीत(2012): ''बिग बिजनेस एंड इकोनोमिक नेशनलिज्म इन इंडिया", डी कोस्टा, एंथनी (सं.), 'ग्लोबलाइजेशन एंड इकोनोमिक नेशनलिज्म इन एशिया', ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, ऑक्सफोर्ड द्वारा प्रकाशित।
- मजूमदार, सुरजीत(2012): ''इंडस्ट्री एंड सर्विसेज इन ग्रोथ एंड स्ट्रक्चरल चेंज इन इंडिया सिंस इनडिपेंडेंसः सम अनएक्सप्लोर्ड फीचर्स",सेन,सुनंदा एवं अंजन चक्रवर्ती (सं.), 'डवलपमेंट ऑन ट्रायलः ए क्रिटिक ऑफ नीओ–लिबरल स्ट्रेटिजी अंडर ग्लोबलाइजेशन', ओरियंट – ब्लैक स्वान, हैदराबाद द्वारा प्रकाशित।
- मजूमदार, सुरजीत(2012): ''लिबरलाइजेशन, डिमांड एंड इंडियन इंडस्ट्रीलाइजेशन", सुदिप्ता भट्टाचार्य (सं.) 'टू डिकेड्स ऑफ मार्केट रिफार्मस इन इंडियाः सम डिस्सेटिंग व्यूज', एंथम प्रेस, लंदन, न्यूयॉर्क , दिल्ली द्वारा

प्रकाशित।

- मीर,उरफत अंजम एवं पी.सी.जोशी (2012): ''डीलिंग विद डाइलेमाः रोल ऑफ एथिक्स एंड सब्जैक्टिबिटी इन डूइंग फील्डवर्क ऑन वायलेंस इन वन्स ऑन कल्चर", कल्पागम,यू (सं.) 'एथैक्सि, हैल्थ एंड मैडिसनः एन्थ्रोपोलोजिक्ल पर्सपैक्टिव्स , मानक पब्लिकेशन, नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित।
- मिश्र, सलिल एवं आशीष रंजन (2011): ''सामाजिक विज्ञान का अध्यापनः इतिहास, प्रसंग और चुनौतियां",सक्सेना,वंदना(सं.) 'कन्टम्परेरी ट्रैन्ड इन एजूकेशनः अ हैन्डबुक फॉर एजूकेटर्स, पियर्सन, नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित।
- मिश्र,सलिल(2011): ''आधुनिक भारत में साम्प्रदायिकता के उभार", पणिक्कर,के.एन (सं.) 'पर्सपेक्टीव ऑन मॉडर्न इंडियन हिस्ट्री (आधुनिक भारतीय इतिहास के परिप्रेक्ष्य)', पॉपुलर प्रकाशन,मुम्बई द्वारा प्रकाशित।
- नाईट,धीरज एवं पॉल स्टीवर्ट (2012) (सं.) माईनिंग फेसेजः एन ऑरल हिस्ट्री ऑफ वर्क आन द गोल्ड एंड कोल माईन्स इन साउथ अफ्रीका, 1951–2011,ज़काना प्रेस, जोहान्सबर्ग से प्रकाशित।
- नाईट, धीरज (2012): "निगोशिएटिंग द माईन्सः पालिटिक्स ऑफ सेफ्टी इन द झरिया कोलफील्डस 1890–1960",लहिरी–दत्त,कुंतल(सं.), 'कोल्स इन साऊथ एशियाःमाईनिंग, डिस्पलेसमैंट एंड इकोलाजी, ऑस्ट्रेलियन नेशनल यूनिवर्सिटी द्वारा प्रकाशित।
- प्रधान, गोपालजी (2011): चंद्रशेखर द्वारा लिखित 'लोकप्रिय संस्कृति का द्वंदात्मक समाजशास्त्र'(अंग्रेजी से अनुवाद), सांस्कृतिक संकुल, इलाहाबाद द्वारा सम्पादित व प्रकाशित।
- सांकृत, सत्यकेतु(2011): ''राग दरबारीः शैक्षिक परिसर का सुनामी" जनमेजय.प्रेम (सं.), 'श्री लाल शुक्ल विचारः विश्लेषण एवम् जीवन', नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली से प्रकाशित।
- सेन, रूक्मिणी(2012): "रीक्रिएटिंग द होमः मल्टिपल लीगल नेरेटिव्स ऑन पैटर्नलिज्म एंड मार्जिनलिटीज़" रमन,बसंती (सं.) 'वायलेंस एंड होम', इंडियन इंस्टिट्यूट ऑफ एडवांस्ड स्टडी, शिमला एवं ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, नई दिल्ली से प्रकाशित।
- सेन, रुक्मिणी (2012): "डेमोक्रेसी एंड जेंडरः कान्ट्राडिक्शन बिटवीन द लिबरल एंड द सबमिसिव इमेज ऑफ वूमन" बासु, प्रथा प्रतिम (सं.), 'डेमोक्रेसी एंड डेमोक्रेटाईज़ेशन इन द 21 सेन्चुरी, हर आनंद पब्लिकेशंस, नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित।
- सेन, रूक्मिणी(2012): "न्यूट्रल लॉज ऑर 'मोरल' कोड्सः कंट्रोलिंग एंड रिक्रिएटिंग सैक्सुएलिटीज / इनटीमेसिस" पायलेट, सारा एवं लोरा प्रभु (सं.), 'द फिअर दैट स्टाक्सः जेंडर बेस्ड वायलेंस इन पब्लिक स्पेसेज, जुबान पब्लिकेशंस, नई दिल्ली से प्रकाशित।
- स्नेही, योगेश(2011): ''डाइवर्सिटी एज़ काउंटर– हेजीमनीः रीट एंड जेन्डर रिलेशन इन हिमाचल प्रदेश" सिंह,चेतन (सं.),'रिकगनाईज़िंग डाइवर्सिटीः सोसायटी एंड कल्चर इन हिमालय, आक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, नई दिल्ली से प्रकाशित।
- स्नेही, योगेश(2011): ''महिला गर्भपात" कमिंस्की, आरनॉल्ड पी. एवं रोजर डी.लोंग(सं.) 'इंडिया टुडेः एन एन्साइक्लोपीडिया ऑफ लाईफ इन द रिपब्लिक, वोल्यूम.1,सांता बारबरा कैलीफोर्निया से प्रकाशित।
- स्नेही, योगेश(2011): ''नेशनल अलायन्स ऑफ पीपल्स मूवमेंट" कमिंस्की,आरनॉल्ड पी. एवं रोजर डी. लोंग(सं.) 'इंडिया टुडेः एन एन्साइक्लोपीडिया ऑफ लाईफ इन द रिपब्लिक, वोल्यूम.2 ,सांटा बारबरा, कैलीफोर्निया से प्रकाशित ।
- स्नेही, योगेश(2011): "राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी अधिनियम" कमिंस्की,आरनॉल्ड पी. एवं रोजर डी. लोंग(सं.) 'इंडिया टुडेः एन एन्साइक्लोपीडिया ऑफ लाईफ इन द रिपब्लिक, वोल्यूम.2 ,सांटा बारबरा, कैलीफोर्निया से प्रकाशित।
- स्नेही, योगेश(2011): "सूचना का अधिकार" कमिंस्की, आरनॉल्ड पी. एवं रोजर डी.लोंग(सं.) 'इंडिया टुडेः एन

एन्साइक्लोपीडिया ऑफ लाईफ इन द रिपब्लिक, वोल्यूम.2 ,सांटा बारबरा, कैलीफोर्निया से प्रकाशित।

- स्नेही, योगेश(2011): "विशेष आर्थिक क्षेत्र" कमिंस्की,आरनॉल्ड पी. एवं रोजर डी.लोंग(सं.) 'इंडिया टुडेः एन एन्साइक्लोपीडिया ऑफ लाईफ इन द रिपब्लिक, वोल्यूम.2 ,सांटा बारबरा, कैलीफोर्निया से प्रकाशित।

लेख

- बैनर्जी, तपोसिक(2012): ''रीविजिटिंग द मीदनापुर मॉडल आफ्टर टेन इयर्स ऑफ टोटल सैनिटेशन कैम्पैन इन इंडिया", 'जर्नल ऑफ वाटर, सैनिटेशन एंड हाइजीन फॉर डवलपमेंट' में प्रकाशित।
- भट्टाचार्य,ज्योतिर्मय, एम.जे.जोसेफ, के.सिंह, आर. दास एवं आर. तिवारी(2011): 'इंडियन इकोनामीः सेलैक्ट मैथोडोलोजिकल अडवांसेस, आई.सी.आर.आई.ई.आर वर्किंग पेपर नं. 25।
- बेहेरा, मीनाकेतन (2011): ''एक्सटैन्ट, कॉज़ेज़ एंड कंसीक्वेन्सेज ऑफ रूरल लेबर माइग्रेशन इन इंडियाः द रोड अहैड" पी. सुंदर राज (सं.), 'नॉन –फार्म सेक्टर एंड रूरल डेवलपमेंट, नोवल कोरपोरेशन पब्लिकेशन, , नई दिल्ली से प्रकाशित।
- बेहेरा मीनाकेतन(2011): ''चेंजिंग इनडैजिडनैस एंड सेविंग पैटर्न ऑफ डोंगरिया कांधाः ए प्रीमिटिव ट्राइब ऑफ रायगढ डिस्ट्रिक्ट ऑफ ओडिशा", द इंडियन जर्नल ऑफ इकोनोमिक्स, नं. 363, भाग–4, खंड –XIC
- बेहेरा, मीनाकेतन(2011): ''परफार्मेन्स ऑफ एस.एच.जी इन प्रोमोटिंग वुमन एमपावरमेंटः ए केस–स्टडी फ्रॉम केंदुझर एंड मयूरभंज डिस्ट्रिक्ट ऑफ ओडिशा", जर्नल ऑफ सोशल एंड इकोनोमिक डेवलपमेंट, खंड–IV, नं–2।
- भगोवालिया, प्रिया एवं पी. गुप्ता (2011): ''न्यूट्रिशनल स्टेटस एंड एक्सेस टू क्लीन फ्यूल्सः एविडेंस फ्रॉम साउथ एशिया'', 2011चयनित पेपर, एग्रीकल्चर एंड एप्लाइड इकोनॉमिक्स एसोसिएशन,यू.एस.।
- भगोवालिया,प्रिया, एस.ई.चेन एवं जी.ई.शिवली (2011): ''इनपुट च्वायसेज इन एग्रीकल्चरः इज देअर ए जेंडर बायस?", वर्ल्ड डवलपमेंट, खंड –39, संख्या 4।
- भगोवालिया,प्रिया,डी.हैडे एवं एस. कड़ियाल (2012): ''एग्रीकल्चर, इनकम एंड न्यूट्रीशन लिंकेजेस इन इंडियाः इनसाइट्स फ्रॉम ए नेशनली रीप्रेजेंटेटीव सर्वे", एल.डी.सी ग्रान्ट कोम्पीटिशन के तहत चयनित पेपर, एग्रीकल्चरल एंड एप्लायड इकोनोमिक्स एसोसिएशन, यू.एस.ए.।
- भगोवालिया, प्रिया, एस.ए.ब्लाक एवं डब्ल्यू.ए.मास्टर्स (2011): ''डज चाइल्ड अंडरन्यूट्रीशन परसिस्ट डिस्पाइट पावर्टी रिडक्शन इन डेवलपिंग कन्ट्रीज?" क्वांटाइल रिग्रैशन रिजल्ट, जर्नल ऑफ डवलपमेंट स्टडीज में प्रकाशित।
- गुप्ता, चिरश्री दास(2011): "बिहार में विकास और लोक वित्त", डिस्कशन पेपर संख्या– 331, इंस्टिट्यूट ऑफ डेवलपिंग इकोनामी, जे.ई.टी.आर.ओ जापान, http://ir.ide.go.jp/dspace/bitstream/2344/1128/1/ARRIDE_Discussion_no-331_das.pdf
- गुप्ता, चिरश्री दास ,के.पी.एन हरिदास (2011):" बिहार में विद्यालय –शिक्षा की गुणवत्ता सुधारने में आई.सी.टी की भूमिका", वर्किंग पेपर, इंटरनेशनल ग्रोथ सेंटर, (आई.जी.सी), पटना।
- कपाड़िया, अपर्णा(2011): "कच्छः मोर सिंध दैन गुजरात?", फरहान इब्राहिम द्वारा लिखित पुस्तक 'सैट्लर्स, सेंट्स एंड सोवरेन्सः एन एथनोग्राफी ऑफ स्टेट फोरमेशन इन वैस्टर्न इंडिया' (नई दिल्ली, 2009)की समीक्षा। यह समीक्षा 'द इकोनामिक एंड पोलिटकल वीकली, खंड –46, संख्या –13 में प्रकाशित हुई।
- लाल, जयती, अबिगेल स्टीवार्ट एवं क्रिस्टिन मेक्ग्यूरे(2011): ''एक्सपैंडिंग द आर्काइव्स ऑफ ग्लोबल

फेमीनिज़्मसः नैरेटिव्स ऑफ फेमिनिज्म एंड एक्टीविज्म", साइन्स, 36, संख्या–4।

- लाल, जयती (2011): ''(अन)बिकमिंग वुमनः इंडियन फैक्ट्री वुमन्सः काउंटरनैरेटिव ऑफ जेंडर", सोशोलोजिकल रिव्यू, विशेष अंक 'ऑन द पोलिटिक्स ऑफ इमेजिनेशन', 59:3 में प्रकाशित।
- मेनन, शैलजा (2011): बनर्जी,रीता द्वारा लिखित पुस्तक 'सेक्स एंड पावरः डीफाइनिंग हिस्ट्री, शेपिंग सोसाइटीज' की समीक्षा । यह समीक्षा 'इन इंडियन जर्नल ऑफ जेंडर स्टडीज',खंड 18 (2) में प्रकाशित हुई।
- मुखोपाध्याय, अमितेश(2011): "इन ऐला–स्ट्रक सुंदरबन", इकोनोमिक एंड पोलिटकिल वीकली, 46 (40).
- प्रधान, गोपालजी(2011): ''भारतीय साहित्य और प्रगतिशील आंदोलन की विरासत", समकालीन जनमत,इलाहाबाद से प्रकाशित।
- प्रधान, गोपाल जी(2011): ''नागार्जुन की आलोचना'', जनपथ, दिल्ली से प्रकाशित।
- सांकृत, सत्यकेतु(2012): ''आज का युवा कवि", समसामयिक सृजन पत्रिका, नई दिल्ली से प्रकाशित।
- सांकृत, सत्यकेतु(2011): ''हमने स्मृतियों के दीप जलाए", पुस्तक–वार्ता, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय विश्वविद्यालय , वर्धा द्वारा प्रकाशित ।
- सांकृत, सत्यकेतु(2012): ''दिनकर को देखने का नया नजरिया", समीक्षा पत्रिका, सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित।
- सांकृत, सत्यकेतु(2012): ''हरीशंकर परसाई का सच",व्यंग्य यात्रा, नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित।
- सेन, रुक्मिणी(2012): मार्शेल,डेविड द्वारा सम्पादित पुस्तक 'अंडरस्टैडिंग चिल्ड्रन एज़ ए कंस्युमर्स, कन्टेमपरैरी एजुकेशन डॉयलाग', 9, 1 105–130 की समीक्षा।

7. आईटी सेवाएं

प्रस्तुत किए गए पेपर

- श्रीनिवास,के (2011): वावसान ओपन यूनिवर्सिटी पेनंग, मलेशिया द्वारा आयोजित 25वीं ए.ए.ओ.यू ऐनुअल इंटरनेशनल में ''सीमेन्टिक सर्च इंजन आर्किटेक्चर फॉर इनफोरमेशन रिट्रीवल फॉर ओ.डी.एल'' पर पेपर प्रस्तुत किया।
- श्रीनिवास,के (2012): महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ,वाराणसी द्वारा आयोजित 'फ्रन्टियर्स ऑफ रिसर्च एंड डेवलपमेंट इन कम्प्यूटेशनल साइंसिज' राष्ट्रीय सम्मेलन में ''सिमेंटिक सर्च इनफोरमेशन रिट्रिबल" विषय पर पेपर प्रस्तुत किया।

8 . पुस्तकालय

प्रस्तुत किये गए पेपर

- कार, देबल सी.(2012): 'मैनेजिंग इलेक्ट्रानिक थीसिज एंड डिज़रटेशन' राष्ट्रीय संगोष्ठी में पैनलिस्ट के रूप में, "अम्बेडकर विश्वविद्यालय दिल्लीः ई.टी.डी नीति" पर पेपर प्रस्तुत किया।

पुस्तकें

- कार, देबल सी.(2012): (पुस्तक संपादन) "एक्सटेंडिंग बेनीफिट्स ऑफ मॉडर्न टेक्नोलॉजी टू पब्लिक, एकेडमिक एंड स्पेशल लायब्रेरिज" प्रोसीडिंग्स आफ द इंटरनेशनल कान्फ्रेंस आन डिजिटल लायब्रेरी मैनेजमेंट (आई.सी.डी.एल.एम 2011), कोलकाता, पी. 500. 2011, टी.ई.आर.आई व आर.आर.आर.एल.एफ, नई दिल्ली ।
- जैन,पी.के,एस.गांगुली, टी.अशरफ, देबल सी.कार.(2012): "लीडरशिप, एथिक्स, अकाउंटेबिलिटी एंड प्रोफेशनलिज्म इन लायब्रेरी सर्विस", विषय पर 'प्रोसिडिंग्स ऑफ द लायब्रेरी एंड इनफॉरमेशन प्रोफेशनल्स सम्मिट (एल.आई.पी.एस)' 2012, नई दिल्ली बुकवेल पब्लिकेशन, नई दिल्ली द्वारा पुस्तक प्रकाशित।

ए.यू.डी में आयोजित गोष्ठियां / सम्मेलन / कार्यशालाएं / वार्ताएं

1. व्यवसाय, लोक नीति व सामाजिक उद्यमिता कार्यशालाएं :

- ममकूट्टम, कूरियाकोस (2011) ने ब्रसेल्स में यूरोपीय आयोग द्वारा आयोजित ''सोशली रिस्पोंसिबल रिस्ट्रक्चरिंग वर्ल्डवाइड" में भाग लिया।
- वैलेन्टिना, के.(2012) ने 'दलित स्त्रीवाद' पर लखनऊ शाखा के कार्य–सहायता फील्ड स्टाफ के लिए एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया।

2. शैक्षिक अध्ययन शिक्षालय

- बनर्जी, राखी (2012): ''वीडियो कान्फ्रेंसिंग प्रोग्राम इन मैथमैटिक्स एट प्राइमरी स्टेज ऑफ एन.सी.ई.आर.टी" दिल्ली।
- जैन, मनीष(2011): ''नागरिक शास्त्र का अध्यापन और प्रकृति", यूनिवर्सिटी रिसोर्स सेन्टर (यू.आर.सी) के लिए दक्षता निर्माण कार्यक्रम, अजिम प्रेमजी विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित कार्यशाला, बैंगलोर व दिगन्तर, जयपुर।
- जैन, मनीष(2012): ''सामाजिक विज्ञान का शिक्षण शास्त्र और प्रकृति", फाउंडेशन ऑफ एजुकेशन में 7वां सर्टिफिकेट कार्यक्रम, दिगन्तर,जयपुर द्वारा आयोजित कार्यशाला।
- माओ, अखा के, गुंजन शर्मा (2011) : ''फर्स्ट फोक्स ग्रुप डिस्कशन विद गवर्नमेंट स्कूल टीचर्स इन दिल्ली: द चैलेंजेज टीचर्स फेस एंड द कान्टैक्सट ऑफ क्वालिटी ऑफ स्कूलिंग'', आह्वान ट्रस्ट एंड स्कूल ऑफ एजुकेशनल स्टडीज, अम्बेडकर विश्वविद्यालय, दिल्ली।
- माओ, अखा के,गुंजन शर्मा(2011): ''सैकिंड फोक्स ग्रुप डिस्कशन विद गवर्नमेंट स्कूल टीचर्स इन दिल्ली: पैडागोजिक प्रैक्टिसीज एंड विजन्स ऑफ टीचर्स", आह्वान ट्रस्ट एंड स्कूल ऑफ एजुकेशनल स्टडीज, अम्बेडकर विश्वविद्यालय , दिल्ली।
- शर्मा, गुंजन(2011): ''शिक्षकों हेतु शिक्षक–प्रशिक्षण डिज़ाइन के विकास के लिए कार्यशाला, एस.सी.ई.आर.टी. एवं सर्व शिक्षा अभियान, गोवा।
- शर्मा, गुंजन(2011): ''राइट टू एजुकेशन एक्ट, 2009 –डेवलपिंग गाइडलाइन्स ऑन द इम्पलीमेंटेशन ऑफ कंटिन्यूअस एंड काम्प्रिहेंसिव इवैल्यूएशन वर्कशाप", एस.सी.ई.आर.टी., हैदराबाद।

3. मानव पारिस्थितिकी शिक्षालय

"अम्बेडकर और समकालीन भारतीय राजनीति" पर अप्रैल,2011 में एक राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया।

4 . मानव अध्ययन शिक्षालय

- सी. सत्यमाला द्वारा "महिला और स्वास्थ्य की देखभाल" पर व्याख्यान , 30 जुलाई, 2011
- राधिका चोपडा द्वारा मस्क्युलिनीरिंज़ पर विशेष व्याख्यान, 18 अगस्त, 2011
- प्रोफेसर पैट्रीशिया इबुआ द्वारा 'एंड्रोजिनी' पर व्याख्यान, 19 अगस्त, 2011
- विन्सटन वाइल्ड, मनोचिकित्सक द्वारा "रिक्लेमिंग द एरोसः द साइको पैथोलोजाइज़ेशन ऑफ सैक्सुअलिटी", पर व्याख्यान, 8 दिसम्बर, 2011
- मोनिशा अख्तर, बाल विश्लेषक द्वारा 'चाइल्ड साइकोएनालिसीज एंड इट्स डिफरेंसिज फ्रोम एडल्ट वर्क' पर व्याख्यान, 12 दिसम्बर, 2011
- मोनिशा अख्तर, बाल विश्लेषक द्वारा 'ट्रोमा इन चिल्ड्रन' पर व्याख्यान, 13 दिसम्बर, 2011
- स्वप्ना गुप्ता, मनोचिकित्सक द्वारा 'स्वास्थय मनोविज्ञान' पर व्याख्यान, 14 दिसम्बर, 2011
- फिलेडैल्फिया में जैफरसन मैडिकल कॉलेज में मनोविश्लेषक, कवि, लेखक व प्रोफेसर सलमान अख्तर द्वारा "क्लिनिकल सुपरविजन एंड इट्स न्यू एप्रोचेज़" विषय पर 30 जनवरी, 2012 को कार्यशाला आयोजित की गई।
- प्रोफेसर डेविड टकैट, न्यू लाइब्रेरी ऑफ साइकोएनालिसीज एंड इंटरनेशनल जर्नल ऑफ साइकोएनालिसीज के संपादक द्वारा 13 फरवरी, 2012 एक दिन की कार्यशाला आयोजित की गयी।
- स्टैफनी तावा लामा–रेवॉल द्वारा सी.एन.आर.एस, सेंटर फोर साऊथ एशियन स्टडीज, पेरिस में प्रस्तुतीकरण।
- ''द इंस्टिट्यूशनलाइजेशन ऑफ जेंडर स्टडीज इन फ्रांसः ए सब्जेक्टिव अप्रैज़ल पर प्रस्तुतीकरण, 7 मार्च, 2012।
- रिचर्ड फ्रिच, मनोविश्लेषक व निदेशक, वाशिंगटन साइकोएनालिटिक इंस्टिट्यूट द्वारा 'वर्किंग विद एडोलसेन्ट्स' विषय पर व्याख्यान, 9 मार्च, 2012
- के. श्रीधर द्वारा ''ट्वाइस रिटर्न'' का पठन, 19 मार्च, 2012
- नील ऑल्टमैन द्वारा 'रिलेशनल परस्पैक्टिव इन साइकोएनालिसीज' विषय पर छः सप्ताह की संगोष्ठी आयोजित की गयी, अगस्त 2011
- एन. नीता द्वारा 'कान्सैप्चुअल एप्रोचिज़ टू वर्क' पर विशेष व्याख्यान, 2,4,9 अप्रैल, 2012

5 . ललित अध्ययन शिक्षालय

- शिक्षालय ने अजय भारद्वाज, स्वतंत्र फिल्म निर्माता की भारत के बंटवारे पर ''रब हुण की करिए'' नामक फिल्म की स्क्रीनिंग का आयोजन किया, 21 अक्टूबर, 2011
- शिक्षालय ने कैलिफोर्निया यूनिवर्सिटी के प्रोफेसर कैथी गैलघर व मार्टिन जे, के साथ 10 जनवरी, 2012 को 'दो दिवसीय अकादमिक इंटरएक्शन' का आयोजन किया। प्रोफेसर कैथी गैलघर के साथ खुले सत्र का आयोजन किया गया और 11 जनवरी,2012 को प्रोफेसर मार्टिन ने 'फोटोग्राफी एंड द इवंट' पर चर्चा की ।
- शिक्षालय ने ए.के. रामानुजन के निबंध "थ्री हंड्रेड रामायण : फाइव एक्साम्पलस एंड थ्री थॉट्स ऑन

ट्रांसलेशन" के विवाद पर पैनल विचार–विमर्श का आयोजन किया। विचार–विमर्श के बाद 18 जनवरी, 2012 को शिखा सेन, स्वतंत्र फिल्म निर्माता द्वारा 'अनेक रामायणस' फिल्म की स्क्रीनिंग की गई।

- 6 फरवरी, 2012 को प्रोफेसर ताप्ती गुहा ठाकुरता, सेंटर फोर स्टडीज इन सोशल साइंसिज,कलकत्ता द्वारा ''द एज ऑफ द थीम पूजाज़ः ए माइक्रो हिस्ट्री ऑफ ए कन्टेम्परेरी कोलकाता फैस्टीवल" विषय पर व्याख्यान प्रस्तुत किया गया।
- शिक्षालय ने ''प्रिजनर नम्बर 100ः एन अकाउंट ऑफ माई नाइट्स एंड डेज इन इंडियन प्रिजन' नामक पुस्तक पर विचार–विमर्श आयोजित किया। विचार–विमर्श की शुरूआत 8 फरवरी, 2012 को पुस्तक के लेखक अंजुम ज़मर्रुद हबीब और पुस्तक के अनुवादक साहब हुसैन ने की।
- हिंदी संकाय ने 14–15 मार्च, 2012 को ''अम्बेडकर और दलित साहित्य" पर दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया।
- 26 मार्च, 2012 को 'हिस्ट्री प्रोड्यूसे्ज पोलिटिक्सः ए नैरेटिव ऑफ नर–मवेशी मूवमेंट इन उत्तर प्रदेश" विषय पर जी.बी. पंत इंस्टिट्यूट ऑफ सोशल साइंसिज, इलाहाबाद, प्रोफ्रेसर बद्री नारायण के व्याख्यान का आयोजन किया गया।

परिशिष्ट–ज

विश्वविद्यालय के शिक्षक

(31 मार्च, 2012 तक)

प्रतिष्ठित विशिष्ट प्रोफेसर	विषय	शिक्षालय
सी.आर . बाबू	पारिस्थितिकी	एस.एच.ई

प्रोफेसर	विषय	शिक्षालय
आलोक भल्ला	अंग्रेजी	एस.यू.एस /एस.एल.एस
कुरियाकोस ममकूट्टम	प्रबंधन	एस.बी.पी.पी.एस.ई
श्याम बी.मेनन	शिक्षा	एस.ई.एस
सलिल मिश्र	इतिहास	एस.एल.एस
चन्दन मुखर्जी	अर्थशास्त्र	एस.डी.एस / एस.एच.ई
अशोक नागपाल	मनोविज्ञान	एस.एच.एस
शिवाजी के. पणिक्कर	दृश्य कला (विजुअल आर्ट)	एस.सी.सी.ई
हनी ओबरॉय वहाली	मनोविज्ञान	एस.एच.एस
गीता वेंकटरमन	गणित	एस.एल.एस

एसोसिएट प्रोफेसर	विषय	शिक्षालय
प्रिया भगोवालिया	अर्थशास्त्र	एस.यू.एस / एस.एल.एस
किरणमयी भुषि	समाजशास्त्र	एस.यू.एस / एस.एल.एस
सुमंगला दामोदरन	अर्थशास्त्र	एस.डी.एस
धीरेन्द्र दत्त डंगवाल	इतिहास	एस.यू.एस / एस.एल.एस
चिरश्री दास गुप्ता	अर्थशास्त्र	एस.यू.एस / एस.एल.एस
अनूप कुमार धर	मनोविज्ञान	एस.एच.एस
रचना जौहरी	मनोविज्ञान	एस.एच.एस
अस्मिता काबरा	अर्थशास्त्र	एस.एच.ई
जयती लाल	समाजशास्त्र	एस.यू.एस / एस.एल.एस
सुब्रत कुमार मंडल	अर्थशास्त्र	एस.डी.एस
सुरजीत मजूमदार	अर्थशास्त्र	एस.यू.एस / एस.एल.एस
अमितेश मुखोपाध्याय	समाजशास्त्र	एस.यू.एस / एस.एल.एस
गोपालजी प्रधान	हिंदी	एस.यू.एस / एस.एल.एस
सत्यकेतु सांकृत	हिंदी	एस.यू.एस / एस.एल.एस
गज़ाला शाहबुद्दीन	पारिस्थितिकी	एस.एच.ई
संजय कुमार शर्मा	इतिहास	एस.यू.एस / एस.एल.एस

डायमंड ओबरॉय वहाली	अंग्रेजी	एस.यू.एस / एस.एल.एस

सहायक प्राध्यापक	विषय	शिक्षालय
कँवल अनिल	प्रबंधन	एस.बी.पी.पी.एस.ई
गुन्जीत अरोड़ा	अंग्रेजी	एस.यू.एस / एस.एल.एस
सुरेश बाबू	पारिस्थितिकी	एस.एच.ई
अरिंदम बनर्जी	अर्थशास्त्र	एस.यू.एस / एस.एल.एस
राखी बनर्जी	शिक्षा	एस.ई.एस
तपोसिक बनर्जी	अर्थशास्त्र	एस.एल.एस
अभिजीत एस. बर्डपुर्कर	शिक्षा	एस.ई.एस
मिनकेतन बेहेरा	अर्थशास्त्र	एस.यू.एस / एस.एल.एस
ज्योतिर्मय भट्टाचार्य	अर्थशास्त्र	एस.एल.एस
धरित्री चक्रवर्ती	इतिहास	एस.एल.एस
रचना चौधरी	मनोविज्ञान	एस.एच.एस
सयनदेब चौधरी	अंग्रेजी	एस.यू.एस / एस.एल.एस
बिधान चन्द्र दास	समाजशास्त्र	एस.यू.एस / एस.एल.एस
ओइनम हेमलता देवी	मनोविज्ञान	एस.एच.एस
थोकचोम बिबिनाज़ देवी	मनोविज्ञान	एस.एच.एस
आइवी धर	राजनीतिक विज्ञान	एस.डी.एस
राधिका गोविन्द	मनोविज्ञान	एस.एच.एस
अंशु गुप्ता	प्रबंधन	एस.बी.पी.पी.एस.ई
मनीष जैन	शिक्षा	एस.ई.एस
लोवितोली जिमो	समाजशास्त्र	एस.एच.एस
गंगमुमेई कामेई	मनोविज्ञान	एस.एच.एस
अपर्णा कपाड़िया	इतिहास	एस.यू.एस / एस.एल.एस
ममता करोल्लिल	मनोविज्ञान	एस.एच.एस
तनुजा कोठियाल	इतिहास	एस.यू.एस / एस.एल.एस
प्रीति मान	नृविज्ञान	एस.डी.एस
अखा कैहरी माओ	शिक्षा	एस.ई.एस
भूमिका मैलिंग	अंग्रेजी	एस.यू.एस / एस.एल.एस
शैलजा मेनन	इतिहास	एस.यू.एस / एस.एल.एस
उर्फत अंजम मीर	समाजशास्त्र	एस.यू.एस / एस.एल.एस
रिक मित्रा	मनोविज्ञान	एस.एच.एस
अरुण कुमार मोन्डिटोका	राजनीति विज्ञान	एस.डी.एस
उषा मुदिगन्ति	अंग्रेजी	एस.यू.एस / एस.एल.एस
तुहीना मुखर्जी	प्रबंधन	एस.बी.पी.पी.एस.ई

शुभ्रा नगालिया	मनोविज्ञान	एस.एच.एस
मानसी थपलियाल नवानी	शिक्षा	एस.ई.एस
रोहित नेगी	भूगोल	एस.एच.ई
धीरज कुमार नाईट	इतिहास	एस.यू.एस / एस.एल.एस
अंशुमिता पाण्डेय	मनोविज्ञान	एस.एच.एस
अनिल परसाद	इतिहास	एस.यू.एस / एस.एल.एस
विनोद आर.	मनोविज्ञान	एस.एच.एस
दीप्ति सचदेव	मनोविज्ञान	एस.एच.एस
नीतू सरीन	मनोविज्ञान	एस.एच.एस
रुक्मिणी सेन	समाजशास्त्र	एस.यू.एस / एस.एल.एस
अनिर्बान सेनगुप्ता	समाजशास्त्र	एस.डी.एस
गुंजन शर्मा	शिक्षा	एस.ई.एस
प्रवीण सिंह	इतिहास	एस.एच.ई
संतोष कुमार सिंह	समाजशास्त्र	एस.यू.एस / एस.एल.एस
योगेश स्नेही	इतिहास	एस.यू.एस / एस.एल.एस
विक्रम सिंह ठाकुर	अंग्रेजी	एस.यू.एस / एस.एल.एस
संजू थॉमस	अंग्रेजी	एस.यू.एस / एस.एल.एस
कांचरिया वेलेंटिना	प्रबंधन	एस.बी.पी.पी.एस.ई

आगंतुक संकाय (विज़िटिंग फैकल्टी)	शिक्षालय
विनीता कौल	सी.ई.सी.ई.डी
डेनिस पी लेइटन	एस.यू.एस / एस.एल.एस
सिमोना	एस.एल.एस
आदर्श शर्मा	सी.ई.सी.ई.डी

अतिथि / अनुबद्ध संकाय	शिक्षालय
मोनिमलिका डे	सी.ई.सी.ई.डी
अभिनव वर्मा	एस.यू.एस

अकादमिक फेलो	शिक्षालय
दिव्या भांबरी	एस.यू.एस
अपराजिता भरगढ़	सी.ई.सी.ई.डी
कोपल चौबे दत्ता	एस.एच.ई
कस्तूरी दत्ता	एस.डी.एस
एम.मुरली.कृष्णा	एस.यू.एस
संतोष.एस	एस.सी.सी.ई

नुपूर सेमुअल	एस.यू.एस
आनंद सौरभ	एस.एल.एस
पारुल तनेजा	सी.ई.सी.ई.डी

अनुसंधान सहायक	**शिक्षालय**
श्यामोलिमा जी. चौधरी	एस.यू.एस
शिफा हक़	एस.एच.एस
पुनीता माथुर	सी.ई.सी.ई.डी
राधिका	एस.एच.एस
आशीष रॉय	एस.एच.एस
राजिंदर सिंह	एस.एच.एस

परिशिष्ट झ

प्रशासनिक कर्मचारी

(31 मार्च, 2012 तक)

अनुसंधान सहायक	
बिंदु नायर	सचिव
राज कुमार	सहायक
अजय सिंह डांगी	कार्यालय परिचारक
रुद्रेश सिंह नेगी	कार्यालय परिचारक

पंजीयक कार्यालय	
पंकज अग्रवाल	उप–पंजीयक
सुचा सिंह	सहायक पंजीयक
बी.बी कौल	वरिष्ठ सलाहकार
पी.मणि	वरिष्ठ सलाहकार
डॉ. मीता सिन्हा	वरिष्ठ सलाहकार
एस.के. नागपाल	सलाहकार
नीलिमा घिलदियाल	सहायक
बी.के गुप्ता	सहायक
महेश कुमार	सहायक
मीनाक्षी सिंह जुगरान	सहायक
सीता राम	संरक्षक (केयरटेकर)
यतिंदर सिंह	संरक्षक (केयरटेकर)
राजेंद्र प्रसाद	सहायक संरक्षक
अशोक कुमार	कार्यालय परिचारक
रंजीत भुइमाली	माली
राज कुमार मौर्य	माली
योगेश कुमार	माली
रिज़वान	माली
दीपक	इलेक्ट्रीशियन
मेवा लाल	इलेक्ट्रीशियन (अंशकालिक)
महिंदर कुमार स्वेन	प्लम्बर (अंशकालिक)

वित्त नियंत्रक कार्यालय	
डॉ. आर.डी.शर्मा	सहायक पंजीयक
बी.के.सोमायाजुलू	सहायक पंजीयक
अख्तर हसन	सलाहकार
के.के .तलवार	सलाहकार
लक्ष्मीकान्त	कनिष्ठ कार्यकारी
संजीव सिंह चौहान	सहायक
मोहित जगोटा	सहायक
नरेश कुमार समारिया	कार्यालय परिचारक

आई.टी. सेवाएँ	
नरेन्द्र कुमार	सहायक पंजीयक
प्रियंका पपरेजा	कनिष्ठ कार्यकारी
सुनीता त्यागी	तकनीकी सहायक
रंजन डकुआ	तकनीकी सहायक
मुकेश सिंह डांगी	तकनीकी सहायक
रमीज़ काज़मी	तकनीकी सहायक
शम्भू शरण सिंह	तकनीकी सहायक
अजय कुमार	कार्यालय परिचारक
नवीन कुमार	कार्यालय परिचारक
आशु मान	कार्यालय परिचारक
रूद्र पाल	कार्यालय परिचारक

पुस्तकालय	
अलका राय	सहायक पुस्तकालयाध्यक्ष
मंजू	वृत्तिक सहायक (प्रोफेशनल असिस्टेंट)
रविंदर रावत	वृत्तिक सहायक (प्रोफेशनल असिस्टेंट)
नेक्सन	कार्यालय परिचारक
संजय सिंह रावत	कार्यालय परिचारक

योजना प्रभाग	
अर्चना शर्मा	सहायक पंजीयक
अनीता रावत	सहायक
शिव चरण	परिचारक

व्यवसाय,लोक नीति एवं सामाजिक उद्यमिता शिक्षालय	
दीपक	सहायक

अधिष्ठाता कार्यालय /अकादमिक सेवाएं	
पी. के. कटारमल	उप–पंजीयक
संथानम आयंगर	सहायक पंजीयक
गीता चोपड़ा	सहायक
युसूफ रज़ा नक़वी	सहायक

अधिष्ठाता कार्यालय –विद्यार्थी सेवाएँ	
डॉ. आभा वरमानी	उप–पंजीयक
राजीव कुमार	सहायक पंजीयक
एम.आर कपूर	सलाहकार
मनमोहन सिंह असवाल	सहायक
अरुणिमा शुक्ला	सहायक
अजय तलवार	सहायक
संदीप कुमार	कार्यालय परिचारक
सुमित सोलंकी	कार्यालय परिचारक

अधिष्ठाता कार्यालय– विकास अध्ययन शिक्षालय	
संगीता	सहायक
शफ़ीक़ अहमद	कार्यालय परिचारक

अधिष्ठाता (डीन) कार्यालय – मानव पारिस्थितिकी अध्ययन शिक्षालय	
सुमन नेगी	सहायक
शफ़ीक़ अहमद	कार्यालय परिचारक

अधिष्ठाता कार्यालय – मानव अध्ययन शिक्षालय	
समीना कामार	सहायक
लोकेश सपरा	सहायक
संदीप कुमार	कार्यालय परिचारक

अधिष्ठाता कार्यालय – ललित अध्ययन शिक्षालय (स्कूल ऑफ लिबरल स्टडीज)	
पूनम खण्डूरी	सहायक
अशोक कुमार –II	कार्यालय परिचारक

अधिष्ठाता कार्यालय – स्नातक अध्ययन शिक्षालय	
आशा देवी.डी	सहायक
संदीप कुमार	कार्यालय परिचारक

प्रारंभिक बाल शिक्षा एवं विकास केंद्र	
अनिल सिंह रावत	सहायक

परिशिष्ट–ञ

31.03.2013 समाप्ति वर्ष के आय और व्यय का बहीखाता :–

व्यय	अनुसूची	राशि (रुपयों में)	आय	राशि (रुपयों में)
स्थायी संपत्तियां	II	40,965,837	अवितरित अनुदान जिसे पिछले वर्ष से आगे जारी किया गया है	39,947,929
प्रशासनिक लागत	IV(ए)	123,765,293	प्राप्त अनुदान	182,123,925
अकादमिक लागत	IV(बी)	5,105,939	फॉर्म की बिक्री /प्रकाशन/निविदा दस्तावेज आदि.	685,570
अवितरित अनुदान जिसे बैलेंस शीट में आगे जारी किया गया		72,570,177	ए.यू.डी की ऊपरी प्राप्तियां	727,789
			पाठ्यक्रम शुल्क	17,262,315
			छात्रावास शुल्क	743,910
			प्रवेश शुल्क	76,035
			विविध शुल्क	97,229
			बैंक ब्याज	6,641
			मियादी जमा पर ब्याज	734,853
			बचत खाते पर ब्याज	
कुल		**242,406,246**	**कुल**	**242,406,246**

Ambedkar University Delhi

AUD Dwarka Campus
Integrated Institute of Technology Campus
Sector 9, Dwarka, New Delhi-110 077
Telefax: +91-11-25074875/76/77/78/79

AUD Kashmere Gate Campus
Lothian Road, Kashmere Gate, Delhi-110 006
Telephone: +91-11-23863740/43
Fax: +91-23863742

www.aud.ac.in